Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

891.26
K11 A

कौन किसी का ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारे अन्य प्रकाशन

विजय किसकी ?

आंचल और आँसू

राजकुमारी की प्रेम कहानी

प्रेम पुजारिन

क्या हिन्दू जाति जीवित रहेगी ?

शाही लकड़हारा

शाही डाकू

शाही भिखारी

शाही चोर

स्त्रियों का राज्य

फूल और कलियां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

A, 57

सहगल प्रकाशन सं० १

कौन किसी का ?

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

प्रकाशक
नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्ज़
चौक फतहपुरी, देहली ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशकः—
बलराज सहगल
प्रो० नारायणदत्त सहगल एण्ड संज़
चौक फतहपुरी, देहली

acc. no: 17178
Rs 3-8-0
129
Sri Pratap Singh Library Srinagar.

स्वतन्त्र भारत में——प्रथम संस्करण
मूल्य——————— दो रुपया चार आना

मुद्रकः—
रतन प्रेस
कूचा घासीराम, देहली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ अपनी बात

पाकिस्तान से हिन्दुस्तान अर्थात् लाहौर से दिल्ली आए हमें दो वर्ष से अधिक समय बीत चुका। इस काल में हमें अपना समस्त कार्य स्थगित करके मौन रहना पड़ा। हमें इसका बहुत दुःख है।

अब जब हम नये जीवन की कटुता में से निकल चुके हैं, रक्त रंजित लाशों से परिपूर्ण पगडण्डी से इस पार पहुँच चुके हैं, कार्य क्षेत्र में पदार्पण करते हुए असीम प्रसन्ता अनुभव कर रहे हैं।

आप से यह बात छिपी नहीं कि हम लगभग चौथाई शताब्दी से आपकी सेवा कर रहे हैं और इस दौरान में लगभग एक सहस्र राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यक, ऐतिहासिक, मनोरंजक अर्थात् प्रत्येक विषय पर उर्दू और हिन्दी की पुस्तकें प्रस्तुत की हैं। आपने हमारे प्रत्येक नये पग पर नवोत्साह से प्रोत्साहन दिया। यह बात स्पष्ट है कि हमारी सफलता का कारण केवल हमारा परिश्रम और ईमानदारी ही न था। इस में आपके हार्दिक सहयोग तथा प्रोत्साहन का भी प्रत्यक्ष हाथ था।

हम लोगों को वह सुविधाएं न मिल सकीं जो हमारे कुछ हम पेशा मित्रों को प्राप्त हुई हैं। यह मित्र भारत व पाकिस्तान दोनों देशों में निर्वाध कार्य कर रहे हैं। यहां न बिकने वाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माल वहां चला जाता है और वहां न लगने वाला माल यहां की मण्डी में फेंका जाता है। इस प्रकार दोनों देशों की भक्ति का पूर्ण लाभ उठाया जाता है। परन्तु हम अभी अपने विशालदेश की भूमि पर कठिनाई से पग ही धरने में सफल हुए हैं। तनकर खड़े होना चाहते हैं तो लड़खड़ा जाते हैं। खैर हम लोग अपने पांव पर स्वयं खड़ा होना जानते हैं। अतः होंगे और अवश्य होंगे तथा शान के साथ !

१३ अगस्त १६४७ को हमारा मकान और सम्बद्ध गोदाम जलाकर राख कर दिया गया। इससे हमें १४ अगस्त १६४७ को लाहौर छोड़ना पड़ा। लोहारी गेट की दुकान और हस्पताल रोड़ के दो गोदाम सुरक्षित रहे परन्तु हमारा उनपर कोई अधिकार न था। दुकान तो दिल्ली के एक प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता शाहिद अहमद मालिक साकी बुक डिपो देहली को पौने छः सौ रुपये की न्यून राशि के बदले एलाट करदी गई। आश्चर्य की बात तो यह है कि साकी बुक डिपो यहां भी काम कर रहा है। गोदामों का क्या हुआ, यह आज तक ज्ञात नहीं हो सका।

यद्यपि हम चाहते तो ३ जून १६४७ और ११ अगस्त १६४७ के बीच के काल में जब कि लाहोर लगभग शाँत था, एक कौड़ी की हानि उठाये बिना भारत आ जाते। परन्तु इसका क्या किया जाए कि हम अपनी जन्मभूमि को न छोड़ना चाहते थे। अनुमान था कि पाकिस्तान स्थापन के पश्चात् राजनीतिक टकराव का अंत हो जाएगा और पुनः सर्वत्र शान्ति हो जाएगी। परन्तु ऐसा न हुआ और हमें वहां से निकलने पर बाधित होना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यद्यपि हम लोग स्वभावतः बीती बातों को भूल जाने की क्षमता रखते हैं परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम उन मित्रों की कृपाएं भी भूल जावें जिन्होंने इस कठिन समय पर प्राणों पर खेलकर भी हमारी हर सम्भव सहायता की। हम उन मुसलमान मित्रों के जिन्होंने हमारी भारत या पाकिस्तान में किसी प्रकार की भी सहायता की अत्यन्त अभारी हैं। उनका सम्मान सदा हमारे हृदय में अंकित रहेगा।

यहाँ आकर हमें अपने कार्य को पुनः प्रारम्भ करने में जो कठिनाइयां झेलनी पड़ी हैं और भविष्य में जिनके पेश आने की सम्भावना है, उनको ईश्वर ही भली प्रकार जानता है। वर्तमान काल में कार्य को सफलता पूर्वक चलाने के लिए पर्याप्त धन-राशि की आवश्यकता अनुभव होती है। इसके बिना कोई धन्धा हो ही नहीं सकता। महंगाई की अवस्था किसी से छुपी नहीं। काग़ज़ महंगा, मुद्रण निम्न स्तर का होने पर भी महंगा, जिल्द बांधने के दाम भी ६ गुने हो गए हैं।

वाध्य होकर, सरकारी घोषणाओं तथा नेताओं के व्यक्तव्यों से प्रभावित, जिन्होंने हमें विश्वास दिलाया कि पात्र व्योपारी संस्थाओं को उचित धनराशि ऋण के रूप में दी जावेगी, हमने पुनर्वास विभाग को ऋण की स्वीकृति के लिए एक प्रार्थना पत्र भेजा।

लगभग एक वर्ष के सतत प्रयत्न के पश्चात जो फल मिला वह उत्साह भंग करने वाला था, हमारी प्रार्थना अस्वीकार करदी गई। क्यों ? इसका उत्तर देना विभाग का नियम नहीं। हम यह समझने में असमर्थ हैं कि कारण बताने में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनको हानि क्या है ? सम्भव है किसी भ्रमपूर्ण आधार पर ही हमारी प्रार्थना अस्वीकार की गई हो और जो भ्रम कि सुगमता से दूर हो सकता हो।

सरकार ने ऋण दिए हैं और कई अवस्था में बड़ी विशाल हृदयता का परिचय दिया है। परन्तु पात्र अपात्र का भेद करने के लिए कौनसा यन्त्र प्रयुक्त हुआ है, इसका कुछ ज्ञान नहीं। क्योंकि जहाँ बहुत से पात्र लोगों को निराश होना पड़ा है, वहां अपात्र लोगों को उनके स्तर से कहीं अधिक ऋण दिया गया है। ऐसा क्यों होता है ? क्योंकर सम्भव है ? इसका रहस्य जानने में हम आज तक असमर्थ हैं।

पुनर्वास स्थापन विभाग की ओर से कोरा जवाब मिलने पर अब अपने तौर पर हमने कुछ कार्य प्रारंभ किया है और कुछ एक पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिनमें से हिन्दी की यह पहली पुस्तक है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यदि प्रभु-कृपा हुई और आपकी ओर से यथापूर्व प्रोत्साहन मिला तो हम शीघ्र ही सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करते हुए उसी स्थान पर पहुंच जाएंगे जहाँ से अस्थाई तौर पर हमें पीछे हटना पड़ा है।

प्रकाशक—

जुलाई १९५०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १ :

जलवायु की उष्णता और उस पर धन बाहुल्य, न कमाने की आवश्यकता, न खाने की चिन्ता। ऐसी अवस्था में बड़े बड़ों के हाथ पांव फूल जाते हैं, और वे आगा पीछा देखे बिना अन्धा धुन्ध भोग विलास में लग जाते हैं। परन्तु भूपति बाबू को प्रकृति ने परिश्रम-प्रिय बना कर इस संसार में भेजा था अतः जलवायु की उष्णता का अधिक प्रभाव न पड़ सका। धन पर्याप्त था, काम-काज की आवश्यकता न थी, तो भी मन परिश्रम की ओर प्रवृत्त था। अतः कोई न कोई काम अवश्य चाहिए था।

भूपति बाबू को बाल्यावस्था से ही पठन-पाठन में रुचि थी। अंग्रेज़ी साहित्य से कुछ स्वभाविक सा लगाव था। इसलिए घर बैठे २ कुछ न कुछ लिखते रहा करते थे। पत्र-पत्रिकाओं में अपने लेख छपवाने का, समझना चाहिए कि उन में साहस ही न था या यह बात थी कि वह अपने आप को इस योग्य ही न समझते थे। कुछ हो यह बात अवश्य थो कि उनके लेख प्रकाशित न होते थे। इसके अतिरिक्त उनको नेता बनने और भाषण करने का भी बड़ा शौक था। अवसर हो न हो, भूपति बाबू का भीड़ को चीर कर मंच पर पहुंच जाना और वहाँ पर शब्द-बाणों की वर्षा करना अत्यन्त आश्वयक था। इसके अतिरिक्त कभी २ अंग्रेज़ी समाचार पत्रों में पत्रादि भी प्रकाशित करवा दिया करते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जनता में भी अन्धानुकरण की विचित्र भावना होती है। जिसके पास चार पैसे हों उसका देवता बन जाना कठिन नहीं। भूपति भी परम्परा से धनाढ्य चले आते थे अतः लोग उनकी खुशामद करना अपना सम्मान मानते थे। परन्तु भूपति समझते थे कि यह लोग वास्तव में उनकी साहित्यक योग्यता एवं वाक्-प्रवीणता की प्रशंसा कर रहे हैं और इससे वे प्रसन्न हो जाते।

भूपति बाबू के एक साले महाराज थे। नाम उमापति और काम वकालत। उन के स्वभाव में प्रकृति ने कुछ आवश्यकता से अधिक रंगीला पन भर दिया था। इस प्रकार का रसिक व्यक्ति स्वभावतः ही काम चोर होता है। वास्तविकता भी यह है कि वह रंगीला पन ही क्या जो परिश्रम स्वीकर कर सके। अतः वे अपने कार्य से घृणा करते थे। वे अपने चारों ओर देख रहे थे और किसी प्रकार इस धन्धे में से निकलने के बहाने सोच रहे थे। उन की इच्छा थी कि पर्याप्त आय की भी व्यवस्था हो जाय और काम करने से भी छुटकारा हो जाए।

उन को इस के लिए अधिक खोज की आवश्यकता न पड़ी। थोड़े से विचार ने उन को सुझा दिया कि स्वर्ण-पखेरू तो उन की बगल में ही है। तुरंत छड़ी हाथ में लिए लम्बे २ डग भरते हुए भूपति बाबू के पास आ गए और छूटते ही बोले, "मैंने कहा, भूपति बाबू! आप तो कमाल करते हैं। यह योग्यता और दूर दर्शिता? आ, हा, हा, भई आप का वह पत्र अखबार में पढ़ा, आनन्द आ गया। मैं कहता हूं कि तुम्हारे पास भगवान् का दिया सब कुछ है, फिर तुम क्यों चुप बैठे हो? अंग्रेजी का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एकाध समाचार पत्र निकाल डालो। आम के आम, गुठलियों के दाम। देश की सेवा भी हो जाएगी और लाभ अलग"

उमापति बाबू की बात ने जलती पर तेल छिड़का। भूपति बाबू बेचैनी से कुर्सी पर पहलू बदलने लगे। कुछ देर ठहर कर जाँघें खुजला कर बोले, "बात तो ठीक कही। यह पत्र वत्र छपवाने से कुछ लाभ नहीं होता। अच्छा, तो पत्र निकालने पर खर्च कितना आए गा ?"

उमापति बाबू से यदि गंगाजली उठवाई जाती और उनसे शपथ-पूर्वक पूछा जाता कि उनको कितने पत्रों का अनुभव है तो वे झेंपने के अतिरिक्त कुछ न कर पाते। परन्तु यहाँ तो बात ही दूसरी थी। उन्होंने तत्क्षण रद्दी काग़ज़ उठाया और अनुमान लगाकर पास भी करवा लिया। भूपति बाबू मुस्कराये और पत्र निकालने की बात पक्की हो गई।

यौवन के प्रत्येक कार्य में उत्साह होता है और इसके साथ यदि पागलपन की सीमा को पहुंचा हुआ शौक भी मिल जाए तो जो न हो वही अच्छा। भूपति बाबू पर लिखने का भूत तो पहले ही से सवार था, अब एक समाचार पत्र का सम्पादन कार्य क्या सम्भाला, अपना सब कुछ भूलकर पत्र ही के हो रहे। घर गृहस्थी, नवयौवना पत्नी, और उसकी महत्त्वकाँक्षाएं, सब इसी बाढ़ में बहती चली गईं। भूपति बाबू आँखें बंद किए अपनी डगर पर चलते रहे। उधर देश की समस्याओं सम्बन्धी अनेक स्वनिर्मित उलझनें और इधर 'सम्पादक की अकेली जान, और उधर यौवन की उठती हुई आँधियों का उन्माद और एक अबला स्त्री !—सम्पादक अपनी कुर्सी पर बैठकर पूर्व और पश्चिम के बड़े २ देशों और राष्ट्रों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के शासकों को अमूल्य परामर्श देता रहा और उसकी पत्नी अपने अकेलेपन में दिलचस्पी पैदा करने के ढंग सोचती रही।

चारुलता अभी पूर्ण यौवना भी न हो पाई थी कि देश के रीति रिवाज ने उसे भूपति बाबू के पल्लू से बाँध दिया। विवाह के पश्चात आरम्भ के कुछ वर्ष जो चाव-चोंचलों के के लिए होते हैं, बाल्यकाल के भोलेपन में व्यतीत हो गए। चारुलता को पता भी न लग सका कि विवाह किस चिड़िया को कहते हैं और पतिदेव क्या होते हैं। बाल्यकाल अन्ततः समाप्त होना था। जीवन के आकाश पर यौवन की लालिमा को आना था। प्रकृति मानवीय विचारों और भावनाओं के आधीन नहीं। उसे तो अपना कार्य अपने समय पर करना था। अतएव यौवन ने चारुलता की धमनियों को छेड़ना आरम्भ किया। वह चौंककर जाग उठी। उसने अपने चारों ओर दृष्टिपात किया। उसके आस-पास धन-धान्य था। एक बड़ा घर था, जो उसके अधिकार में था। यौवन की तरंगों पर आए हुए इस उद्यान और उस भभकती हुई बहार का माली भी था। सभी कुछ था परन्तु फिर भी कुछ न था। सोने चाँदी से मढ़ा हुआ जीवन का ढोल अपनी पोल को छुपाने का असफल प्रयत्न कर रहा था। यौवन के प्रवेश के साथ ही इसका भेद खुल गया।—भला जब पति अपनी पत्नी से अलग भावुकता के संसार में जी रहा हो, तो आनन्द की मुस्कान कहाँ? दाम्पत्य सुख के स्वार्गिक पुष्प खिलें तो कैसे?

यही कारण था कि चारुलता जब भी अवसर पाती भूपति बाबू को तीखे और छुपे २ कटाक्षों और आक्षेपों से कुरेदती रहती। परन्तु भूपति बाबू के पास इन कटाक्षों और आक्षेपों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में छिपी यौवन की बेचैनी को समझने का अवसर ही न था। वह यही समझ पाए कि उनकी पत्नी अकेली है और इस अकेलेपन से घबरा गई है। इसलिए इसके पास कोई ऐसी सहेली होनी चाहिए जो इसके दुख-सुख में शामिल हो सके। अतः उन्होंने उमापति से कहकर उसकी पत्नी को अपने घर में बुला लिया। अन्धा क्या मांगे दो नयन। उमापति तो पहले ही चाहते थे कि जैसे भी हो घरवाली का खर्च सिर से टले। वे तुरन्त तैय्यार हो गए। मंदाकनी चारुलता के अकेलेपन में उसकी समायु साथिन बनकर आई।

परन्तु इस से क्या होता था। रोग की जाँच ही गलत हुई थी, उपचार ठीक कैसे बैठता? भूपति बाबू गलत समझते थे। चारुलता अकेली न थी। उसको पठन-पाठन में रुचि पहले ही से थी परन्तु माता-पिता की रुढ़िवादिता और बालपन में हुआ विवाह बाधा बनकर आए और वह शिक्षाधन प्राप्त न कर सकी। तो भी जिस वस्तु को पाने की तड़प हो उसकी तड़प उसकी प्राप्ति का मार्ग स्वयं ही निकाल देती है। चारुलता ने भी अपनी तृष्णा तृप्ति का उपाय सोच लिया था। भूपति बाबू की फूफी का लड़का अमल एक महाविद्यालय में तृतीय वर्ष का विद्यार्थी था। चारुलता के लिए वह ज्ञान का देवता था। और सबसे बड़ी बात यह कि वह उसका अपना देवर था। चारुलता ने उसे गाँठा और उससे पढ़ने लगी।

अमल ने जब भावज को अपने पर निर्भर देखा तो नखरे करने लगा। आज पुस्तकें खरीदने के लिए पैसे चाहिं,ए अमुक होटल में चाय पार्टी थी, खाली जेब वहां जाना बड़ी लज्जा की बात है और फिर अमुक मित्र ने उसे कई बार दावत दी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, यदि उस ने उसे बुलाकर कुछ सेवा न की तो बड़ी बदनामी होगी। यह सब व्यय केवल दो अक्षर पढ़ने के लिये उठाना पड़ता। चारुलता को इच्छा अनिच्छा पूर्वक यह सब कुछ करना पड़ता। इस के साथ साथ पति की लापरवाही के विपरीत देवर का निकट आना प्रेम की भूखी चारुलता को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। कई बार अमल की कटुतम बातें शहद में भीग भीग जाती थीं। अपितु यह कहना अधिक उचित होगा कि उसे उस में एक आनन्द मिलने लगा। हर बात में पहले इन्कार करके और फिर उसे पूरा करके अमल को विस्मित कर देने में वह आनन्द लेने लगी थी।

एक दिन अमल ने चारुलता से कहा, "देखो न भाभी! हमारे कालेज में एक लड़का है। वह प्रति दिन घर की बनी हुई तिल्ले वाली जूती पहन कर आता है। जूती निस्संदेह बहुत ही अच्छी और सुन्दर है परन्तु इस पर भला ऐंठने और अकड़ने की क्या बात है? वह समझता है कि ऐसी तिल्ले वाली जूती कोई और पहन ही नहीं सकता!"

"फिर?" चारुलता का यह प्रश्न अस्वभाविक न था।

"तुम हमें वैसी ही जूती बना दो! हम उसकी नाक काट देंगे कालेज भर में।" अवसर उचित था, अमल ने कह दिया।

"अरे राम!" यद्यपि चारुलता जानती ही थी कि वह सब भूमिका इसी प्रश्न के लिए बाँधी गई थी, तो भी कृत्रिम विस्मय से उसने कहा "तो मैं अब जूतियां गाँठने बैठूंगी तुम्हारे लिए। न भई, यह तो न हो सकेगा हम से। रुपये ले लो और बाज़ार से जाकर खरीद लो।"

'ऊंह" अमल ने कहा, "मशीन की बनी हुई और हाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बनी हुई वस्तु में जैसे कोई अन्तर ही नहीं होता। देखो अच्छी भाभी जो हुई आप ! हमें बना देना।

"यह नहीं हो सकेगा, मैं कहे देती हूं। मुझे सुई में धागा तक डालना नहीं आता, तिल्ले वाली जूतियां सीने बैठूंगी ?"

अमल कुछ निराश सा हो गया। वह बेचारा क्या जाने कि उसकी भाभी अपने संसार का केन्द्र बिन्दु उसी के निःस्वार्थ और पवित्र प्रेम को बना रही है। वह कैसे समझ सकता कि उस इन्कार के बावजूद चारुलता ने मन ही मन जूती सीने का निश्चय कर लिया है। इस निश्चय को उसी दिन से क्रियान्वित करना भी प्रारम्भ कर दिया। उसने चुपके २ अत्यन्त कठिन परिश्रम से सीना-परोना सीखा और दिन रात एक कर के जूती तैयार कर ली।

एक दिन चारुलता ने विशेष तौर से अमल को भोजन के लिए बुलाया। यह निमन्त्रण कोई असाधारण न था। परन्तु फिर भी भाभी के साथ खाना खाने में अमल को विशेष आनन्द मिला करता था। वह अपने मुंह से ग्रास निकाल कर उसे देती थी। इस लिए यह आमन्त्रण पाकर अमल को बड़ी प्रसन्नता हुई। वह झट हाथ मुंह धोकर तैय्यार हो आया।

गर्मियों की सन्ध्या थी। धीमी धीमी मनोहर वायु बह रही थी। छत पर श्वते रोपहला फर्श था। इस पर एक अत्युत्तम थाल सुन्दर रूमाल से ढका हुआ पड़ा था। अमल होठों पर जिह्वा फेरता हुआ आया। आते ही रूमाल उठा दिया। इस रूमाल के नीचे खाना नहीं था वरन् मखमल की एक अत्यन्त सुदंर तिल्ले वाली जूती थी। अमल पहले तो चकित हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु फिर लज्जा से हंसने लगा। चारुलता ने हंसकर कहा "खा लो भैय्या।"

अमल बोला:—

"क्या ? जूतियां ?"

चारुलता ने उसी प्रकार हंसते हंसते उत्तर दिया "तो क्या हुआ ? मखमल ही की तो हैं।" अमल हंसने लगा।

दिन बीत गया। अमल को जूती बहुत ही पसंद आई। वह बार बार उस की प्रशंसा कर रहा था। चारुलता को अपने परिश्रम का पूरा फल मिल गया।

परन्तु जूती पाकर असल ने और पांव फैलाने शुरु किये। आज मफलर चाहिए, कल रूमाल पर बेल बूटे न हुए तो नाक कट जाएगी। इस के अतिरिक्त बैठने की कुर्सी पर तेल भी तो लग जाता है। उसके लिए एक अच्छे रूमाल की आवश्यकता है।

चारुलता पहले तो इन्कार कर दिया करती, फिर उसे चुपके से तैय्यार भी कर देती। इसी प्रकार रसिक अमल की तृप्ति हो जाती।

इसी प्रकार समय अपने तीव्र गामी काले व श्वते परों पर उड़ता हुआ तेजी से अपने अन्त की ओर बढ़ता गया। मकान के घेरे के अदंर एक श्वेत भूखण्ड खाली पड़ा था। अमल को बैठे बैठे इस में उद्यान लगाने का विचार आया। विचार आते ही मांग प्रारम्भ हो गयी। पेड़ों और बीजों के लिए पैसों की मांग होने लगी। चारु मुख से इन्कार पर इन्कार करती परन्तु उस के हाथ वर्षा की भांति बरसते रहे। देखते ही देखते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मकान में अच्छा खासा सुन्दर उद्यान बन गया। इसी फुलवाड़ी में गोमड़े का एक वृक्ष भी था। यह छाया दायक भी था और ठण्डा भी।

अमल और चारु दोपहर के समय प्रायः इसी गोमड़े के नीचे बैठकर पढ़ा करते थे। एक दिन बैठे २ चारु को दूर की सूझी। उसने सोचा कि यदि इस उद्यान को अधिक विस्तृत कर दिया जाए और इसका रूप थोड़ा और अच्छा कर दिया जाए तो भूपति बाबू के लिए पर्याप्त आश्चर्य का कारण होगा। अतः उसने अपना प्रस्ताव अमल के समक्ष रखा। अमल की दावानल की सी रसिकता ने विचार-पङ्ख लगाकर तुरन्त उद्यान का एक ऐसा रेखाचित्र बना लिया जो सौंदर्य की दृष्टि से अत्यन्त आकर्षक और मनोरंजक था।

अमल ने दूर क्षितिज पर अपनी आँखें गाड़ते हुए मानो किसी अदृष्ट वस्तु को देखते हुए कहा, "भाभी ! पुरातन काल की राजकुमारियाँ अपने पेड़ों को स्वयं ही पानी दिया करती थीं। आपको भी ऐसा ही करना होगा।"

चारु बोली,

"इसके पश्चिमी भाग में एक छोटी सी झोंपड़ी हो जिस में मृगों के बच्चे रखे जाएं। बड़ी-बड़ी काली मादक आँखों वाले चौकड़ियों से प्रसन्नता बखेरते हुए मृग-शिशु !"

अमल की कवि-प्रकृति ने इस में वृद्धि की। "इस में एक झील हो जिस में राजहंस हों।"

झील के विचार ने चारु की कल्पना को पंख लगा दिये। वह इस चित्र में और गहरे रंग भरने लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"इस झील में नए-नए कमल लगाए जायं तो कैसे भले लगेंगे वे?"

अमल ने विचारों की तूलिका का एक और छींटा दिया।

"बिना पुल के झील भी क्या भद्दी लगेगी? झील में पुल के साथ हिलोरें लेती हुई नन्हीं २ नावें कैसी रहेंगी?"

चारु ने मधुरता से कहा, "यह पुलिया संगमरमर की होनी चाहिए। जब सावन के काले २ बादल आएंगे तो यह श्वेत पुलिया! उफ़ अमल, कैसा सुहावना दृश्य प्रस्तुत करेगी?"

अमल ने कागज़ पैन्सिल पकड़ी और बाग़ का रेखाचित्र तैय्यार हो गया। अब प्रतिदिन इन दोनों का यही कार्य था कि गोमड़े की छाया में बैठकर इस उद्यान के रेखा-चित्र में कांट-छांट किया करते। यहां तक कि दो-चार ही दिनों में कई चित्र बने और फाड़कर फेंक दिए गए। अन्ततः बड़ी उलझन और विवाद के पश्चात् एक चित्र पास हुआ। अब दूसरी समस्या थी इसके व्यय का अनुमान।

वैसे तो यदि वे चाहते तो उद्यान के लिए पर्याप्त धन भूपति बाबू से भी ऐंठ सकते थे। परन्तु ऐसा करने से भूपति बाबू को भी उद्यान की समस्त योजनाओं का ज्ञान हो जाता और यह चाहते थे कि यथा सम्भव यह होना चाहिए कि भूपति बाबू पत्र में लगे लिपटे नेतागिरी किया करें और यह दोनों चुपचाप उद्यान तैय्यार कर लें। इस प्रकार जब भूपति बाबू एकाएक इसे देखेंगे तो समझेंगे कि दीपक वाले अल्लादीन का कोई देव होगा, जिसने यह सब किया। इसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कारण दोनों ने निश्चय किया कि चारु अपने साधारण दैनिक व्यय में से धीरे २ उद्यान बनवाती रहे। इस प्रकार वर्ष डेढ़ वर्ष में सब कुछ तैय्यार हो जाएगा।

परन्तु जब अनुमान किया गया तो संगमरमर की पुलिया, मृगों की झोंपड़ियाँ, मारीशस से आने वाले लौंग के पौधे, करनाटक का चन्दन और श्री लङ्का के दारचीनी के पौधे जिन्होंने इस उद्यान की शोभा बनना था, बादलों में विलीन होते दिखाई दिए। एक गृहस्थिन चाहें किसी धनिक घराने की मालकिन ही हो, केवल अपने दैनिक व्यय में से यह ठाट-बाट कैसे कर सकती थी। अतः विवश होकर उद्यान में से कुछ घटाने की आवश्यकता अनुभव हुई। अमल में अब भी वैसा ही उत्साह था। उसने रेखा-चित्र पर बनी हुई पुलिया को काटते हुए कहा --

"भाभी जी, तो इस पुलिया ही को उड़ा दीजिए। इसकी ऐसी क्या आवश्यकता है?"

परन्तु चारु इसे केवल एक उद्यान का चित्र नहीं समझ रही थी अपितु उसकी दृष्टि में यह रेखाचित्र एक हृदयांकित होने वाला गीत था, एक सुन्दर पद था जिसका प्रत्येक अंग अत्यन्त आवश्यक था। तड़ककर बोली—"यह कैसे सम्भव है? नील-कमल कहाँ खिलेंगे?" परन्तु स्वेच्छाचारी अमल ने इन भावनाओं का ध्यान न करते हुए दूसरा घाव लगाया, "और फिर इन मृग शिशुओं के लिए जो मकान होगा, उस में बड़ी २ कड़ियों की ऐसी क्या आवश्यकता है? आजकल लकड़ी वैसे ही महंगी हो रही है। घास फूस का नन्हा सा झोंपड़ा ठीक है"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

„ऊंह „ चारु बोलीं, "ऐसे मकान ही को रहने दो बनात में टाट का जोड़ भला क्या लगाना ?" उसको ऐसा लग रहा था मानो उसके सुन्दर स्वप्न में से मधुरस छीना जा रहा हो।

और फिर अमल ने इसी निश्चिन्तता में तीसरी चोट लगाई :—

"यह चन्दन और लौंग और—क्या नाम यह दारचीनी की सी गरम वस्तुएं उद्यान में लगाने से क्या लाभ ? और कुछ नहीं तो अकारण सिर दर्द ही मोल लेंगे ? यही अपने देसी और विलायती फूलों के पौदे लगादेंगे। और भाभी जी! सत्य कहता हूं, तुम देख लना। इन्हीं फूलों से उद्यान दुल्हन बन जाएगा, दुल्हन ! मैं जो कहता हूं आप से।"

और चारु ने अनुभव किया कि किसी ने उसे झंझोड़ कर जगा दिया है। उसके स्वप्न की रंगीन दुनिया एक ही बार मिट्टी में मिल गई। उसने मुंह फुलाकर कहा—

"तो फिर सम्भाल रखो इस उद्यान को, ऐसा भी क्या इसका जुखाम लग रहा है। इसके बिना मरे नहीं जाते।"

"तो फिर भाई जी से कह दीजिए। वह स्वयं बनवा देंगे।"

"अरे वह तो एक बार कहदें तो इस स्थान पर नमरूद का उद्यान लग सकता है परन्तु उससे वह आनन्द कहां ?"

यह बात ठीक थी। भूपति बाबू को चकित करने से जो मोद होता वह उन्हीं से लगवाये उद्यान में कहाँ था। और यह बात भी ठीक थी कि यह स्वर्गिक उद्यान वहां उत्पन्न हो तो किस प्रकार ? कोई भी समस्या दूसरी से कम न थी। दोनों देवर भाभी खूब बुद्धि लड़ा रहे थे। गोमड़े के पत्ते इन दोनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को देख २ कर तालियाँ पीट रहे थे।

इतने में मंदाकनी पान लेकर बरामदे में आ गई। दोनों को घुल मिल कर बातें करते देखा तो रहा न गया। बात रोकते २ भी मुंह से निकल गई:—

"अरे यह तुम दोनों गोमड़े के नीचे बैठे क्या खिचड़ी पका रहे हो?"

चारु भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थी, झट से बोली "अरे कोई पक्का गोमड़ा ढूंढ रहे हैं, जो मिल जाए" "मिल जाए-' मंदाकनी के मुंह में भी पक्के गोमड़े का नाम सुनकर पानी भर आया, "तो मेरे लिए भी एक आध लेते आना, समझीं।" यह कहा और मंदाकनी अपने स्वभाव के अनुसार अन्दर चली गई। बात यह थी कि चारु और अमल अपने मन की बातें अपने तक ही सीमित रखा करते थे! यह भेद किसी तीसरे व्यक्ति के पास खोल कर भेद की गुप्त शक्तियों को तबाह करने के पक्ष में न थे। सत्य तो यह है कि मंदाकनी ने इनका भेद जानने का कभी यत्न ही नहीं किया। करती भी क्यों? बेचारी महाभारत काल की स्त्री थी, विचारशीलता से अभिज्ञ। किसी काव्यमयी कल्पना को समझने में असमर्थ थी। अतः बीसवीं शताब्दि के रसिक और कवि कल्पना रखने वाले इन भावज देवर की बात में हस्तक्षेप करती तो उसे क्या मिल जाता? अतः वह सदा इन लोगों से पृथक ही रहती और अपना संसार छालिया कतरने और पान बनाने तक ही सीमित रखती।

परन्तु ये दोनों गोमड़े की शीतल छाया में पहुंचते ही कल्पना की शृंखलाएं खोल देते। उद्यान के अनुमान पर और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विचार होता। परन्तु इसमें कभी किसी प्रकार की कमी के लिए स्थान ही न निकला। निकलता भी कैसे। रेखाचित्र में परिवर्तन के लिए अमल जो पैंसिल उठाता तो चारु का हृदय दहल उठता। तुरंत उसका हाथ रोक देती।

कुछ दिनों के पश्चात् धीरे २ रेखाचित्र कागज़ से उतर कर भूमि पर आने लगा। अमल ने फावड़ा लेकर उन स्थानों पर चिन्ह बना दिए जहाँ मृग-गृह बनना था। फिर नील कमल युक्त झील व पुलिया के लिए स्थान चुना गया। गोमड़े के आस पास विस्तृत घेरा डाल दिया गया। इस प्रकार भूमि पर योजना पूर्ण हो गई।

परन्तु उसी दिन जब उद्यान के लिए सीमा निर्धारण हो रहा था अमल फावड़ा चला रहा था, चारु चाव से उसके माथे से गिरती हुई परिश्रम के पसीने की बूंद को देख रही थी। उसी समय चारु ने एक नई बात छेड़ दी। आनन्द से नरम २ घास पर लेट कर बोली।

"अरे अमल! यदि तू लिख सकता तो कितना अच्छा होता।"

अमल ने फावड़ा कन्धे पर रखा और विस्मय से भाभी की ओर देख कर बोला:—

"क्यों ?—तो क्या मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ। मानो अमल नहीं, अमल की भाभी हूँ।"

"अरे मेरा आशय यह नहीं" चारु ने खिसिया कर कहा, "परन्तु यदि तू उद्यान वाली इन सब बातों को कहानी के रूप दे सकता तो कैसी मनोरंजक कहानी बन जाती ?"

फावड़ा स्वतः ही अमल के हाथ से छूट कर भूमि पर गिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ा और उसके पांव उसे स्वयं ही भाभी की ओर ले आए; वह उसकी आँखों में आंखें डाल कर बोला:—

"अगर मैं लिख लूं तो क्या देंगी आप ?"

"जो तू माँगेगा"

"तो फिर हो गई बात ?"

"हो गई।"

"पक्की,"

"पक्की,"

"अच्छा तो फिर हमारी मच्छरदानी पर फूल काढ़ दीजिए। बेल मैं बना दूंगा, भर देना आप।"

"तू तो बावला है। लो, भला किसी ने मच्छरदानी पर भी बेल बूटे कढ़वाए हैं।"

"अरे भाभी ! आप नहीं समझतीं। मच्छरदानी ही यदि सुन्दर न होगी तो यह एक नीरस कारागार बन कर रह जाएगी।"

"अच्छा तो मैं बना दूंगी, तू लिख।"

अमल ने पुनः भाभी की आँखों में आंखें डालीं और विचित्र ढंग से बोला:—

"मानो आप का विचार है कि हम लिख ही नहीं सकते।"

देर से बंद स्रोत लुप्त समझ लिया गया था परन्तु इस एक बूंद ने टपक कर जीवन की साक्षी दी। चारु इसका रसास्वादन करने के लिए विह्वल हो उठी।

"अरे अमल, तो तूने वास्तव में ही कुछ लिख रखा है। आज ही सुनूंगी, ला सुना।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमल ने कुछ लज्जा से कहा :—

"नहीं भाभी जी ! एक दिन और ठहर जाइये।"

"अरे नहीं, अब एक पल के लिए भी न ठहरूंगी। एक क्षण भी नहीं रुक सकती।"

इधर भाभी की हठ पर अपना प्रथम प्रयास सुना देने पर बाधित करता हुआ हृदय, प्रशंसा के आनंद से परिचित होने के लिए विह्वल कान और इधर लज्जा—यूं ही सी, निरर्थक, आशय रहित।

हठ की विजय हुई। हृदय ने लज्जा के पर्दे उठा दिए। और वह खाँसता, शर्माता और लजाता, लाल मुख पर मुस्कान बिखेरता हुआ अन्दर गया और अपनी कापी उठा कर फिर चला भी आया। उसी प्रकार शर्माता, लजाता और लाल मुख पर मुस्कान बिखेरने का यत्न करता-हुआ।

और फिर कापी खुल गई। शुष्क होंठों पर जिह्वा फिर गई। थूक गले को गीला कर गई। आँखें लेख पर जम गईं और घबराये हुए कांपते से स्वर ने गोमड़ की तालियों से स्वर मिलाया—लेख का शीर्षक था "मेरा रजिस्टर"—और यह कम्पित स्वर कह रहा था—ऐ मेरे शुद्ध और पवित्र रजिस्टर ! तेरी यह स्वच्छता इतनी गहरी है कि मेरी कल्पना वहां तक पहुंच नहीं पाती। तू संसार के युद्ध क्षेत्र में प्रथम पग धरने वाले उस बालक के समान है जिसने प्रसूतिगृह में अपनी प्रथम तान उड़ाई हो। मैं नहीं जानता कि कब और किस समय तुझ पर 'अन्त' का शब्द लिखूंगा। "इत्यादि"—इसी प्रकार की और बहुत सी बातें अमल ने लिख रखी थीं जिनमें प्रारम्भिक त्रुटियों की भरमार थी। तो भी कल्पना उनमें थी। चारु ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ समझा, कुछ अनुमान कर लिया कि अच्छा होगा और बोली—"और नहीं लिख सकते ?"

यह पहला दिन था जब अमल ने गोमड़े की छाया में बैठकर साहित्य की रसीली मदिरा का प्रथम घूंट चखा था। यह मदिरा ऐसी है कि एक बार मुंह से लगी फिर छूटती नहीं। नवीन मधुबाला और नवीन अधर—उसे ऐसा भान हुआ कि दोपहर के छोटे छोटे सायों में एक भेद हिल रहा है—एक भेद है जो खुल जाने के लिए तड़प रहा है।

वह सोच रहा था—साहित्य, साहित्यकार, अमर ख्याति, अडिग उच्चता—और सम्भवतः वह इन दोनों पर इतना मनन करता कि स्वयं को भूल बैठता। परन्तु चारु ने उसे वास्तविकता का ज्ञान करवा दिया। "अमल कुछ गोमड़े चुन लो। अन्यथा मंदाकनी को क्या विवरण देंगे ? और अमल ने गोमड़े चुन लिए—मंदाकनी बेचारी क्या जाने साहित्य, उसके लिए तो गोमड़े ही सब कुछ थे।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: २ :

उद्यान का विचार तो धरे का धरा रह गया। अब गोमड़े की शीतल छाह में साहित्य-चर्चा होने लगी। और यह दोनों इस साहित्यकता में कुछ ऐसे खो गए कि पता भी न लगा उद्यान कहां गया और रेखाचित्र कहाँ गुम हो गया।

अमल प्रतिदिन जब भाभी से मिलता तो कहता—"भाभी जी ! एक विचार सूझा है। आ हा ! हा !! क्या काव्यमय विचार है, काश इसके लिए शब्द मिल जाते।"

और चारु कहती—

"प्रयत्न तो करते"

"अजी प्रयत्न क्या करता। यह देखो, पृष्ठ पर पृष्ठ लिखकर काट दिये। वह आनन्द नहीं आया जो इस विचार के मन में आते समय आया था।"

और इसके साथ ही चारु की हठ प्रारम्भ हो जाती "सुनाओ, अभी सुनाओ"

परन्तु कुछ तो लज्जा वश और कुछ वैसे ही नखरे दिखाने के लिए अमल इन्कार पर इन्कार करता। कभी कहता "थोड़ा सा तो लिखा है, वह भी गलत सलत, ठीक करलूं तब सुनाऊंगा।" कभी कहता, "इस प्रकार क्या आनन्द आएगा। यह तो इस विचार की भी जड़ निकल गई क्या खाक आनन्द आएगा ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और जब चारु का हठ सीमा पार कर जाता तो वह चुपके से बाहिर खिसक जाता। इस प्रकार चारु की जिज्ञासा को चोट लगती। वह रुष्ट हो जाती या रुष्ट होने का यत्न करती। यह बात अस्वाभाविक न थी।

ऐसे अवसर पर प्रायः यह हुआ करता था कि चारु पूरा दिन ही मन में बड़ी २ शपथें लेकर निश्चय किया करती कि वह अमल से नहीं बोलेगी। उसके लेख को सुनने का चाव प्रकट नहीं करेगी। जो हो सो हो, यदि अमल ने बुला भी लिया तो डांट देगी। लेकिन संध्या समय अमल स्वयं ही फिरता फिराता कहीं से प्रकट हो जाता और चारु के सामने आकर जेब में से रूमाल निकलने के बहाने कागज का जरा सा कोना बाहिर दिखा देता। सभी शपथें, सभी निश्चय, कागज़ के इस छोटे से कोने को देखकर पिघल जाते। वह विह्वल हो उठती और विवश होकर कहती:—' लिख लिया पूरा"

"नहीं तो" अमल जेब से निकले हुए कागज़ को थपक कर कहता, "यह तो वैसे ही कागज है"

"चलो जितना लिखा है, सुना दो"

"तो फिर सुनिये"

जेब से कागज़ निकल आता और काव्य का फव्वारा उछलकर चारु की आत्मा को प्रसन्नता से तर कर देता। एक दिन देवर भाभी में इसी प्रकार का झगड़ा हुआ। यह झगड़ा यद्यपि नया नहीं था परन्तु कटु अवश्य था। इसलिए चारु ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि चाहे भूमि आकाश बन जाएं और आकाश भूमि पर उतर आए, चाहे मंदाकनी का पानदान मृतक की खोपड़ी का रूप धारण कर ले, तो भी वह उससे न बोलेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसलिए संध्या समय जब अमल सीटी बजाता आप ही आप मुस्कुराता हुआ अन्दर आया तो चारुने भयानक तेवड़ी चढ़ा ली, और कमरे से निकल बरामदे में चली गई।

अमल ने देख लिया और उसने भी अपना रोष प्रकट करने के लिए मंदाकनी को आवाज़ दी। यह चीज़ चारु के लिए अत्यन्त कष्ट दायक थी। स्त्री स्वभावतः ईर्ष्यालु होती है या कुछ और। कुछ भी हो चारु यह सहन न कर सकती थी कि उसके अतिरिक्त कोई और भी अमल की गुप्त शक्तियों से आनंदित हो सके। वह सहन न कर सकी। वह मकान के अंदर के कमरे में आकर कई बार तालियाँ बजाती रही लेकिन इस पर भी दुष्ट अमल ने उसकी ओर फिर कर नहीं देखा।

इस रूखेपन से चारु बहुत दुखी हुई। वह क्रोध के आवेश में अपने कमरे में गई और ऐसे ही आलमारी में हाथ मार दिया। वह नहीं जानती थी कि उसके हाथ में क्या है? पुस्तक तो थी परन्तु पुस्तक का नाम क्या है, लेखक कौन है, मनोरंजक भी होगी या नहीं—यह सब प्रश्न चारु की क्रोधाग्नि की गगन चुम्बी लपटों में जलकर भस्म हो गये थे। चारु इसी क्रोध में पुस्तक लिए बरामदे में पहुंची और अपने मूढ़े पर बैठ कर पढ़ने लगी।

यह पुस्तक मन्मथदत्त की लिखी हुई थी। मन्मथदत्त नए लेखक थे। इनके लेख में भी लग भग वही त्रुटियां थी जो अमल के लेख में पाई जाती थीं। इसलिए अमल इसकी पुस्तकों की हँसी उड़ाया करता था। वह समझता कि मै इससे कहीं अच्छा लिख सकता हूँ।

कुछ क्षणों के पश्चात् अमल बरामदे में प्रविष्ट हुआ लेकिन चारु ने उसकी [illegible] निश्चय कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिया था कि चाहे कुछ हो अमल को उसके सामने झुकना होगा।

परन्तु अमल का क्रोध शान्त होचुका था। या सम्भव है उसे मंदाकनी न मिली हो और यदि मिली हो तो कोई आकर्षक बात न कर सकी हो और अमल चुपके से वहाँ से चला आया हो। कुछ भी हो अब अमल की मुद्रा में क्रोध या रोष का चिन्ह नहीं था। वह लपका हुआ आया और आते ही बोला :—

क्यों भाभी! क्या पढ़ रही हैं आप ?"

चारु चुपके से बैठी रही। ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी दृष्टि पंक्तियों से सी दी गई हो।

भाभी को रुष्ट देख कर अमल शरारत-पूर्ण खुशामद करने लगा। कुर्सी के पीछे आकर पुस्तक देखने के पश्चात् कहने लगा :—

"उफ आहे! मन्मथदत्त की बकवाद पढ़ रही हैं आप!" चारु झल्ला कर बोली :—

"तुम को क्या? हम पढ़ रहे हैं।"

अमल ने हंसी करने की दृष्टि से पुस्तक को उच्च स्वर में पढ़ा :—

"मैं वृक्ष हूँ—छोटा सा वृक्ष......

एक साधारण वृक्ष! मुझ में पुष्प नहीं कि सुन्दर दिखाई दूं। मेरे पास छाया नहीं कि मेरे लिए किसी के मन में आकर्षण उत्पन्न हो। मैं इतना ऊंचा नहीं कि मेरी बुद्धि आकाश पर हो। वसंत में मेरी हरी हरी डालियों पर झूम २ कर कोकिला मदन तरंगों में नहीं कूकती—मेरी डालियों पर उसके लिए कोई स्थान नहीं—जो कुछ भी हो, भाई अशोक! तुम इन्हीं पुष्पों से लदी डालियों की छाया मेरे सिर पर रखना। यह मैं सहन नहीं कर सकता क्यों कि यद्यपि मैं छोटी हूँ, मामूली हूं—तब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी एक वृक्ष हूं, वृक्ष !

और अमल ने इस पर पैरोडी की :—

"मैं केले का वृक्ष हूँ—वेडौल लम्बा, और तू मेरे भाई आम का वृक्ष है। तो भी मेरे सिर पर—

चारु को यह मजाक़ ऐसा पसन्द आया कि वह खिलखिला कर हंस दी। और ऐसी हंसी कि मारे हंसी के दोहरी हो गई। सम्भवतः यह क्रोध की प्रतिक्रिया थी। उसने पुस्तक परे फेंक दी और बोली :—

बहुत जलते हो जी। अपनी लिखी हुई चीज़ों के सामने किसी और को कुछ समझते ही नहीं।"

अमल बोला:—

"जी जी! मैं तो खैर ईर्ष्या करता हूँ। आप कहां को विशाल हृदया हैं? ज़रा सी बात हुई और मुंह फुटबाल बन गया।"

"खैर महाराज" चारु लज्जित तो हुई परन्तु हंस कर बोली, "यह तुम्हारी जेब जो तरबूज की भांति फूली पड़ी है"

अमल ने हंस कर कहा

'आप के मुंह की नकल उतार रही है।"

"अच्छा तो है क्या, हमें भी सुनाओगे या आज शपथ ले रखी है।" लेकिन अमल शीघ्र काबू आने वाला थोड़े ही था। इधर उधर की बातें बना कर उसे तंग करने लगा। अन्ततः जब चारु बहुत ही परेशान हो गई तो अमल ने अपनी जेब से एक प्रसिद्ध पत्रिका निकाल कर भाभी के हाथ में दे दी।

चारु ने पन्ने पलट कर देखे। इसमें अमल का वही लेख छपा हुआ था जो आज से कुछ दिन पूर्व केवल रजिस्टर की ही शोभा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह देख कर चारु चुप सी हो गई। अमल का विचार था कि उसकी इस सफलता को देखकर उसकी भाभी प्रसन्नता से उछल पड़ेगी। परन्तु यहाँ तो बात ही उलटी थी। चारु की मुख मुद्रा पर प्रसन्नता का कोई चिन्ह न था।

लेकिन अमल प्रशंसा सुनने के लिये उत्सुक हो रहा था इस लिये बोला:—

"इस पत्रिका में कोई ऐसे वैसे लेख नहीं छप जाते। बड़ी प्रसिद्ध पत्रिका है"

यद्यपि वास्तविकता यही थी कि इस पर्चे में भी अन्य पर्चों की भाँति, भर्ती के लेख अधिक होते थे। सम्पादक महोदय के हाथ जो कुछ भी लग जाता वह इसी से पृष्ठ पूरे कर लिया करते थे। परन्तु अमल ने अपनी प्रशंसा के आशय से सम्पादक महोदय की जी खोल कर सराहना की। और कहा कि वह सहस्रों लेखों में से छाँट कर लेख छापते हैं।

चारु समझती थी कि सम्पादक महोदय की यह सब प्रशंसा अपनी बड़ाई करने के लिए हो रही है और अमल अपनी प्रशंसा सुनना चाहता है। अतः उसने प्रसन्नता प्रकट करने का प्रयत्न किया। परन्तु न जाने क्या बात थी कि वह असफल रही। उसकी मुस्कान फीकी और नीरस थी। उसकी खिलखिलाहट खोखली और निरर्थक थी। उसकी प्रशंसा सर्वथा निर्जीव थी। वह स्वयं भी सोचती थी कि इस आत्म-विस्मरण का क्या कारण है। जिस पौदे को उसने स्वयं अपनी आशाओं से सींच २ कर बड़ा किया था, उसको फलता फूलता देख कर वह हर्ष से फूल क्यों न उठी। परन्तु प्रयत्न के बावजूद वह कुछ भी समझ न सकी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेखक का मन एक दो लेखों के प्रकाशन से नहीं भरता। अमल भी लेख पर लेख लिखने लगा। वह प्रकाशित होने लगे कुछ प्रशंसकों के उत्साहदायक पत्र भी प्राप्त होने लगे। अमल ने वे सभी पत्र भाभी को दिखाए। परन्तु चारु इन पत्रों को देखकर हर्ष की लहर के स्थान पर एक आघात सा अनुभव करती थी। उसे ऐसा भान होने लगता कि किसी ने उसके हृदय पर ताक कर घूंसा मारा है। और वह निश्वास भर कर रह जाती।

अमल को कभी २ स्त्रियों से भी प्रशंसा के पत्र मिलने लगे और देखते ही देखते बंगाल की शिक्षा-प्रिय विभूतियां अमल और चारु के बीच भीत बन कर आ खड़ी हुईं।

भूपति बाबू ने भी एक दिन कह दिया :—

"अमल इतना अच्छा लिखने लगेगा, हमें तो इसका गुमान ही न था।"

आज पहला दिन था कि अमल की प्रशंसा सुन कर चारु को प्रसन्नता हुई। भूपति अमल को अपने पंखों के नीचे छुपाए थे। और भी कई व्यक्ति भूपति बाबू के आश्रय पर थे। परन्तु चारु यह सिद्ध करना चाहती थी कि अन्य कोई भी व्यक्ति उस के अमल के समान नहीं हो सकता। इसके साथ वह यह भी समझती थी कि वही ससार का वह प्रथम व अन्तिम जीव है जिसने अमल की गुप्त शक्तियों व रहस्यपूर्ण गुणों को पहली बार देखते ही भाँप लिया था। मिट्टी में मिले सोने की पहचान करना ही तो विशेषता है। जब सोना बाहर आ जाए तब तो हर कोई उसे सोना ही समझेगा।

यह सोच कर चारु की छाती फूल गई। वह अहंकार-पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वर में बोली :—

आप ने पढ़ा इसका लेख ?"

भूपति बाबू बोले :—

"हां, लेकिन ऐसा ध्यान से नहीं पढ़ा। तुम जानो समय ही नहीं है। परन्तु, निशिकान्त बाबू ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। वह बंगाली भाषा को खूब समझते हैं। वह कहते थे कि इस में भविष्य का बहुत बड़ा लेखक पल रहा है।"

चारु की आकांक्षाओं का लक्ष्य यही था कि भूपति बाबू के हृदय में अमल का सम्मान पैदा हो जाए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ३ :

उमापति बाबू ने भूपति को सोने की चिड़िया समझ ही रखा था। अतः उनके सब प्रयत्नों का आशय और प्रत्येक भावना का स्रोत भूपति बाबू की जेब से कुछ न कुछ बटोरना ही हुआ करता था। आज वह इसी भावना को लेकर पधारे थे। और भूपति बाबू को महाज्ञानी लोगों की भांति समझा रहे थे कि वह अपने लेखकों में पाँच पारितोषक वितरित करने की घोषणा करें। लेकिन भूपति बाबू की समझ में किसी प्रकार भी यह बात न आती थी कि पारितोषक वितरण के पश्चात् लाभ की वर्षा कहाँ से हो पड़ेगी।

अभी यह बहस बड़ी तीव्रता से हो ही रही थी कि चारु भी पति के साथ दो बातें करने के लिए आ निकली। परन्तु उमापति बाबू को बैठा देख कर उल्टे पांव चली गई। कुछ समय बेचैनी से इधर उधर टहलने के पश्चात् फिर आई परन्तु यह अभी तक उसी समस्या में उलझे पड़े थे।

उमापति ने चारु की बेचैनी देख ली और किसी बहाने से बाहिर खिसक गए। उनका जाना था कि चारु के लिए स्वर्ग द्वार खुल गया। भूखे के सामने परोसी हुई थाली आ गई जिसमें रंगा रंग की मिठाइयां और भांति भाँति की भाजियाँ थीं। लपकी हुई पति के पास गई और बोली:—

"अखबार में तो आप कुछ ऐसे खो गए मानो संसार में अखबार और अखबार के हिसाब के अतिरिक्त और कुछ है ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं। अभी तक भी काम समाप्त नहीं हुआ। समझ में नहीं आता कि आप इतना परिश्रम करते कैसे हैं ?"

भूपति ने काग़ज एक ओर रख दिए। होंटों पर एक नन्ही सी शुष्क मुस्कान तड़प गई। परन्तु वह मन ही मन सोच रहे थे कि वह वास्तव में ही चारु की ओर से बहुत बेपरवाह होते जा रहे हैं। अखबार के धन्धे उनके समस्त जीवन पर कुछ इस प्रकार छा गए हैं कि उन्हें समय ही नहीं मिलता। इस लिए उन्होंने चारु को दिलासा देने के लिए प्रेम पूर्वक कहा:—

आज तुमने पुस्तकों को हाथ तक नहीं लगाया। दिखाई देता है तुम्हारे गुरु महाराज कहीं सटक लिए हैं। भई हमारी समझ में तो तुम्हारे इस स्कूल के नियम आते नहीं। शिष्य पुस्तक हाथ में लिए बैठा है और मास्टर साहब गधे के सिर के सींग हो रहे हैं।"

चारु ने चिन्तित हृदय की आकांक्षाओं को सुन्दर शब्द दिए:—

"यह कहाँ लिखा है कि मैं अपने लिए अमल का समय बर्बाद करूं। वह कोई मेरा नौकर थोड़ा ही है ?"

भूपति इस में निहित कटाक्ष को भाँप गए। खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे वाली बात हुई कि उन के हाथ स्वतः ही बढ़ कर चारु के आंचल से लिपट गए। उन्हों ने उसे घसीट कर अपने पास बिठा लिया और बोले:—

"अगर तुम जैसी शिष्या मुझे मिल जाए तो मैं दिन रात पढ़ाता ही रहूं। ऐसी भाभियाँ भाग्य ही से मिला करती हैं। मुझे यदि ऐसा अवसर मिलता तो......"

चारु बोली:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोड़िये।"

भूपति सरक कर चारु के समीप आ गए और उसकी गर्दन में बाहें डाल कर बोले:—

"लेकिन इसमें रुष्ट होने की ऐसी कौनसी बात है। कल ही से हम तुम्हें स्वयं पढ़ाना प्रारम्भ कर देंगे। ज़रा अपनी पुस्तकें तो लाओ देखें क्या पढ़ा है तुमने।"

"ऐ बस हटो भी।" चारु ने कोमलता से भूपति को परे धकेलते हुए कहा, "यह बातें किसी और के सामने बनाईयेगा। आपको अखबार से कब अवकाश मिलेगा जो मुझ गरीब को पढ़ाने का समय निकल आएगा।"

"हम अवश्य पढ़ाएंगे, जी। लो भला, यह भी कोई बात हुई कि तुम कहो और हम न करें।"

"अच्छा तो यह बात है। लाइये तो देखें।" और फिर एक मासिक पत्र पति की ओर बढ़ाते हुए बोलीं, "इस में अमल का लेख प्रकाशित हुआ है। अति सुन्दर लेख है यह। सम्पादक महोदय कहते हैं कि इस लेख को पढ़ कर बगाँली भाषा के सब से बड़े आलोचक पाल बाबू ने उन्हें बंगाल के रस्किन की उपाधि दी है। आप भी पढ़ देखिए।"

यह सुन कर भूपति बाबू के पाँव के नीचे से भूमि खिसक गई। परन्तु मरता क्या न करता। वचन दे चुके थे इस लिए निभाना आवश्यक था। अनिच्छा पूर्वक मासिक लेकर खोला। अमल का लेख सामने था। शीर्षक था "असाढ़ का चांद"। लेकिन असाढ़ के चाँद और सावन में घिर घिर कर आने वाली बदलियों की परवाह उसे हो जिस के वक्ष में हृदय और हृदय में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोटा सा कवि बढ़ रहा हो। परन्तु यहाँ केवल मस्तिष्क था और उस पर भी अर्थ शास्त्र का प्रभाव। भूपति कुछ दिनों से सरकार के बजट पर कड़ी आलोचना कर रहे थे। इस समय भी उन पर राजनीति व अर्थनीति का भूत सवार था। इस प्रकार की कठिन मानसिक अवस्था में भला असाढ़ के चाँद की कोमल रश्मियाँ क्या प्रभाव डाल सकती थीं।

और फिर यह वाक्य—

"आज आसाढ़ का चांद क्यों बादलों की कमली ओढ़े छुप छुप कर रात भर फिरता रहा मानो स्वर्ग,से कुछ चुरा लाया है। जैसे उसे अपना यह अपराध छुपाने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। फागुन मास में जब आकाश पर मेघों का चलन नहीं होता तो यही चोर अपने हाथ में दीपक लिए खुल्लमखुल्ला नीले आकाश पर फिरा करता है। और आज इसकी यह छिपी छिपी मुस्कान की तीव्र बिजलियाँ--नवजात शिशु के आनन्द दायक स्वप्न की भांति—सुन्दरी के मुखमण्डल की प्रथम झलक की स्मृति के समान—इन्द्राणी के लम्बे लम्बे विस्तृत बालों में पिरोई हुई चमकदार मणिमाला के समान—"

यह वाक्य तो उस पर बरछिया बरसाते ,थे जिस के वक्ष-स्थल में हृदय होता। यहाँ तो हृदय के स्थान पर राजनीति थी। भावनाएं नहीं, अर्थ-नीति का भूत सवार था। यहाँ इस कोमल ओस का प्रभाव पड़ता भी तो कैसे ? और वह इस प्रभाव को स्वीकार करते भी तो क्यों ? इसलिये उन्होंने इतना ही पढ़कर सिर झुका लिया और चारु की भावनाओं का मान रखने के लिए बोले:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बहुत सुन्दर लिखा है—लेकिन भई वस्तु-स्थिति तो यह है कि मैं इस प्रकार के काव्यमय विचारों को भलि-भाँति समझ नहीं सकता।"

चारु ने अल्हड़ता से उनके हाथ से पर्चा छीन लिया और बोली:—

"आप समझते क्या हैं, आखिर?"

"तुम जानो, सांसारिक व्यक्ति ठहरा। मैं तो मानव को समझता हूं और बस!"

चारु बोली:—

"तो आप का विचार है कि साहित्य मानव से परे हटकर अमानवीय बातों की राम-कथा कहता है"

"साहित्य में जो लोग मनुष्य को घसीटने का यत्न करते हैं वे भूल करते हैं। मनुष्य तो स्थूल रूप में उनके सन्मुख उपस्थित है। उसके विषय में पृष्ठ काले करने की भला ऐसी क्या आवश्यकता है?" और फिर चारु की ठोड़ी पकड़कर बोले, "मैं जब तुम्हीं को देख सकता हूं और मेरी आंखें तुम्हारे सीने में उतर सकती हैं तो फिर मेघनाथ 'विदेह' और चण्डीदास कवि को किस वैद्यने कहा है कि मुझे समझाने के लिए कि चारु कौन है धड़ा-धड़ स्याही बहाएं।"

सत्य तो यह है कि भूपति बाबू कविता और गायन सम्बन्धी सूक्ष्म कोमल विचारों के बारे में सर्वथा अनभिज्ञ थे। लेकिन फिर भी उन्होंने अमल के इस गद्य काव्य को स्थान स्थान से पढ़ा और सराहा। परन्तु फिर भी वह मन ही मन सोच रहे थे:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"आखिर इन निरर्थक बातों का लाभ क्या? बिना किसी आशय के व्यक्ति ऐसे ऐसे विचारों में उलझा रहे, इसका अर्थ क्या हुआ? तो भी अमल लिखता सुन्दर है।

भूपति बाबू यद्यपि काव्य और गद्य काव्य जैसी कोमल साहित्यक कृतियों से अनभिज्ञ थे तो भी साहित्य के प्रशंसक अवश्य थे। यही कारण था कि बंगला भाषा से असंबद्ध रहने के बावजूद वह बंगाली की प्रत्येक नई पुस्तक खरीद लिया करते थे। इसलिए इनका बंगाली पुस्तक संग्रह सुन्दर था।

इस वार्तालाप के कुछ दिन पश्चात् अमल—जो अंग्रेजी अखबार के प्रूफ देखने में भी भूपति बाबू का हाथ बटाया करता था--हाथ में प्रूफ की कापियां पकड़े आगया। भूपति बाबू ने उसे देखा तो मुस्कुरा कर बोले:—

"अरे भाई अमल! तुम असाढ़ के चाँद और भादों के लहरें लेते हुए बादलों के विषय में जो चाहे लिखो मैं किसी की स्वतन्त्रता में बाधक होना पसन्द नहीं करता। परन्तु यह तो बड़ी बुरी बात है कि तुम्हारी इसी कविता के कारण हमारी जान पर आ बने और हमारी स्वतन्त्रता पर कुल्हाड़े चलाए। इच्छा अनिच्छा तुम्हारी भाभी हमें बाधित करती हैं कि हम तुम्हारी कल्पनाएं पढ़ा करें। यह तो बड़ा अत्याचार है।"

और अमल ने हंसकर कहा:--

"मुझे क्या पता था कि भाभी मेरी टट्टी की आड़ में शिकार खेलने की सोच लेंगी। यदि यह जानता तो कभी न लिखता।

अमल जानता था कि भूपति बाबू को साहित्य से नाम मात्र को भी लगाव नहीं। इसलिए वह किसी प्रकार भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहता था कि उसके साहित्यक प्रयास भूपति बाबू के लिए एक स्थायी आपत्ति बन जाए। इसलिए जब उसको पता लगा कि चारु ने इस प्रकार बलात् भूपति को विवश किया है तो उसे दुःख हुआ। शीघ्र ही वह बात का रंग बदल गया।

भूपति तो पहले ही इस साहित्य चर्चा से छुटकारा पाना चाहते थे। अमल को बात बदलते देखकर झट बोल उठेः—

"यदि तुम्हारा विवाह हो जाए तो यह सब विवाद मिट जाए।"

लेकिन इसके साथ ही उनको यह अनुभूति भी थी कि आजकल के लड़के कवि होते हुए भी क्रियात्मक संसार में अत्यन्त तीव्र गामी होते हैं। इसलिए उनको विश्वास था कि चारु प्रयत्न के बावजूद उसको सीधे रास्ते पर न लाएगी।

अन्ततः हार कर बोलेः—

"अरे भाई, मैं तो अखबार के झंझट में कुछ इस प्रकार फंसा हूँ कि अवकाश ही नहीं मिलता। तुम कुछ समय निकल कर अपनी भाभी को पढ़ा दिया करो। इससे उसका मन भी बहल जाएगा और सम्भव है कि वह तुम्हारे साहित्यक कार्यों में भाग ले सके।"

"यह बात तो है ही। भाभी जी यदि थोड़ा सा ध्यान दें तो बड़ा सुन्दर लिख सकती हैं।"

"खैर, यह बात तो नहीं" भूपति बाबू ने हंसकर कहा, "लेकिन एक बात कहनी ही पड़ती है कि चारु बंगाली भाषा और बंगाली साहित्य को खूब समझती है। कम से कम इस मामले में मुझ से तो अधिक समझ सकती है।"

"उनका तो साहित्य से स्वाभाविक संयोग है। ऐसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संयोग बहुत कम स्त्रियों में देखा जाता है।"

"स्त्रियों का तो कहना ही क्या, सहस्रों पुरुष भी इस गुण से अनभिज्ञ होते हैं। मुझको ही देख लो न। लेकिन, खैर, यह तो बात हुई। यदि तुम उन्हें इस ओर प्रवृत्त कर सको तो मैं तुम्हें पुरस्कार दूंगा।"

"क्या पुरस्कार।"

"तुम्हारी भाभी जैसी लड़की ला देंगे जो तुम्हें पति देव कहकर पुकारा करेगी।"

"भाभी ऐसी ? अर्थात् उसे भी पढ़ाना होगा मुझे ? आयु भर बुड्ढे तोतों को ही पढ़ाता रहूँगा क्या ?" भूपति बाबू हंस दिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ४ :

अब अमल पहले की भांति केवल एक बालक ही न था अपितु अब समाज ने उसका मूल्य पहचान लिया था। पत्रों के सम्पादक और संस्थाओं के कार्यकर्त्ता उसे घेरे रहते थे। भोज होते। बहुत सी सस्थाएं उसे अध्यक्ष बनाने को उत्सुक हो रही थीं।

आज से पूर्व मंदाकनी उसे केवल एक चंचल बालक ही समझती रही थी। अमल और चारु के प्रयास बच्चों की सी बातें मात्र प्रतीत होती थीं। परन्तु जब अमल ने अपने पंख फैलाकर बाह्य संसार को उनके नीचे ले लिया और बाह्य संसार ने भी उसको सिर आंखों पर स्थान दिया तो उसकी आँखें खुलीं। अब उसके सामने अमल गोमड़े के वृक्ष के नीचे बैठकर भाभी के कल्पना-दुर्गों के लिए ईंट गारा ढूंढने वाला मज़दूर ही न था अपितु समाज के लौह-दुर्ग में एक विश्वस्त और अनुभवी निर्माता का स्थान प्राप्त कर चुका था।

इसके अतिरिक्त आज से पहले मंदाकनी को एक बड़ी कठिनाई और भी थी। अमल को पान खाने का बहुत अधिक स्वभाव था और पान बनाने का समस्त बोझ मंदाकनी के कंधों पर था। मंदाकनी जानती थी कि वह इस घर में मालकिन के रूपमें नहीं अपितु अधिक से अधिक एक अतिथि के रूपमें रह रही है। वह यह भी जानती थी कि अमल भी उस घर का कोई नहीं होता। उसकी भी वही स्थिति है जो मंदाकनी की है। इसलिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी सेवा करने या उसके लिए कोई काम करने में वह अपमान मानती थी। और चाहती थी कि जैसे भी हो, अमल का बोझ टले। परन्तु दुःख तो यह था कि अमल चारु के बहुत मुहं चढ़ा हुआ था। यह कहना चाहिए कि चारु उसके लिए पागल हो रही थी। पल भर को भी अपने सामने से हटने न देती थी। यही कारण था कि मंदाकनी मन ही मन क्रुद्ध होने पर भी मुख से एक शब्द नहीं कह सकती थी। किन्तु हृदय का धुआं किसी न किसी प्रकार अवश्य निकलता था। और नहीं तो घर के नौकर चाकर ही इसके साथी बन जाते। और वह इसके सामने अमल की बुराइयाँ करके गले के फफोले फोड़ा करती।

किन्तु देखते ही देखते अमल कुछ से कुछ हो गया। कालेज का एक निश्चिन्त चचंल छोकरा मानो किसी जादू की सहायता से समाज का एक सम्मानित अंग बन गया था। इस समय मंदाकनी को मानो किसी ने झंझोड़ कर सावधान कर दिया। अमल अब वह अमल नहीं था जो किसी पर आश्रित हो। अब ऐसा प्रतीत होता था कि वह स्वयं घर का मालिक है। घर में प्रत्येक कार्य उसके संकेत से हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति को डांट देने का उसे पूरा अधिकार हो गया था।

जिसका संसार सम्मान करता है, उसका सभी सम्मान करने लगते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि प्रतिष्ठित व्यक्ति का सम्मान करते समय संसार का प्रत्येक व्यक्ति गर्व अनुभव करता है। जब मंदाकनी ने देखा कि अमल को यत्र-तत्र सम्मान मिल रहा है और जहाँ वह जाता है लोगों की गर्दनें सम्मान से झुक जाती हैं तो उसने भी अमल के उच्च भाल का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओर देखा। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि अमल के मस्तक से तेज बरस रहा हो। मंदाकनी थी तो स्त्री ही, इस तेज से प्रभा-वित हुए बिना न रह सकी। और स्वतः ही अज्ञात रूप में अमल की ओर आकृष्ट होती गई। उसे अनुभव हुआ कि अमल सर्वथा बदल गया है। न केवल उसकी मानसिक एवं बौद्धिक स्थिति ही अपितु उसका प्रत्यक्ष रूप भी इतना बदल चुका है कि उसे पहचानना कठिन हो गया है। इस नई श्रद्धा ने अपना प्रदर्शन किया। अमल को पान चुराने की कठिनाई से मुक्ति मिल गई। अब पान स्वयँ अमल के पास आने लगे। सम्मान करने वाले हाथों से लगे हुए पान !

प्रत्यक्षतः मँदाकनी की इस श्रद्धा से चारु को किसी हानि का संदेह न होना चाहिए था। इस प्रकार का निर्दोष और निर्लेप प्रेम किसी को भी हानि नहीं पहुँचा सकता। लेकिन न जाने क्यों चारु को ऐसा भान होने लगा कि मंदा कोई गहरी चाल चल रही है—षड्यन्त्र का ऐसा पेचदार जाल फैला रही है जिससे उसके मनोरञ्जन का कण-कण बिखर जाए।

लेकिन यह भी तो नहीं कहा जा सकता कि मंदाकनी की यह रुचि चारु पर किसी प्रकार का प्रभाव ही नहीं कर रही थी। चारु और अमल के बीच प्रेम का एक ऐसा सम्बन्ध बन गया था कि चारु अमल के लिए और अमल चारु के लिए होकर रह गया था। अमल की दृष्टि में मंदाकनी की वही स्थिति थी जो एक बटोही की हुआ करती है कि कन्धे से कन्धा टकरा कर निकल गया—किसी अज्ञात स्थान पर—परन्तु मंदाकनी यह किसी प्रकार भी सहन न कर सकती थी। वह चाहती थी कि जैसे भी सम्भव हो सके वह अमल के समीप आ जाए—इतनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समीप हो सम्भवतः चारु के स्थान पर—इस लिए जब भी अवसर मिलता इन दोनों के बीच आने का यत्न करती। और चारु—इस बेचारी को तो इतना अवकाश ही नहीं मिलता था कि वह मंदाकनी के इस क्षणिक परिवर्तन पर कुछ राय देती।

इसलिए यदि चारु यह समझने लगती थीं कि मदांकनी के अमल की ओर आकृष्ट होने में कुछ विशेष रहस्य है तो वह अधिक गलत न थी। और यदि इससे उसे कष्ट होता तो भी उसे अधिकार था। यदि हम यह भी कहें कि मदांकनी के इस प्रेम-प्रदर्शन ने चारु के हृदय पर छुरियाँ चला दीं और वह अन्दर ही अन्दर कुढ़ने लगीं तो उसमें चारु को दोषी ठहराने का किसी को अधिकार नहीं। लेकिन अमल को मंदाकनी के इस प्यार में आनंद अनुभव होने लगा था। न होने का भी कोई कारण न था। वह देख रहा था कि एक बेपरवाह स्त्री उसकी आकर्षण शक्ति के प्रभाव से उसकी ओर खिंची आती है। इस अनुभूति से कि उसमें भी एक स्त्री के हृदय में अकर्षण पैदा करने वाली वस्तु है, वह हर्षोन्मत्त हो रहा था परन्तु वह अपनी प्रसन्नता प्रकट भी नहीं कर सकता था।

इस लिए जब चारु मदांकनी को दूर से आता देख कर कहती, "लो—आई।"

तो अमल उसका दिल रखने के लिए कह देता:—

"उलट देंगी घावों पर नमकदान।" लेकिन इसके बावजूद मन ही मन प्रसन्न हो जाता।

चारु और अमल जब अकेले होते तो स्वभावतः संसार के अन्य प्रत्येक व्यक्ति के प्रति अत्यन्त हार्दिक घृणा प्रकट करते, लेकिन मंदाकनी के इस झुकाव ने अमल के हृदय में इस घृणा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और एक स्त्री के झुकाव से उत्पन्न होने वाले आनंद के बीच एक भूकम्प पैदा करने वाला संघर्ष उत्पन्न कर दिया। इसलिए जब मंदाकनी एकाएक उसके सामने आ गई और उसे यह प्रतीत होने लगा कि मंदा उसी के आकर्षण से खिंच कर आई हैं तो वह इस घृणा को खुले तौर पर प्रकट करने से घबरा गया और अपनी पूरी शक्ति लगा कर कहा:—

"मदाँ भाभी! कहिये, आप के पानों की चोरी आज कल कैसी हो रही है ?"

और वह हंस कर बोली:—

"जब कोई वस्तु माँगे ही मिल जाए तो भैय्या, उसे चुराएगा कौन ?"

अमल ने भी ठट्ठा किया

"नहीं, भाभी ? चोरी की वस्तु में जो आनन्द मिलता है वह माँगी हुई वस्तु में कहाँ ?"

मदाँकनी यह सुनकर अनायास ही हँस पड़ी और विषय परिवर्तन के लिए बोली:—

"अमल भाई! कुछ पढ़ रहे थे तुम। आखिर मेरी शकल में ऐसी क्या बुराई है कि इधर तुम ने देखा और उधर चुप हुए। मुझे भी सुनाओ। हूं तो मूर्ख ही लेकिन खैर! रुचि तो है।"

मंदाकनी ने आज से पूर्व इस रुचि का प्रदर्शन कभी नहीं किया था और न ही चारु चाहती थी कि अमल के कोमल और सूक्ष्म भाव जिनको काव्य के शब्दों ने अनंत-गान बना दिया हो, मंदाकनी की सी नासमझ स्त्री के कानों में पड़कर अपमानित हों। परन्तु अमल एक लेखक का हृदय रखता था। उसे यह गर्व था उसकी कल्पना पाषाण के हृदय में भी उतर सकती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। इस लिए वह चाहता था कि मंदाकनी उसके लेखोंसे अवश्य लाभ उठाये।

इसके अतिरिक्त अमल को मंदा के जीवन की एक विचित्र घटना स्मरण थी--उसे भली भाँति याद था कि एक दिन चारु और मंदाकनी ताश खेलने में व्यस्त थीं कि वह भी आ गया। उस दिन इसने एक मनोहर कहानी लिखी थी और चाहता था कि जैसे भी सम्भव हो और जितना शीघ्र सम्भव हो सके वह अपना लेख चारु को सुनाए और प्रशंसा सुने। परन्तु खेल समाप्त ही नहीं होता था। इधर अमल लेख सुनाने के लिए व्याकुल हो रहा था। उसे ताश के पटा-पट गिरते हुए पत्तों पर ऐसा क्रोध आ रहा था कि जी चाहता था, उन्हें फाड़ कर फेंक दे। और अंत में जब चारु को अवकाश मिलने कि कोई आशा दिखाई न दी तो उसे बड़ा क्रोध आया। वह भन्ना कर उठा और बोला:—

"अच्छा, भाभी जी! हम जाते हैं। अखिल बाबू को सुनाएंगे कहानी।"

चारु ने उसकी धोती का पल्लू पकड़ लिया और बोली

"ए, जरा ठहरो-----आछी!"

और शीघ्रता से बाजी हार गई।

मंदाकनी को जब पता लगा कि अब ताश नहीं अपितु पढ़ने पढ़ाने की बातें होने लगीं तो झट से एक लम्बी हवाई लेकर बोली:—

"लो भई, अब तुम पढ़ने पढ़ाने लगे हो तो मैं चली। मेरी समझ में तो कुछ आता नहीं और फिर मुझे नींद भी तो आ रही है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह कहा और खेल के इस प्रकार एकाएकी समाप्त होने पर भन्नाती हुई चली गई थी।

वही मंदाकनी आज अमल से लेख सुनाने को कह रही थी और लेख भी कोई साधारण नहीं था अपितु "कमला कांत का कार्यालय" पर एक आलोचना थी। उच्च साहित्यक—हास्यपूर्ण और गहरा कटाक्ष लिए हुए। इस पर भी यदि चारु न बिगड़ती तो क्या होता। इसलिए जब उसने मंदाकनी के मुख से सुना, तो तुरन्त बोल उठीः—"अमल ने कमला कांत के कार्यालय पर आलोचना लिखी है—वह भी—"

"अरे भई हूं तो मैं मूर्ख, मानती हूँ। परन्तु कुछ न कुछ तो समझ में आ ही जाएगा।"

और अमल ने प्रशंसा के लोभ में फूल कर कहा:—"अरे वाह मंदा भाभी! आप भी आलोचना सुनेंगी। सौभाग्य है हमारा।"

यह कहा और पत्रा उलट दिया। यह ठीक है कि वह पृष्ठ पढ़ चुका था परन्तु आरम्भ ही के कुछ वाक्य मार्मिक थे और अमल को इन वाक्यों पर गर्व था। इसलिए एक नये प्रशंसक के सामने वह अपने इस प्रयास को प्रस्तुत करने से न रुक सका जहाँ उसकी कल्पना पराकाष्ठा पर थी।

परन्तु अभी एक वाक्य पूरा नहीं हुआ था कि चारु ने टोक दिया।

"देवर भैय्या! तुमने कहा था न बंगाली पुस्तकालय से पत्रिकाएं ला दोगे हमें?"

"आज का वचन तो नहीं दिया था।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अहे ! आज के लिए नहीं कहा था ?—इतनी जल्दी भूल गए ?"

बस, बस, अधिक बातें क्यों बनाते हो। स्पष्ट कह दो कि नहीं लाओगे। अच्छा, तो तुम पढ़ो—मैं जाती हूँ। हरीश को भेजकर मंगवा लूंगी पत्रिकाएं—सब काम तुम थोड़ी करते हो ?"

यह कहा और चारु उठकर चली गई। अमल अवाक् रह गया। क्या आपत्ति थी यह। मंदाकनी के मनोरंजन के लिए उसे एक हार्दिक मित्र को रुष्ट करना पड़ता था। और वह यह नहीं कर सकता था। मंदा को भी यह बात विषाक्त शर की भांति लगी। वह अन्दर ही अन्दर तिलमिला कर रह गई। जब चारु के चले जाने पर अमल ने भी जाने के लिए हाथ पाँव हिलाए, तो मंदाकनी ने मुस्का कर कहा, "जाओ भैय्या—उनकी बात रह जाएगी। यदि तुमने कहीं मुझे सुना दिया तो कठिनाई पैदा हो जाएगी।"

इस अज्ञात बाण ने अमल को वहीं घायल कर दिया। अब वह उठकर जाए तो कहाँ और हिले तो कैसे ? इसलिए बोला:—

"वाह, आपत्ति की इसमें भला क्या बात है। आप सुनिए, हम सुनाएंगे आप को।"

परन्तु मंदाकनी ने अपने दोनों हाथों से कागज़ को छुपा दिया और बोली, "नहीं भाई—मैं न सुनूंगी।"

अमल ने विस्मय-पूर्ण नेत्रों से मंदाकनी की ओर देखा। स्पष्ट दिखाई दे रहा था—कि मंदाकनी आँसू पीकर रह गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रिय प्राण जय हिन्द। ऐसी और है उषा जी को भी अभिनन्दन करना। आपका लिखा हुआ है :- राज

: ५ :

चारु की सहेलियां थीं और वह सप्ताह में एक आध बार अवश्य सहभोज में सम्मिलित हुआ करती थीं—परन्तु मंदाकनी का कौन था। वह घर के लिए थी और घर उसके लिए। आज भी यथापूर्व चारु सहभोज पर गई थी और मंदाकनी घर बैठी बालों में कंघी कर रही थी।

अमल हंसता हुआ आया और सीधा मंदाकनी के कमरे में आ गया।

मंदा ने हंसते हुए कहा:—

"आहा अमल बाबू हैं! विराजिये, सरकार, विराजिए। लेकिन उई! मैं भूली, आप तो किसी और के लिए आए होंगे। हाय, हाय, देवता भी कितने कठोर हृदय होते हैं। अमल भैय्या! आए थे तुम किस के लिए और चिपट गया कौन!"

"अरे भाभी!" अमल ने झेंप छिपाने के लिए मुस्कान का पर्दा तान लिया, "पशु को तो चारे से काम है। वह मालिक दे या कोई चोर! उसको तो पेट भरने से लागत है। यह कहकर वह वहीं बैठ गया और कुछ क्षणों के पश्चात् बोला:—

"मंदा भाभी! कुछ कहिए तो, आप यहाँ की ही कोई कथा सुना दीजिए"

बात यह थी कि अमल को कहानियों के लिए सदा प्लाट की आवश्यकता रहा करती थी। यही कारण था कि वह प्रत्येक मनोरंजक अथवा अरंजक व्यक्ति की बात-चीत बड़े ध्यान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से सुना करता था। इसके अतिरिक्त मंदाकनी एक रहस्य बनी हुई थी—इतना गम्भीर कि अमल की काव्य कल्पनाएं प्रयत्न करके थक गईं परन्तु उसका भेद न पा सकीं। आज जो उसे अवसर मिला तो यह प्रश्न सहसा उसके होठों से लुढ़क गया।

उधर मंदाकनी भी अपनी राम-कथा कहने को कम उत्सुक न थी। उसका घरबार, उसका विस्मृत सा बाल-जीवन, फिर विवाह, यह सब बातें उसके सीने में दबी हुई थीं। और आज तक कोई ऐसा सहानुभूति रखने वाला नहीं मिला था जिसने उसके जीवन के बारे में पूछा हो। आज अमल ने प्रथम बार जंग खाए तार पर चोट लगाई और यह तार एक व्याकुल झनझनाहट के साथ काँप उठा—मंदाकनी की आँखों में आँसू भर आए और वह पके हुए फोड़े की भाति बह निकली। कथा जो प्रारम्भ हुई तो समाप्त न होती थी। मंदाकनी को इस लम्बाई का अनुमान था। इसलिए वह कहते २ रुक जाती और कहती :—"दु:ख की व्यथा लम्बी होती है, अमल भैय्या, इसका ठिकाना नहीं होता।"

और अमल जो वास्तव में उसके जीवन में रस ले रहा था, कहता :—

नहीं, नहीं भाभी ! कहती जाओ मुझे तो ऐसा अनुभव हो रहा है कि मैं—इसकी लहरों में डूबता जा रहा हूँ।" और वस्तुस्थिति भी यही थी।

मंदाकनी ने एक घटना सुनाई। जिसे दुखद कथा में यह हास्य-पूर्ण वाक्य कहकर इसकी भयानकता को कम करने का प्रयत्न किया। घटना यह थी कि मंदा के बाप का एक गुमाश्ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। प्रकृति ने उसे संसार को एक ही आंख से देखने के लिए भेजा था। दूसरी आंख देना उचित न समझा था। गुमाश्ता महोदय अत्यन्त झगड़ालू और हठी व्यक्ति थे। इस पर ऐसे को तैसा मिला। उनकी पत्नी भी ऐसी आई जिसके मुंह में हाथ भर लम्बी जिह्वा थी। जिह्वा क्या छुरी समझिये। इन पति-पत्नी में प्रतिदिन झगड़े हुआ करते थे। इनके कारण गुमाश्ता महोदय को अनशन करना पड़ता था। एक दिन इन दोनों में ठस्से की लड़ाई हुई और गुमाश्ते ने खाना पीना छोड़ दिया। दो एक दिन तो इसी प्रकार बीत गए। परन्तु जब भूख की चिंगारी ने दावानल का रूप लिया और उसके हृदय को चीरने लगी तो यह तंग आ गए। छिप-छिपाकर भागे हुए मंदा के पास आए। इससे कुछ खाने को लिया और आनन्द से बैठकर खाने लगे। भाग्य अत्याचारी तो होता ही है। आग लगाकर तमाशा देखता है। लाला खाना खा रहे थे कि उनकी धर्म-पत्नी आ धमकी। बस फिर क्या था वह नोक-झोंक हुई कि युग ने देखा और संसार हंसा।

इस घटना का वर्णन हो रहा था स्त्री के मुख से, और कान सुन रहे थे एक पुरुष के जो कहानियों की खोज में हो। अमल इस घटना की रोचकता में खो गया। एकाएक चारु कमरे में प्रविष्ट हुई। और —विचार प्रवाह बिखर गया। मंदाकनी मानो सन्न हो गई जैसे किसी ने चोरी करते पकड़ लिया हो। अमल को लगा कि वह सोते में झंझोड़ दिया गया है। परन्तु अमल फिर भी पुरुष था। उसने झट अपने आप को सम्भाला और बोला :—

"इतनी जल्दी आ गईं भाभी जी!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारु ने क्रोध भरी दृष्टि से अमल की ओर देखा और कटाक्ष पूर्ण शब्द उसके हृदय में चुभो दिए, बोली "जी हाँ! मुझे दुख है—मैं जाती हूँ।"

यह कहा और जाने को मुड़ी।

अमल ने कहा, "अच्छा ही हुआ जो आप आ गईं। मैं आपकी बाट जोह रहा था। आज उस महासाहित्यक मन्मथ दत्त की एक अपूर्व और नवीनतम कृति विशेषतया आपको सुनाने को लाया हूं। मुझे आशा है, आप इससे बहुत खुश होंगी।"

"इस समय रहने दो।" चारु ने नाक चढ़ाकर कहा, "मुझे काम है।"

"उफ्फोह! ऐसा भी क्या काम होगा कि उस पर एक दार्शनिक की शिक्षाओं को बलिदान कर दिया जाए।" अमल ने हंसकर कहा, "काम मुझे बता दीजिये यह सेवक आपके सामने है।"

चारु जानती थी कि अमल मन्मथ की पुस्तक खरीद कर लाएगा। उसे सुनाएगा और वह उसे तंग करने के लिए उसकी खूब प्रशंसा करेगी। कटाक्ष होंगे—अपितु वाद प्रतिवाद होगा और समय आनन्द पूर्वक कट जाएगा। इसी कारण वह भोज समाप्त होने से पूर्व ही बीमारी का बहाना करके चली आई थी।

परन्तु यहाँ तो बात ही और थी। मंदाकनी की निर्लज्जता अपनी पराकाष्ठा पर थी। नवयुवक के साथ इस प्रकार बातें करना और फिर बात २ पर दांत निकालना—अरे राम! राम! कलियुग जो हुआ। अगर लोग देखें तो क्या कहें। इसमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मंदाकनी का तो कोई ऐसा अपमान नहीं था। नाक कटेगी तो चारु की। अपमान होगा तो भूपति बाबू का। उसकी जाने जूती। लेकिन—इसके बावजूद चारु स्पष्ट शब्दों में मंदाकनी के किसी कार्य पर आक्षेप भी तो नहीं कर सकती थी। यदि उसपर कटाक्ष किया तो वह स्वयं अमल के साथ घण्टो अकेली रहा करती है। तब क्या होगा ? —"कौन रोकेगा उसकी जिह्वा ?"

परन्तु अमल और चारु का जो सम्बन्ध बन गया था वह मंदा और अमल के बीच प्रलय-काल तक नहीं हो सकता था। अमल चारु को पढ़ाता था—एक बात ! चारु को साहित्य से पर्याप्त परिचय हो गया था। अतः वह अमल को प्रोत्साहन दिया करती थी—दूसरी बात--और मंदाकनी—वह बेचारी क्या जाने साहित्य और उसे क्या पता कि ज्ञान किसे कहते हैं। वह बेल की भांति सीधी-सादी मूर्ख सी स्त्री। उसका और चारु का भला मुकाबिला ही क्या ? यदि मंदाकनी को साहित्य से लगाव नहीं था, यदि उसका काव्य और ज्ञान से दूर का भी सम्बन्ध नहीं था तो क्या कारण था कि वह अकारण अमल की ओर आकर्षित हुई जाती है। अमल एक सरल नवयुयक—क्या अमल का यौवन मंदा को अपनी ओर खेंच रहा है—उफ ईश्वर—!

अमल को बचाना—एक स्त्री की पेचदार चालों से उसे सुरक्षित रखना चारु का कर्तव्य था। और वह इस कर्तव्य को पूरा करेगी, परन्तु किस प्रकार—क्यों कर—यदि अमल को समझाने-बुझाने से उसका मन किसी गलत दिशा में लग गया तब--तब क्या होगा मेरे पूज्य ? और भूपति दादा—उन्हें तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संसार में अखबार के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही नहीं देता। मानो अखबार ही उनका ओढ़ना-बिछोना और खाना-पीना है। वह सर्वथा निश्चिन्त हैं। मंदाकनी पर उन्हें पूरा विश्वास है। लेकिन मंदाकनी उनके भरोसे और विश्वास का कितना अनुचित लाभ उठा रही है? कितना गलत प्रयोग कर रही है। उनके भोलेपन को? लेकिन चारु तो आँखों से देखकर यह मक्खी न निगल सकती थी। वह कैसे सहन कर सकेगी कि उसका भोला देवर मंदाकनी की चालों में फंसकर इहलोक और परलोक बर्बाद कर बैठे?

इससे पूर्व अमल के हृदय में मल नाम को भी नहीं था। वह भोला-भाला व्यक्ति था। वह संसार से अजान था। यह चारु ही की भूल थी। उसी ने उसे साहित्य से परिचित कराया। उसे लिखने का स्वभाव डाला। अब उसके सहस्रों प्रशंसक हैं। लोग उसके लेख पढ़ते हैं, उसकी भावनाओं की गहराइयों में एक अमर सत्य पाते हैं। और झूम-झूम जाते हैं। अब उसे प्रशंसा सुनने की चाट लग गई है। वह स्रोत जो पहले बंद था, सभी बांध तोड़-फोड़कर फूट निकला है। और उसकी सहस्रों शाखाएं अठखेलियां कर रही हैं। समस्त उद्यान में! वह अब कहां-कहाँ बंद करने का प्रयत्न करेगी—किस-किस का मुंह बंद करेगी?

चारु को अब विश्वास हो गया था कि अमल उसके हाथों से निकल चुका है। अब अमल पर चारु का कोई बल न था। धनुष से बाण निकल चुका था। वापिस आए भी तो कैसे? उसने स्वयं ही उसे इस मार्ग पर लगाया था। जिसका परिणाम है फैलाव—अनन्त, अपार विस्तार—ऐसा विश्व-व्यापी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फैलाव जिसमें चारु एक असहाय कण-मात्र थी। जो इसकी मान और प्रतिष्ठा की बाढ़ में बह रही थी निराश्रय, निःसहाय—हाथ-पांव हिलाने का इसमें साहस न था। अमल एक लेखक था। और चारु उसकी प्रशंसक—इससे अधिक और कुछ नहीं।

परन्तु सरल बुद्धि अमल और मायावती मंदाकनी-विषैली नागन ने शिकार पर अपनी आँखों का जादू कर दिया था।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ६ :

असाढ़ के बादल झूमकर उठे और क्षणभर में समस्त आकाश पर छा गए। सारे कमरे में एक हल्का सा शीतल अन्धियारा फैला हुआ था। और चारु खिड़की के पास अकेली बैठी थी।

अमल दबे पाँव—धीरे २ कमरे में आया और चुपके से चारु की पीठ की ओर खड़ा हो गया। चारु को पता भी न लगा कि वह कब आया। चारु धीमे-धीमे प्रकाश में लिख रही थी। वह अपने विचार में मग्न थी। अमल देर तक खड़ा उसका लेख पढ़ता रहा। चारु की खाट पर अमल के दो-चार प्रकाशित लेख पड़े थे। और चारु थोड़े २ समय के पश्चात् उन्हें उठाकर पढ़ लेती थी मानों उन्हीं को सामने रखकर वह हृदय की भाप निकाल रही है।

कुछ क्षण के मौन के पश्चात् अमल चुप न रह सका और बोला:—

तो फिर यह कहने से क्या लाभ कि आप को लिखना नहीं आता? आप तो खूब लिखती हैं"।

चारु चौंक पड़ी और घूमकर अमल की ओर देखने लगी।

"यह चोरी कब से सीखी तुमने? बहुत बुरी बात है"।

"क्या बुरी बात है"।

"यही छुप छुपकर दूसरों की बातें पढ़ना"।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो आप छुप छुपकर लिखती क्यों हैं ? अपने गुणों को प्रकट होने का अवसर क्यों नहीं देतीं" ?

चारु ने हाथ बढ़ाया ताकि लिखा हुआ कागज़ रजिस्टर से फाड़कर फेंक दे। परन्तु अमल ने लपक कर रजिस्टर पकड़ लिया। चारु झुंझला कर बोली:—

"यदि तुमने यह पढ़ लिया तो मैं कभी न बोलूंगी"।

"अगर आपने पढ़ने से रोका मुझे तो मैं जन्म-जन्म के लिए अपना मुख सी लूंगा"।

"नहीं भाई, अमल ! तुम्हें हमारे सिर की सौगन्ध ! जो इसे पढ़ो हमारा रक्त पियो"।

अब तो अमल में इतना साहस न था कि वह इतनी बड़ी शपथ के बावजूद इन पृष्ठों पर दृष्टि-पात भी करे। इसलिए ठण्डी सांस भरकर रह गया।

परन्तु चारु का हृदय तो यह सब भेद कह डालने को फटा पड़ता था। वह चाहती थी कि जिस प्रकार भी हो और जितना शीघ्र संभव हो सके, अमल उसका लेख पढ़े। उसे विश्वास था कि अमल उसे पसंद करेगा और खूब प्रशंसा करेगा। परन्तु जब अमल ने पढ़ने के लिए रजिस्टर छीना तो चारु के हाथ पैर फूल गए। उसकी धमनियों में रक्त जमकर रह गया। अमल के से प्रतिष्ठित साहित्यकार के सामने वह बेचारी थी ही किस बाग़ की मूली। और सूर्य को दीपक कौन मूर्ख दिखाता है ? इसके अतिरिक्त एक रहस्यमयी लज्जा भी, विचित्र द्विमुखा भाव था जो इसकी नस-नस में बरफ़ बनकर रच गया। और वह अमल की आँखों से छुप जाने के लिए विह्वल हो गई और फिर—कुछ क्षण पश्चात् वह एकाएक उठी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"पान बना लाऊं" वह बोली और झपटकर कमरे से बाहिर निकल गई।

चारु की अनुपस्थिति में लेख पढ़ लेने में कोई बुराई न थी और न ही इससे उस बलवान् सौगन्ध पर कोई प्रभाव पड़ता था। इसलिए अमल ने आरम्भ से अन्त तक अत्यन्त शान्ति से वह लेख पढ़ा। लेख वास्तव में ही अच्छा था। इस लिए वह दौड़ा २ भाभी के पास पहुंचा और बोला:—

"आप तो खूब लिखती हैं। बहुत अच्छा लेख है"। चारु पान देना भूल गई। हर्षोन्मत्त होकर बोली:—

"अधिक न बनाओ, अमल भैय्या! हमें रजिस्टर दे दो हमारा।"

"नहीं भाभी! इस समय तो न दूंगा। रजिस्टर नकल कर लूं। फिर दे दूंगा। लेख का पत्रिका में जाना अत्यावश्यक है।"

"ऐ वाह! पत्रिका में भला क्या दोगे यह बकवाद! यह न होने दूंगी मैं। लोगों से भी हंसी उड़वाओगे मेरी"।

चारु ने इधर "न, न" का ऊधम मचाया, उधर अमल ने हठ की शपथ ली और उसे विश्वास दिला दिया कि लेख वास्तव में ही इस योग्य है कि उसे किसी उच्च स्तर के साहित्यक पर्चे में प्रकाशित करा दिया जाए।

अन्ततः चारु तंग आगई और थककर बोली:—

"तुम तो शुरू से ही हठी हो। किसी की मानोगे थोड़ी। जिस बात के पीछे लगे उसे सिरे तक पहुंचा छोड़ा"।

अमल बोला:—

"दादा को एक बार दिखाना होगा"।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हाय राम ! चारु ने छाती पर हाथ मार कर कहा, "यह गजब न कर देना कहीं। अगर तुमने उनसे मेरे लेख के बारे में कुछ भी कहा तो मैं जीवन भर एक अक्षर न लिख पाऊंगी"।

"आप तो बच्चों की सी बातें करती हैं, भाभी। दादा मुख से चाहे कुछ ही कहें। मन में अवश्य चाहते हैं कि आप कुछ लिखना पढ़ना सीख लें"।

चारु ने लेख लिखने के लिए जब लेखनी उठाई थी तो यह निश्चय कर लिया था कि अमल की दृष्टि से छुपाकर रखेगी। उसके पश्चात् अकस्मात् उसे दिखाकर चकित कर देगी। इससे यह सिद्ध हो जाएगा कि उसमें और मंदाकनी में भूमि और आकाश जितना अंतर है। अमल को विश्वास हो जाएगा कि चारु नदी की भांति गतिमय है और मंदा पाषाण की तरह अचल और गतिविहीन। इस अंतर से स्वाभावतः ही इसके मन में मंदा के प्रति घृणा का भाव जागृत होगा और वह उसके माया जाल को काटकर फेंक देगा। इसी प्रयत्न में इसने कई रातें और कई दिन गंवाए। पृष्ठों पर पृष्ठ काले किए और फाड़ कर फेंक दिए। उसे विस्मय था कि उसका प्रत्येक प्रयास अमल के रंग में रंगा हुआ दिखाई पड़ता है। अमल की शैली का प्रभाव इस पर इतना अधिक हुआ था और उसकी रचनाएं उसे इस प्रकार स्मरण हो गई थीं कि जब वह लिखने बैठती तो वाक्य पर वाक्य और पैरे पर पैरा वैसे ही लिख जाती। वही शब्द, वही विचार, वही वाक्यरचना और वही लेखन शैली। बाल भर भी अंतर न होता। इसलिए वह सोच लिया करती कि यदि उसने अपने लेख अमल को दिखाए तो वह मुख से तो कुछ नहीं कहेगा, तो भी मन ही मन अवश्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हंसेगा और कहेगा कि मेरी रचना, और उसे चुरा कर मुझ ही से प्रशंसा करवाई जाती है। इसलिए वह इसके छोटे २ टुकड़े कर तालाब में फेंक दिया करती ताकि इसका कोई टुकड़ा भी अमल के हाथ न लगे।

पहले 'सावन के बादल' शीर्षक से एक सुन्दर लेख लिख था। उसका विचार था कि वह उसमें बड़ी २ काव्यमयी और रस-पूर्ण कल्पनाएं संजो सकेगी। और वह थी भी सच्ची। सावन के उमड़ते हुए बादल वास्तव में ही बड़े आनन्द दायक और विचार प्रोत्साहक होते हैं। लेख अच्छा था। लेकिन एक बड़ा दोष था कि इसमें और अमल के 'असाढ़ के चांद' में रत्ती भर भी अंतर नहीं था। अमल ने लिखा था "चंदा मामू, बादलों की ओट में इस प्रकार चोरी २ क्यों घूम रहे हैं" और चारु ने लिखा था "सखी कदम्बनी! कहां से इस प्रकार आती हो और आकाश की नीली छत को अपने आंचल से ढांप लेती हो"। यह सर्वथा अमल ही का भाव और उसकी नकल थी। और चारु चाहती थी कि जिस प्रकार भी सम्भव हो सके वह इसके सीमित घेरे में से निकलकर अपने लिए एक नया मार्ग ढूंढे और उसमें अपनी कल्पना की विशेषता प्रकट करे।

जो खोजता है वह पा लेता है। चारु यत्न करती रही और अंत में उसके प्रयत्नों को सफलता मिली और वह एक नवीन ढंग का लेख लिखने में सफल हो गई। लेख का शीर्षक था "सन्नाटे में"

अमल ऐसा काव्यमय शीर्षक पढ़कर फड़क उठा। सन्नाटा—मौन—जिसमें रोमाँच और काव्य की दबी घुटी आवाजें सुनाई दें, वास्तव में कितना रोमाँच-पूर्ण और प्रलयकारी हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह वही व्यक्ति जान सकता है जिसने अपने विचार को लेखनी-बद्ध करने के लिए कड़ा परिश्रम किया हो। अमल ने यह शीर्षक पढ़ा और हृदय पकड़ कर बैठ गया। चारु ने ऐसा शीर्षक कहाँ से ढूंढा है और यह दूर की कैसी सभी, उसकी समझ में नहीं आता था।

और फिर इस सन्नाटे के साथ जिस भाव को शब्दों का रूप दिया जा रहा था वह अपूर्व था। गाँव की निर्धनता ग्रस्त आबादी छोटे २ घरौंदे, छप्पर और झोंपड़ियाँ। इन घरौन्दों, छप्परों और झोपड़ियों में रेंगती हुई, हिन-हिनाती हुई और उठती हुई गरीबी, भूख और मौत—यह सब पृष्ठ-भूमि थी। और इस पृष्ठ-भूमि पर एक पुराना, टूटा फूटा मंदिर जिसकी टूटी हुई दीवारें मुंह फाड़ २ कर लपकते हुए भूतों के जबड़े थे, और ऐसा भान होता था कि इसके वायु मण्डल में पवित्र भजनों की वह आत्माएं तैर रही हैं जो आज से लग भग एक शताब्दी पूर्व इसकी दीवारों में गूंजा करते थे—और यह काली माता का मंदिर था—मृत्यु का मंदिर—इस मंदिर की मूक छाया में एक मूक सरोवर था जिसका पानी वर्षानुवर्ष तक अचल स्थिर रहने के कारण हरे रंग का और दुर्गन्धि पूर्ण हो गया था। यहाँ—इस भयानक मौन और भय प्रद सन्नाटे में एक छोटी सी लड़की—स्वयं चारु—अपनी कुछ सहेलियों के साथ आँख मिचौनी खेला करती थी और इस आँख मिचोली के आस पास एक ऐसी सनसनी पूर्ण कहानी बन गई थी कि अमल अवाक् रह गया था।

एक तो इसका शीर्षक और फिर आरम्भ के कुछ फड़कते हुए वाक्य ऐसे थे कि अमल के सीने में उतर गए और उसने नश्चय कर लिया कि चाहे कुछ ही हो, इस लेख का प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होना आवश्यक है। यह ठीक है कि अंतिम वाक्यों में नौसिखिया पन की त्रुटियाँ प्रकट रूप से दिखाई देती थीं। लेकिन पहला लेख था और लेखक को प्रोत्साहन देना प्रत्येक साहित्य प्रेमी का कर्तव्य है। इस लिए अमल चाहता था कि शीघ्रातिशीघ्र इस लेख को प्रकाशित करवाया जाए।

जब अमल ने लेख छीन लिया तो चारु विवश हो कर बोली:—

"अमल बाबू! एक बात कहूँ जो मानो ?

"हां, हाँ, भाभी ! भला आप कहें और मैं न मानूं, यह कौनसी पुस्तक में लिखा है" ?

"हम दोनों मिलकर एक पत्रिका निकाल लें"।

"ऊंह ! हवाई घोड़े दौड़ाया करती हैं भाभी हमारी भी ! धन चाहिए सरकार, पत्र के लिए"।

"तुम पहले सुन लिया करो, अमल ! पीछे कटाक्ष किया करो। हमारी पत्रिका के लिए धन की आवश्यकता नहीं। इसके तो छपाने की आवश्यकता ही नहीं। रुपया कहाँ व्यय होगा ? हम स्वयं ही अपने हाथ से लिख लिया करेंगे। इसमें हमारे अतिरिक्त और कोई नहीं लिखेगा और इस की केवल दो प्रतियाँ प्रकाशित हुआ करेंगी, एक हमारे लिए, एक तुम्हारे लिए। किसी अन्यको पढ़ने की भी आज्ञा नहीं"।

यदि आज से कुछ दिन पूर्व यह प्रस्ताव किया जाता तो अमल हर्ष से पागलों की भाँति उछल पड़ता, परन्तु अब इसका कल्पना-क्षेत्र विस्तृत हो चुका था। उसकी आकांक्षाएं बहुत बढ़ी हुई थीं। और जब तक उसके लेख की सभी बङ्गाली लोग प्रशंसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न करते, उसे चैन न पड़ता। तथापि चारु का मन भी रखना था, बोला:—

"योजना तो अच्छी है। कर डालें"।

चारु ने एक और दाव फेंका:—

"लेकिन एक शर्त बहुत कड़ी है। मेरी पत्रिका के अतिरिक्त तुम्हें कहीं और नहीं लिखना होगा, यह शपथ लेनी पड़ेगी"।

"परन्तु इस प्रकार तो भाभी इन पत्रिकाओं के सम्पादक प्रलय ला देंगे"।

"मेरी पत्रिका ही ऐसी निकम्मी है कि जिसका सम्पादक प्रलय नहीं ला सकेगा। मैं स्वयं प्रलय मचा दूंगी।"

इसके पश्चात् सम्पादक लेखक और पाठकों की एक भव्य और अपूर्व सभा हुई। कभी चारु प्रधान बनती, कभी अमल। कभी अमल मन्त्री पद सम्भालता और कभी चारु। कभी चारु वक्ता बनती और अमल सुनता और कभी अमल अपनी वाक्-प्रवीणता का परिचय देता और चारु ध्यान से प्रत्येक बात सुनती। अंत में बहुत वाद विवाद के पश्चात् यह निश्चय हुआ कि इस पर्चे का नाम 'अमला' रखा जाए। सब ने स्वीकार किया और पर्चे की घोषणा कर दी गई।

अब चारु का सब दुख और कष्ट एक दम मिट गया। वह इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए मूर्त्त सतर्कता बन गई। उसे विश्वास था कि यह एक ऐसा दृढ़ दुर्ग है जिसमें मंदाकनी अपनी माया के सहारे प्रविष्ट नहीं हो सकती— और—हां बाहिर के लोगों का भी रास्ता बन्द हो जाएगा। वह भी अमल तक न पहुंच पाएंगे।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ७ :

पुष्प जब खिलता है तो उसकी सुगन्धि से उद्यान का कोना-कोना सुगन्धित हो उठता है। और माली उसे लाख पर्दों में भी छुपाकर क्यों न रखे, सुगन्धि ही उसकी बात फैला देती है। चारु के विचार मस्तिष्क से काग़ज़ पर आगए। बन्द कली की पत्तियां मुस्कुरा दीं और पुष्प बन गया। चारु किसी प्रकार भी न चाहती थी कि उसका यह गुण अमल बाबू के अतिरिक्त किसी और पर प्रकट हो जाए। परन्तु एक दिन भूपति बाबू ने अपने स्वभाव के विपरीत मुस्काते हुए आकर कहा:—

"चारु तुम इतना अच्छा लिखने लगोगी। इससे पूर्व तो यह बात हमारे मस्तिष्क में भी न आई थी"।

चारु चौंक उठी। उसका मुख लाल हो गया। और वह घबराई हुई सी आवाज़ में बोली:—

"मैं लिखती हूं, आप से किसने कहा? मुझे तो लेखनी थामनी भी नहीं आती"।

"बस, रहने दो"! भूपति बोले, "अब हमें बनाना कुछ कठिन है। चोर रंगे हाथों पकड़ लिया गया है, सरकार! स्पष्ट प्रमाण पास है"।

यह कहते हुए उन्होंने जेब से एक मासिक पत्रिका निकाल कर खोली और चारु का वह लेख जो उसने अपनी विशेष पत्रिका 'अमला' के लिए रखा था, इसका मुंह चिढ़ाता हुआ दिखाई दिया। वह कोष जिसे औरों की दृष्टि से छुपाने का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रबन्ध चारु विशेष तौर पर किया करती थी, आज घर के भेदी के हाथों लंका की भांति लुट गया। उसे ऐसा भान होने लगा कि वह पंछी जिसे उसने बड़े प्यार से पाल पोसकर बड़ा किया था, पिंजरे की तीलियां तोड़कर उड़ गया। परन्तु भूपति को उसके विचारों और उसकी भावनाओं का कैसे पता चलता। वह तो उसे प्रसन्न करना चाहते थे। इसलिए 'विश्व बन्धु' नामक मासिक निकालकर उसे दिखाते हुए कहा:--

"और यह देखो !--तुम्हारी प्रशंसा हो रही है"।

परन्तु यही विचार कि उसका आकांक्षागार आज खुल्लम-खुल्ला अपमानित हो रहा है, चारु को बार २ सता रहा था। वह बिफरी हुई सिंहनी की भांति बन गई थी जिसकी गोदी से बच्चा छीन लिया गया हो। इसलिए उसने माथे पर बल डालकर वह मासिक भूपति के हाथों से छीन लिया और उसे दूर फेंक कर बोली:—

"आप ही पढ़िए, मैं तो उसे चूल्हे में भी नहीं डालती"!

भूपति मुस्कराये। उनकी समझ में यही बात आई कि चारु अपनी प्रशंसा सुनकर लजा रही है। प्रशंसा सुनने का स्वभाव जो नहीं है। इसलिए हंसते हुए पत्रिका की ओर बढ़े और उसे उठाकर पुनः अपने सामने ले आए।

"तुम देखो तो सही—यह लेख 'आधुनिक काल में बङ्गाली साहित्य'—मैं कहता हूँ लिखने वाले ने कमाल कर दिया है—और तुम्हारी तो इतनी प्रशंसा की है कि बस सीमा ही नहीं रही—लो देखो"।

पर्चा बलात् उसे दिखाया जा रहा था। उसने पथराई हुई सी आँखों से श्वास रोक कर लेख पढ़ा। समालोचक ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बङ्गाली भाषा के नए साहित्यकारों की जी भर के फब्तियां उड़ाई थीं और अमल बाबू और मन्मथदत्त की तो धज्जियां उड़ा दी थीं। परन्तु इस के साथ ही साथ श्रीमति चारु बाला को आकाश पर पहुंचा दिया था। लिखा था कि यह हैं तो साहित्य क्षेत्र में नयी २ लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी कल्पना का बटोही साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में अथक दौड़ता चला जाता है। सुसम्बद्ध वर्णन, प्रिय भाषा, रोचक और अछूते रूपक, रसपूर्ण शैली एवं अर्थ पूर्णता के विचार से यह नवीन सवार बड़े २ घाग वीरों के कान काटता हुआ दिखाई देता है। समालोचक ने इस बात पर विशेष बल दिया था कि नवीन लेखकों को चारु बाला की लेखन शैली से कुछ सीखना चाहिए और उनका अनुसरण करना चाहिए। अन्यथा उनका यह साहित्यक खिलवाड़ शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। और निकट भविष्य में उन्हें उस गढ़े में धकेल देगा जहाँ से वह प्रलय काल तक न निकल सकेंगे।

भूपति ने हंस कर कहा:—

"अब बोलो, उस्ताद तुम हो या अमल। अमल तो तुम्हारे सामने, सत्य कहता हूँ, दूध पीता बच्चा है दूध पीता बच्चा"।

अपनी प्रशंसा सुन कर कौन प्रसन्न नहीं होता और विशेष कर जब एक नवयुवक कम्पित मन व मस्तिक के साथ साहित्य के उद्यान में पदार्पण करता है, उस समय उसके कान और आँख अपने चारों ओर प्रशंसा और गुण-गान का नृत्य देखना चाहते हैं। चारु भी इससे अलग न थी। परन्तु वह यह सुनना किसी प्रकार भी सहन नहीं कर सकती थी कि उसके कारण अमल बाबू के साहित्यक गुणों पर पर्दा डाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाए। इस लिए जब अमल और चारु की प्रतियोगिता हुई और चारु अमल को नीचा दिखाने में सफल हो गई तो उसका युवा हृदय एक भयानक आघात अनुभव करके तड़प उठा—एक कसक—एक दर्द—नहीं, एक हृदय विदारक चुभन—और इस चुभन ने उसे विवश कर दिया कि प्रशंसा के आनंददायक प्याले को एक उन्मत्त धक्के के साथ परे हटा दे और उसने ऐसा कर भी दिया।

भूपति बाबू चारु की हार्दिक चिन्ताओं को न जाने किस रूप में देख रहे थे और मुस्करा रहे थे। चारु को इन की यह मुस्कान बाण की भांति लगी और वह चुपके से दोनों पत्रिकाएं उठाकर अपने कमरे में चली आई।

"एकान्त में पढ़ूंगी इन्हें"। यह शब्द थे जिन्होंने भूपति बाबू को संतुष्ट कर दिया और वह कर्यालय की ओर चले गए।

चारु कमरे में आ गई और बिस्तर पर गिर पड़ी। वह सोच रही थी कि अमल ने उसके साथ एक बहुत बड़ा धोखा किया है। वह ताड़ गई कि केवल उसे चकित करने लिए अमल ने उसकी अनुमति प्राप्त किए बिना उसके प्रथम साहित्यक प्रयास को साहित्य संसार मं उछाल दिया और उसके प्रोत्साहन के लिए अपने किसी मित्र से यह लेख लिखवा लिया है। परन्तु चारु तो यह न चाहती थी। वह तो अपना आनद और अपना संतोष अमल की ही आंखों में खोजती थी। वह चाहती थी कि जैसे भी हो, अमल उसी के लिए हो जाए। उसके लेख का प्रत्येक शब्द और उसके भावों की प्रत्येक गति उसीके लिए हो इसी लिए उसने 'अमला' पत्रिका प्रारम्भ की था। इसने यह कण अपने लिए एकत्र किए थे और एक छोटा सा साहित्यक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घोंसला बना लिया था जिसमें वही वह हों—दोनों—और अन्य संसार की दृष्टि उन तक न पहुंच पाए---परंतु अमल ने यह कितना बड़ा अत्याचार किया। उसने इन कणों को अपने श्वास की आन्धियों द्वारा उड़ा कर कहीं का कहीं फैंक दिया। चारु चाहती थी कि अमल बाह्य प्रशंसा और आत्म-प्रदर्शन से बच कर उसीके लिए हो जाए परन्तु अमल ने उसकी भावनाओं को अपमानित कर दिया। और न केवल निज को अपितु चारु को घसीट कर साहित्यक संसार के समक्ष खड़ा कर दिया। आह! वह नन्हा सा घोंसला, वह कुछ तीलियों का समूह जिसे वह अपना कहना चाहती थी, अज्ञान अधरों से निकले हुए प्रशंसा के शब्दों की वर्षा में कण-कण होकर रह गया था।

चारु यही विचार कर रही थी कि अमल बगल में रजिस्टर दबाए दबे पांव चलता कमरे में आया लेकिन चारु को देखकर उल्टे पांव लौट गया। "विश्व बन्धु" चारपाई पर खुला पड़ा था और चारु आत्म-विलीन बैठी थी। उसने अमल की ओर दृष्टि भर कर भी न देखा था।

वह सोच रहा था कि आज चारु भाभी तो फूली नहीं समाती मानो आये ही नहीं हैं और ऐसा होना भी तो चाहिए। बंगाली भाषा के एक उच्च स्तरके मासिक में एक प्रसिद्ध समालोचक की लेखनी से उनकी प्रशंसा निकली है। और उसके साथ ही साथ समालोचक महाशय ने हमारे भी लत्ते ले डाले हैं। अब यदि चारु भाभी आपे में रहे तो आश्चर्य है---यह विचार आते ही क्रोध ज्वाला बनकर उसके हृदय में भड़का और दावानल की भांति उसकी नस-नस में दौड़ गया। एक समालोचक ने यदि कुछ प्रशंसा करदी तो क्या आपत्ति आ गई। गुरु फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी गुरु है और शिष्य, शिष्य । चारु भाभी चाहे कितना ही अच्छा क्यों न लिखने लगे और बंगाली साहित्य के कला विशेषज्ञ उन्हें कितना ही अच्छा क्यों न समझने लगें, परन्तु कम से कम उनको अपने गुरु का तो सम्मान करना चाहिए। कम से कम यह तो देखना चाहिए था उन्हें कि इस मूर्ख समालोचक ने उनका मुकाबिला उनके गुरु से कर दिया है और फिर यह प्रमाणित करने का यत्न किया है कि साहित्य प्रतियोगिता में शिष्य गुरु से बढ़ गया।—धिक्कार है इस समालोचना पर और ऐसे समालोचक पर—लेकिन समालोचक तो प्रायः मूर्ख हुआ करते हैं। चारु भाभी ने यह सब सत्य क्यों मान लिया और क्यों न इस लेख के टुकड़े २ कर दिए।

उंह—"वह होंठों तले बड़बड़ाया,"

अच्छी लेखिका है तो हों भी। हम से क्या संम्बध है

और अमल मंदाकनी के द्वार पर पहुँच गया। उसके हाथ स्वतः ही उठ गए और उसने किवाड़ खड़खड़ा कर जान बूझ कर उच्च स्वर में कहा:—

"मंदा भाभी"

मंदा भाभी ने लपक कर किवाड़ खोल दिए और विस्मित आनन्द से बोली:—

आओ, भैय्या, आओ! धन्य हैं हमारे भाग्य! आज तो बिन बुलाए चले आए"।

"मंदा भाभी" अमल ने जोर से कहा ताकि चारु सुन ले "हम ने आज एक साथ दो लेख लिख डाले हैं। दोनों कमाल के हैं। मंदा भाभी! सुनोगी तो मुग्ध हो जाओगी"।

मंदा का हृदय हर्षोल्लास से धड़क उठा। जिस भिखारी को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झोली बिन मांगे भर जाए उसके हर्ष का क्या पार! वह मुस्का कर बोली:--

"ऐं हटो--कई दिनों से कह रहे हो सुनाऊं, सुनाऊं, और सुनाते हो नहीं—परन्तु न भैय्या, रहने दो। हम नहीं सुनते। अगर हमने सुन लिया......" मंदा का स्वर अब पर्याप्त उच्च हो गया था।

"तो कोई रुष्ट हो जायगा और उस घर में प्रलय आ जाएगी। मुझे सुनने में तो आपत्ति नहां परन्तु मेरे कारण किसी का दिल दुखे, यह मुझ से नहीं हो सकता।"

और अमल ने भी ऊंचे स्वर में कहा:--

"जलने वालों को और जलाना चाहिए, भाभी। हंडिया उबलेगी तो अपने ही किनारे जलाएगी। हम से क्या सम्बन्ध। जी होगा सो देख लेंगे--तुम बैठो तो"।

मंदाकनी उत्सुकता की मूर्ति बन कर बैठ गई और अमल सुनाने लगा।

यह वास्तविकता थी कि मंदाकनी न ही चारु की भाँति शिक्षा के अभूषण से सुसज्जित थी और न ही चारु का सा मानसिक विस्तार और काव्य पूर्ण भावनाएं उसे मिली थीं। इस लिए वह अमल के काव्य और गायन में डूबे हुए लेख को समझने में समर्थ भी न थी। परन्तु वह उस के लेख में अपनी आत्मा के एक अनोखे प्रश्न का उत्तर पाती थी। इस लिए वह मुस्काते हुए अक्षरों को लिए बैठे सुनती रही। अमल उत्साह में भर कर पढ़ता गया।

वह पढ़ रहा था:--

"यह कहना भूल न होगी कि अभिमन्यु ने माँ के पेट में ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यूह रचना के नियमों पर अधिकार प्राप्त कर लिया था परन्तु संसारिक अनुभवों के बावजूद वह शत्रु के व्यूह में से निकलने का ढंग न सीख सका था। वह एक नदी थी जो उबलती, दनदनाती, अकड़ती और उमड़ती, पर्वतों की चट्टानों और खड्डों पर से गुजरती जाती थी—आगे और आगे—लेकिन पीछे हटना, यह उसकी प्रकृति के विरुद्ध था। वह पीछे हटना जानता ही नहीं था—इसी प्रकार—सर्वथा इसी प्रकार संसार की प्रत्येक वह वस्तु जिसमें यौवन का उत्साह और उल्लास सम्मिलित हो आगे बढ़ना चाहती है। पीछे हटने के नाम से उसे घृणा होती है। नदी, समय और यौवन—सब के सब हर्ष और उल्लास में मस्त आगे बढ़ रहे हैं।

परन्तु मनुष्य का हृदय—आह, माँस और रक्त का छोटा सा परन्तु शक्तिशाली टुकड़ा—युग के विरुद्ध युग के नियम के विरुद्ध पीछे हटना चाहता है। वह उन दृढ़निश्चयी विभूतियों के पद-चिन्हों पर चल कर प्रगति करने की बजाए उन पद-चिन्हों की पूजा करता है। उन पर स्मारक बनाता है और उन स्मारकों को स्वर्ण और बहु मुल्य पत्थरों से सुन्दर और आकर्षक बनाने का यत्न करता है। कितनी विचित्र है यह वस्तु कि मनुष्य के वातावरण का प्रत्येक कण पुकार रहा हो 'आगे बढ़ो—आगे बढ़ो, और इसी वातावरण में रहने वाले मनुष्य का हृदय चिल्ला रहा हो

"प्राचीनता—प्राचीनता—सम्भवतः यही कारण है कि संसार को विपरीतता का घर कहते हैं। यहाँ वातावरण और मनुष्य के स्वभाव में पूर्व और पश्चिम का अंतर है"।

ठीक उसी समय द्वार के समीप एक छाया दिखाई दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मंदाकनी द्वार के ठीक सामने बैठी थी। उसने इस छाया को देख लिया। परन्तु वह यह बात अमल के पास प्रकट करना नहीं चाहती थी। इसलिए इसी प्रकार बैठी अमल के उत्साह-पूर्ण मुख को देखती रही और सुनती रही।

वह छाया क्षणभर में मिट गई।

चारु ने सोच रखा था कि अमल के आते ही वह उसके लत्ते ले डालेगी और खूब आड़े हाथों लेगी परन्तु वह यह भी जानती थी कि अमल चूकने वाला नहीं। वह विश्व-बन्धु की आड़ में उसे खरी २ सुनाएगा। इस प्रकार एक हानि रहित झड़प हो जाएगी और समस्त मानसिक तनाव दूर हो जाएगा।

इस आने वलें रोचक संघर्ष की कल्पना में चारु अमल की प्रतीक्षा करती रही परन्तु उसके आने का समय आया और चला गया। अमल फिर भी नहीं आया था। फिर एकाएक अमल की आवाज़ सुनाई दी। स्पष्ट था कि यह आवाज़ मंदाकनी के कमरे से आ रही है। चारु को लगा कि किसी ने उसके सीने में विषाक्त छुरा भोंक दिया। इसका श्वास रुक गया और पूंछ कुचली नागन की भांति कमरे ही में बल खाकर रह गई। वह प्रतीक्षा करती रही—सोचती रही और अमल की आवाज़ निरन्तर आती रही। अन्ततः वह सहन न कर सकी। दबे पाँव उठी और चोरों की भांति फूंक-फूंक कर पग धरती हुई मंदाकनी के कमरे की ओर बढ़ी।

कमरे का द्वार खुला था और द्वार में से अमल की आवाज़ आ रही थी। आवाज़ क्या थी एक हत्यारे विष की बाढ़ थी जो बढ़ी चली आ रही थी और चारु के जीवन को अपने अंदर डुबो देने वाली थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारु ने अमल के लेख का अंतिम वाक्य सुन लिया था। उसे मालूम हो गया था कि अमल का यह नया लेख है जो उसने अभी तक नहीं सुना। उसका यह विचार कि अमल ने अपने नए लेख के लिए मंदाकनी की सी मूर्ख को पसंद किया है और उसकी ओर दृष्टि भरकर भी नहीं देखा, विषैले नाग की भांति उसकी आत्मा पर फुंकारने लगा। दुःख और मानसिक वेदना जब बढ़ जाती है तो क्रोध का रूप ले लेती है। चारु का दुःख भी क्रोध में बदल गया। उसके शरीर में आग लग गई। वह चाहती थी कि चिल्ला २ कर आकाश सिर पर उठा ले। इतना बोले, इतना रोए कि अमल के लिए जीवन अजीर्ण हो जाए। परन्तु वह ऐसा न कर सकी। अपितु उसके पग पागलों की भाँति फर्श से टकराए और वह जोर-जोर से पैर पटकती हुई अपने कमरे में चली गई।—

द्वार—लकड़ियों के निकम्मे तख्ते—उसके क्रोध की घोषणा बनकर एक धमाके के साथ बंद हो गए और वह अपने बिस्तर पर जा पड़ी। उसे ऐसा लगता था कि वह जीवन जिसे प्रत्येक दृष्टि से बचाने के लिए उसने अपने जीवन की अन्तिम पूंजी लगा दी थी—धीरे २ —शनैः २ रेंगता हुआ उससे दूर हटता चला जाता है। वह देखती है—उसे बचाना चाहती है परन्तु हाथ नहीं हिला सकती।

द्वार की आवाज़ अमल के कानों तक भी पहुंच गई। मंदाकनी ने भी सुनी। अमल ने रजिस्टर पर से आँख उठाकर मंदा की ओर देखा और मंदा ने मुस्का कर चारु के कमरे की ओर संकेत करते हुए कहा :—

झुलसकर रह गई हैं तुम्हारी भाभी चारु !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"ऊंह" अमल ने बेदर्दी से सिर को झटका देते हुए कहा वह समझती हैं मानो मैं उनका कोई खरीदा हुआ सेवक हूं। मेरे मस्तिष्क का प्रत्येक प्रयास और मेरे ज्ञान का प्रत्येक रूप मानो उन्हीं के लिए है। यह भी भला कोई बात हुई।

यह कहा और पहले से अधिक उत्साह के साथ लेख सुनाने लगा।

मंदाकनी की समझ में कुछ बात आई, कुछ उसने समझ ली कि आ गई। इसी प्रकार धीरे २ लेख समाप्त हो गया। परन्तु चारु के आश्चर्य-जनक व्यवहार ने अमल के हृदय में एक प्रकार का विष भर दिया था। वह मंदाकनी के कमरे से मलिन मन लेकर उठा और चारु के कमरे के पास से होता हुआ चला गया। कमरे का द्वार बंद था। सम्भवत; इसी लिए कि अमल उसे खटखटाएगा—लेकिन अमल को क्या पड़ी थी द्वार खटखटाने की। वह खट २ करता और द्वार की ओर कनखियों से देखता चला गया—चला गया।

चारु ने भी इसकी चाल पहचान ली। वह जानती थी यह अमल है। उसे विश्वास था कि अमल द्वार खटखटाएगा। अमल इस अनुचित कार्य की क्षमा माँगेगा और सौ बार कहकर उसे लेख सुनने के लिए विवश करेगा। वह मुंह बनाएगी। मंदाकनी के विरुद्ध विष उगलेगी। उसे नासमझ प्रमाणित करेगी। अमल की अन्धी रुची की हंसी उड़ाएगी। और फिर—हाँ, फिर, अमल और अमल की समस्त मानसिक शक्तियाँ उसके मन को गुदगुदाने लगेंगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु ऐसा नहीं हुआ । बूट की खट २ स्पष्ट सुनाई देती रही—द्वार के समीप--चारु का हृदय धड़क उठा । वह मग्न होकर सुनने लग --अब रुका, अब रुका-- परन्तु वह नहीं रुका था । चाप बढ़ती गई --दूर--और दूर—यहाँ तक कि अमल का द्वार आया, ताले में चाबी घूमी—इसके पट खुले और फिर बंद हो गए । चारु को एकाएक एक हार्दिक वेदना हुई । -से लगा कि उसका जीवन थक गया है, चकरा गया है— मूर्छित होकर गिरा चाहती है । उसे ऐसा अनुभव होने लगा कि उसक संसार में एक भयानक भूकंप आने वाला है । और उसका संसार एक भय-प्रद तूफान के हाथों में एक नन्ही सी गेंद की भाँति उछल रहा है--अब गिरा कि अब गिरा और चकनाचूर हुआ ।

अकस्मात् उसकी दृष्टि खाट पर खुली हुई पत्रिका की ओर उठ गई—उसका अपना लेख--उस लेख की प्रशंसा--सम्भवतः यही था वह भयानक तूफान जिसन उसके संसार को अपने दोनों हाथों में उछाल २ कर बेहोश कर दिया था--टुकड़े२ कर देने की ठान ली थी । चारु के जीवन को उसके अपने लेख ने —और यह लेख, यह क्यों जीवित है । चारु की अंगुलियाँ पागलों की भाँति पत्रिका पर झपटीं और क्षण भर में पत्रिका टुकड़े टुकड़े हो गई । किस अशुभ क्षण में चारु ने यह कार्य आरम्भ किया था ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ८ :

सूर्य देवता पश्चिम के शयनागार में जा चुके थे और मौन प्रवर्तक सन्ध्या ने अपनी जुल्फें बखेर दी थीं। बरामदे में जुही के फूल खिलखिला कर हंस रहे थे और अपनी मुग्ध कर देने वाली सुगन्धि का कोष वायु के हवाले कर रहे थे। पवन उनको उठाये चोरों की भाँति कमरों में देखती फिरती थी और उन्हीं कमरों में से एक में चारु बैठी थी। समय हो चुका था कि रात्रि के स्वागतार्थ बिजली के बल्बों से गुलाल उड़ाया जाता। परन्तु चारु ने ऐसा नहीं किया था। वह खिड़की के पास पलंग पर गुम-सुम बैठी थी। आज उसने बालों में कंघी भी नहीं की थी। कपड़े भी नहीं बदले थे। माँग में सिंदूर नहीं भरा था। प्रतीत होता था कि किसी ने उसका हृदय मसल दिया है और हृदय की सभी उमंगें और आकाँक्षाएं एक अज्ञात चुभन में बदल कर उसके मन व हृदय में चुटकियां ले रही हैं। उसके बाल साँयकाल के सुगन्धित झोकों से अठखेलियाँ कर रहे थे। छेड़-छाड़ हो रही थी। बड़े रहस्य-पूर्ण ढंग से उन बालों और सन्ध्या की बहती २ मदमत्त हवाओं में—परन्तु कौन जाने कौन खेल रहा था चारु के हृदय से ? और कौन चला रहा था उस दिल पर छुरियाँ। विचार की आंखें गंगा, यमुना बन गई थीं—आँसू थे कि थमने का नाम ही न लेते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसी समय भूपतिबाबू अस्वाभाविक तौर से ही घर चले आए थे। उनका स्वभाव था कि वह अख़बार के सभी पृष्ठों के लिए लेख लिखकर उनके प्रूफ़ देखकर और संतोष करके घर आया करते थे। परन्तु आज वह अति शीघ्र कार्यालय से लौट आए थे। उनका मुख भी कुछ उतरा २ सा था। उनकी आँखें कुछ परेशान सी थीं। उनकी प्रत्येक बात कह रही थी कि वह बाह्य संसार से कोई आघात खाकर आए हैं ताकि चारु उनके हृदय पर फाहा रखदे।

लेकिन जिस काफ़ूरी फाहा रखने की आशा लेकर भूपति बाबू घर आए थे, स्वयं उस के हृदय पर आज सहस्रों विषैले नागों के दाँत घाव लगा चुके थे। वह स्वयं चाहती थी कि कोई आए—अपने होठों में बसा लेने वाली मुस्कान का आनन्द लिए हुए और उसके रिस्ते हुए घावों पर ठण्डक छिड़क दे—ऐसी कि उसकी आँखें बंद हो जाएं और संसार व संसार वालों की प्रत्येक वस्तु उसके अस्तित्व से कई कोस परे हट जाए।

चारु को इस आत्म-विस्मरण की अवस्था में बैठा देखकर भूपति बाबू अपना समस्त दुख भूल गए। लपके हुए उसके सिरहाने आ खड़े हुए। लेकिन चारु अपने विचारों में कुछ इतनी डूबी हुई थी कि भूपति बाबू के कदमों की चाप उसे चौंकाने में सफल न हो सकी। वह उसी प्रकार स्तब्ध बैठी रही। मानो चारु नहीं संगमरमर की मूर्ति है।

इस आत्म-विस्मरण ने भूपति को विस्मित कर दिया। और वह घबराकर बोले :—

"चारु"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूपति की आवाज़ सुनकर, मानो किसी गम्भीर निद्रा से जागी हो—मानो किसी ने अपने तीखे नाखूनों से छेड़ दिया उसके पकते हुए दिल को। वह तड़पकर घूमी और आश्चर्य-पूर्ण दृष्टि से भूपति की ओर देखने लगी। भूपति बाबूने चारु के परेशान बालों से खेलते हुए प्रेम की मदिरा से परिपूर्ण शब्दों में कहा :—

"ऐसे अन्धेरे में अकेला बैठा है, मेरा चाँद! मंदाकनी कहां है" ?

परन्तु इस प्रेम-पूर्ण वाक्य ने चारु के स्वप्नों पर आघात किया। वह तमाम दिन सोचती रही थी कि अमल को उसके पास आना चाहिए और गिड़गिड़ा कर उससे क्षमा याचना करनी चाहिए। इसी प्रकार सोचते २ अन्त में वह इस परिणाम पर पहुँच गई थी कि अमल अवश्य आएगा—चाहे कुछ हो जाए उसे आना ही पड़ेगा—परंतु अमल नहीं आया और अमल की बजाए आया भी कौन? भूपति बाबू! उसके अपने पति और देवता का रूप देखकर चारु की आँखों से आँसू और भी तेज़ी से बह निकले—वह और ज़ोर से रोने लगी—कि घिग्घी बंध गई।

भूपति बाबू बड़े परेशान हुए। उन्होंने उसके बालों पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा :—"परन्तु फिर भी क्या हुआ? मेरी रानी" !

चारु कुछ कहना चाहती थी, वह बताना चाहती थी कि उसका संसार स्वयं उसके सामने लुट रहा है। वह स्पष्ट कह देना चाहती थी कि जो घोंसला उसने तिनका२ जोड़ कर बनाया था और जिसके बारे में उसे यह अभिमान हो गया था कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसका अपना है, आततायियों के अत्याचार-पूर्ण श्वासों की आँधी में उड़ा जा रहा है--वह रोना चाहती थी--पुकार २ कर समस्त विश्व को अपनी सहायता के लिए बुलाना चाहती थी। लेकिन वह कहे भी तो क्या? आखिर हुआ क्या था? वास्तव में ही क्या हुआ था? बात तो यही थी न कि अमल ने अपना लेख पहले उसे नहीं मंदाकनी को सुना दिया था। यह उसका निजी मामला था। वह जिसे चाहे लेख सना सकता है, उसका किसी को क्या ठेका? और अगर इसी बात की शिकायत भूपति बाबू के सामने की जाए और उन्हें बताया जाए कि इस रानी ने हिमालय बनकर उसका हृदय पीस दिया है। तो क्या भूपति उसका इलाज सोचने का प्रयत्न करेंगे या उसे एक हंसी मात्र समझकर खिलखिलाएँगे और इस प्रकार इसके घावों पर और भी नमक छिड़केंगे। इस निरर्थक विवाद में कोई ऐसा छुरा दिखाई वहीं देता था जिसकी चुभन चारु को इतना परेशान करदे। वह नहीं जानती थी इस कष्ट, इस दुख और इस आत्मिक व मानसिक वेदना का कारण क्या है। वह चाहतो थी कि जिस प्रकार भी हो सके उस हास्य-पूर्ण वेदना का स्रोत मिल जाए और उस व्यर्थ खोज ने उसके लिए एक आपत्ति पैदा कर दी।

परन्तु चारु के आत्म-विस्मरण ने भूपति बाबू को और भी परेशान कर दिया। वह समझे थे कि उनकी रुखाई ने चारु को इस दुःख के नरक में झोंक दिया है। इस लिए वह दुखित स्वर में बोले :—

"चारु अन्ततः मुझी को न बताओगी तो यह घाव किसके समक्ष खोलकर रखोगी? मैं जानता हूँ कि मैंने तुम्हारे साथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बड़ा अन्याय किया है। और ईश्वर जानता है कि यह अन्याय जान-बूझकर नहीं हुआ। काम-काज के झंझट ही कुछ ऐसे हो गए हैं कि सिर खुजाने का अवकाश नहीं मिलता। अत्यन्त व्यस्त रहा हूँ और परेशान भी। इसलिए मेरी ओर से रुखाई प्रकट भी हो तो क्षम्य है।

यह प्रश्न निश्चय ही ऐसा न था जिसका उत्तर देने की आवश्यकता हो। इसलिए वह मौन रही। लेकिन इस प्रकट निश्चलता में एक कम्पा देने वाला तूफान था जिसने चारु के हृदय में विषाक्त छुरे भोंक दिए। वह घबरा गई और उसे बार-बार यही ध्यान आने लगा कि जैसे भी हो भूपति बाबू चले जाएं और उसकी जान में जान आए। उसे ऐसा लग रहा था कि भूपति के प्रेम-पूर्ण शब्द स्वर्ण शृंखलाएं बनकर उसकी स्वतन्त्रता को छीने लेते हैं।

परन्तु भूपति बाबू इस मौन का अर्थ न समझ सके। उनकी दृष्टि चारु के सीने के तूफानों को न देख सकी। वह केवल यही समझे कि दोष उनका अपना है। इसलिए बोले ;—

"बात यह है कि तुम भी सच्ची हो और मैं भी। तुम्हें उचित तौर पर मुझ से यह आशा है कि मैं तुम्हारे पास बैठूं और तुम्हारे दुख-दर्द में शामिल हूँ। परन्तु मैंने अपने लिए झमेला ही ऐसा तैय्यार कर लिया है कि इन कर्मों का भली भाँति पालन करने में असमर्थ रहा हूं। इसका इलाज मेरे हाथों में नहीं, तो भी मैं यत्न करूंगा कि भविष्य में तुम्हारे इस अकेलेपन को दूर करूं। तुम जब भी चाहो, मुझे बुला लेना"।

चारु घबरा सी गई और बोली ;—

"नहीं तो—इसलिए तो दुखी नहीं हूं"।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो फिर इस संताप का कारण क्या है" ? भूपति खाट पर बैठे हुए बोले।

चारु अधिक समय तक अपनी परेशानियों को न छुपा सकी। तंग आकर बोली:—

"रहने दीजिए इस समय—रात्रि को बताऊंगी"।

भूपति कुछ समय तक मौन बैठे रहे और फिर उठते हुए बोले :

"बहुत अच्छा"।

यह कहा और सिर झुकाए धीरे २ बाहर चले गए। वह अपने मन पर दुःख और वेदना का पत्थर रखकर लाए थे और उन्हें आशा थी कि चारु के कोमल-कर इस पत्थर को सुविधा पूर्वक उठाकर एक ओर रख देंगे। परन्तु ऐसा न हो सका। हुआ भी तो यह कि चारु के सीने के पत्थर की और वृद्धि हो गई। भूपति बाबू का बोझ हल्का होने की बजाए और भी बढ़ गया।

भूपति बाबू की झुकी हुई गर्दन और परेशान आँखों ने चारु से इस बात को अधिक समय तक गुप्त न रहने दिया। उसका हृदय पुकारकर बोला—तेरे देवता तुझ से सहायता मांगने आए थे। सम्भवतः वह किसी दलदल में फंस गए हैं और वह इस आशा से आए थे कि तेरा हाथ उन्हें उस दलदल से बाहर निकालेगा। परन्तु चारु तेरे अशुभ हाथों ने उन्हें उस दलदल में और गहरा गाड़ दिया। यह तुमने क्या किया चारु—? यह तुमने क्यों किया ?—और चारु के मस्तिष्क ने उसे उत्तर दिया। उन्हें बुलाती हूँ। अपनी सुनाऊंगी और उनकी सुनूंगी। इस प्रकार हम दोनों का हृदय हल्का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो जाएगा। परन्तु प्रश्न तो यह था कि सुनाए क्या ? उन्हें कहे क्या ? और इस कुछ न कह सकने के दुख ने उसकी मुसीबतों में एक भयानक वृद्धि कर दी। परन्तु विवश मन व मस्तिष्क कोई न कोई मार्ग ढूंढ ही लेता है। चारु को भी एक मार्ग सूझ पड़ा। वह इस प्रकार हृदय पर हाथ रखकर बैठी न रहेगी। और न ही इस निरर्थक दुख के महत्त्व को समझने के लिए अपने मस्तिष्क की शक्तियों को चिन्ता में डालेगी। वह उठी और सीधी रसोई में गई। बड़े ध्यान और बड़े प्रेम से उसने भूपति के लिए खाना तैयार किया और जब खाना तैयार हो गया तो हाथ में पंखा लेकर बैठ गई। आज उसे एक विशेष प्रकार के मोद का अनुभव हो रहा था।

इतने में उसने सुना कि मंदाकनी उच्च स्वर से बृज को कह रही थी:—

"अमल बाबू ने खाना खा लिया"?

"हाँ, बीबी जी"! बृज बोला "खा चुके"।

'अरे खा चुके"? मंदाकनी क्रुद्ध प्रतीत होती थी "तो फिर पान लेकर नहीं गया तू अभी तक"? इतने से अपराध पर मंदाकनी ने बृज के लत्ते ले डाले।

मंदाकनी की आवाज़ अभी सुनाई दे रही थी कि भूपति बाबू खाने के लिए अन्दर आगए। चारु पंखा करने लगी।

आज चारु ने पक्का निश्चय कर लिया था कि वह भूपति से बड़े प्रेम और प्यार से बातें करेगी। लेकिन मंदा की आवाज़ ने उसके इस महान निश्चय को छिन्न भिन्न कर दिया था और प्रयत्न करने के बावजूद एक शब्द भी न कह सकी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूपति भी बहुत चिन्तित थे। और बात करना तो क्या आज उनसे ग्रास तक न उठया गया। आखिर जब वह नित्यप्रति से बहुत कम खाकर उठे, तो चारु बोली:—

"आज तो कुछ खाया ही नहीं गया आप से"।

"वाह"! भूपति ने कृत्रिम हंसी हंसकर कहा, "और किसे खाना कहते हैं? इतना तो ठूँस लिया"। शयनागार में जब दोनों एकत्र हुए तो भूपति ने कहा:—

"चारु रानी को अपना बचन तो स्मरण होगा"।

"कैसा"? चारु बोली।

"कहा था न तुमने कि रात्रि को कुछ बताओगी"।

"और हाँ"। चारु कुछ ठहर कर बोली। "देखिये—बुरा न मानिएगा—मुझे मंदाकनी के स्वभाव में कुछ परिवर्तन सा दिखाई देता है। अब मंदाकनी की पहली सी दृष्टि नहीं रही। वह बहुत बदली हुई है। मुझे तो बाबा इसे यहाँ रखने का साहस नहीं होता"।

"लेकिन हुआ क्या? किस बात पर संदेह हुआ तुम्हें"?

"अमल के साथ जब बातें करती है और उसके सामने जिस प्रकार वह नखरे करती है—हाय, मुझे तो उसका ध्यान आते ही लज्जा लगने लगती, हे भगवान"!

भूपति बाबू उच्च स्वर से खोखली आवाज़ में खिल खिला कर हंसे और कहा:—

"पागल हो गई है, मेरी रानी! अमल के तो अभी दूध के दाँतें हैं। वह क्या खाक इस झंझट में पड़ेगा"।

"आपको संसार के बखेड़े छोड़ें तो घरकी चिन्ता होवे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दादा को देखो, उन बेचारों की कोई सुध ही नहीं लेता कि उन्हें खाना समय पर मिलता है अथवा नहीं परन्तु अमल बाबू का भाग्य ऐसा जगा है कि यदि उनके पान में चूना भी अधिक लग जाए तो घर भर की शामत आ जाती है। भूमि आकाश एक हो जाता है"।

"उफ स्त्री जाति"! भूपति बाबू ने ठट्ठा किया

"न जाने यह संसार भर का ईर्ष्या और द्वेष स्त्री ही के लिए क्यों सुरक्षित रख दिया गया"।

चारु ने चिढ़ कर कहा:—

"जी स्त्रियाँ तो संदेह करने का स्वभाव रखती ही हैं। परन्तु परमात्मा की दया है कि उनकी आँखों पर पुरुषों की भांति पट्टी नहीं बन्धी होती। वह भलाई और बुराई में भेद कर सकती हैं। और यह निर्लज्जता मुझे तो कदापि नहीं आती। मैं आंखें बंद करके अपने मकान की चारों दीवारों पर कालिख न पुतवाऊंगी"।

चारु की इन बातों ने भूपति बाबू को हंसी का एक अच्छा विषय दे दिया। परन्तु इसके साथ ही साथ वह मन ही मन प्रसन्न भी थे कि उनकी धर्म पत्नि इस घर को नेकी और पवित्रता की गंगा बनाना चाहती है और किसी प्रकार भी यह सहन नहीं कर सकती कि वह वातावरण जिसमें वह श्वास ले किसी प्रकार की मलिनता से अपवित्र हो।

इस विचार ने भूपति के हृदय की अवस्था को बदल दिया और वह प्रेम जो चारु के लिए उसके हृदय में था पहले से दस गुना हो गया। उन्होंने प्रेम और श्रद्धा से एक लुभावना चुम्बन चारु के अग्नि समान गाल का लिया और कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"प्रकृति ने सब प्रबन्ध स्वयं ही कर दिया है। सांप भी मर जाएगा और लाठी भी न टूटेगी। उमापति बाबू वकालत करने के लिए मैमन सिंह जा रहे हैं। मंदाकनी स्वयं ही साथ चली जाएगी। हमारी बात भी रह जाएगी और तुम्हारी इच्छा भी पूरी हो जाएगी"।

चारु चुप हो गई। भूपति बाबू नहीं चाहते थे कि इस अरोचक वर्णन को लम्बा करके अवस्था को और कष्ट-दायक बनाया जाए। इसलिए उन्हें ने विषय परिवर्तन के लिए पास की मेज़ पर रखे हुए रजिस्टर को उठा लिया और बोले:—

"अपना लेख तुमने हमें कभी नहीं सुनाया"। चारु लपक कर रजिस्टर पर झपट पड़ी और उसे छीनते हुए बोली:—

"आपके योग्य कोई लेख नहीं इसमें! आप ऐसे ही मेरी हंसी उड़ाएंगे"।

चारु की इस बात ने भूपति को बहुत कष्ट दिया। परन्तु वह इस चुभन को अन्दर पी गए और हंसकर बोले:—

हसी नहीं उड़ाएंगे हम--बस, और क्या कहती हो। चुपके पड़ा सुनता रहूँगा। और तुम्हें ऐसा प्रतीत होगा कि मैं घोड़े बेचकर सो रहा हूँ।

परन्तु भूपति की एक न चली। वह हठ करते ही रहे और रजिस्टर ऐसे स्थान पर गुम कर दिया गया जहाँ उनके हाथ क्या उनकी दृष्टि भी न पहुँच सकती थी।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ६ :

कुछ बातें स्त्रियों को बताई जाती हैं और कुछ नहीं बताई जातीं। कुछ बताने के योग्य होती हैं कुछ नहीं होतीं। परन्तु भूपति बाबू के हृदय में जो बात थी वह इस योग्य तो अवश्य थी कि चारु के कानों तक पहुंचा दी जाती परन्तु न जाने क्यों भूपति उसे न कह सके।

उमापति भूपति के अखबार में एक महत्त्वपूर्ण भाग ले रहे थे। छापा खाना, काग़ज़, लेन देन, कर्मचारियों के वेतन, अर्थात् कारोबार की सभी रासें उमापति बाबू ही के हाथों में थीं। और भूपति रुपये पैसे के झंझट से अलग होकर अखबार के शिक्षात्मक और साहित्यक विभाग की ओर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित रखना चाहते थे। उन्हें आशा थी कि जिस प्रकार वह स्वयं ईमानदारी के साथ अपने भाग का कार्य कर रहे थे उसी प्रकार उमापति बाबू भी ईमानदारी से अपने कर्तव्य पालन में संलग्न होंगे। परन्तु एक दिन उनके इस अभिमान का पोल खुल गया और उमापति बाबू की बेईमानियों पर से काग़ज़ वालों के एक पत्र ने सभी पर्दे उठा दिए। यह एक नोटिस था जो एक वकील द्वारा दिया गया था और इसमें २७००) की मांग की गई थी। भूपति लेन देन में सदा साफ़ रहे थे। और वह किसी प्रकार भी यह नहीं चाहते थे कि उनके कार्य में मांगने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वालों की संख्या बढ़ जाए। इसलिए वह सदा नकद वस्तु खरीदा करते थे। और हर काम नकद करते। यह नोटिस देखकर वह निस्तब्ध रह गए। उन्होंने तुरन्त उमापति को बुलाया और पूछाः—

"यह क्या बात है? कैसा रुपया है यह? मैंने तो काग़ज वालों की एक २ पाई चुका दी थी। जहां तक मेरा विचार है चार या अधिक से अधिक पांच रुपये मेरी ओर निकलते होंगे। परन्तु यह २७००) की राशि कहाँ से निकल आई"।—

उमापति ने सरलता से बात टालने का यत्न किया। कागज वाले ने गलती की होगी। मैं शीघ्र ही निर्णय कर लूंगा"।

परन्तु यह बात दबने वाली न थी। इससे पूर्व भी उमापति बाबू इसी प्रकार के सहस्रों धोखे दे चुके थे और उन धोखों को इन्हीं पर्दों में छुपा चुके थे। काग़ज़ वाली बात तो नई थी। इससे पूर्व भी भूपति के नाम पर बाजार वालों को लूटा गया था। नौकरों के पेट पर लात मारी गई थी और सहस्रों मालिकों के मुख से ग्रास छीने गए थे। इसके अतिरिक्त उमापति बाबू गाँव में एक पक्का मकान बनवा रहे थे और जहाँ तक अनुमान हो सकता था इस मकान की एक एक ईंट भूपति बाबू के रक्त से बनवाई गई थी। इसलिए जब यह सारा पोल भूपति बाबू के सामने खोला गया और उन्होंने जरा ज़ोर देकर हिसाब मांगा तो उमापति बाबू बगलें झांकने के अतिरिक्त कुछ न कर सके। जब इससे भी कुछ न हो सका तो वह चोरी और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुंह जोरी के सिद्धान्त पर उतर आए और बिफरकर बिगड़कर बोले, "यदि आप को यही संदेह है कि मैं ही चोर हूँ, बदमाश हूँ, उठाईगीर हूं तो फिर, मैं मुंह काला करता हूँ यहाँ से। आप पुनः मेरा मुख न देखेंगे। लेकिन आप से वादा किए जाता हूँ कि जो धन मेरी सेवाओं के बदले मेरे जिम्मे निकाला गया है उसकी एक २ कोड़ी और एक २ पाई अदा कर दूंगा। आप बिक जाऊंगा और जिस प्रकार भी सम्भव होगा, जूतियों की यह माला जो मेरे गले में डाली जा रही है, उतार दूंगा"।

उमापति बाबू की यह उष्णता उस घाव को न भर सकी जो भूपति बाबू के हृदय पर लगा था। धन की हानि तो जीवन की एक साधारण घटना है जिसे महत्त्व देना बुद्धिमत्ता नहीं। भूपति बाबू इस सत्य से भली प्रकार परिचित थे परन्तु वह स्वयं एक खुला और ईमानदार हृदय लेकर इस संसार में आए थे और इस भ्रष्ट संसार के सभी कार्यों को अपनी भावनाओं के मापदण्ड से मापना उनका स्वभाव बन चुका था। इसलिए उन्हें इस बात का पूर्ण विश्वास था कि संसार में चाहे कितनी ही भ्रष्टता और बुराइयां क्यों न हों, कृपा और करुणा की शृंखलाएं ऐसी हैं जिनसे छुटकारा पाना न केवल कठिन है अपितु असम्भव है।

परन्तु आज प्रकृति ने उन्हें एक ऐसा पाठ दिया था जो उनके पूर्व पठित पाठों से सर्वथा भिन्न था। आज उनके सामने उनके दृष्टिकोण का अपमान हुआ था। उमापति बाबू ने ऐसी चोट लगाई थी कि वह समस्त संसार को सर्वथा कृतघ्न और बेईमान समझने लगे थे। उन्हें विश्वास हो गया था कि बसंत समीर की शीतल श्वासें भी कृतघ्न हैं। और उनमें झूमते हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब्ज वृक्ष भी—उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा कि संसार में एक महान् क्रान्ति हो गई हो जिसमें आकर संसार का कण-कण एक सुविस्तृत और अमिट अन्धकार में डूब गया।

और इसी अन्धकार से घबरा कर वह उस दिन सांय-काल चारु की आँखों में प्रकाश खोजने के लिए उसके कमरे में गए थे। परन्तु वह प्रकाश उन्हें वहाँ भी न मिला। उस समय चारु दीपक बुझाये खिड़की के समीप खड़ी थी—अन्ध-कार में डूबी हुई।

उमापति को मैमनसिंह जाने की इतनी उतावली थी कि वह रात भर सामान ठीक करते रहे। वह चाहते थे कि जैसे भी सम्भव हो बाज़ार वालों को सूचना मिलने से पूर्व वह यहाँ से निकल जाएं ताकि उनके ऋणदाता उनको पकड़ न लें। भूपति बाबू के हृदय पर जो घाव उमापति के स्वार्थों ने लगाया था वह निश्चय ही इस योग्य नहीं था कि एक आध दिन के अवकाश से भर जाता। इसलिए वह उमापति से बात करना भी पसंद न करते थे। लेकिन भूपति बाबू की यह घृणा उमापति के लिए हर्ष-दायक थी। वह भी यही चाहते थे कि भूपति उनसे बात न करें और उनके भेद खुलने से बच जाएं।

अमल इस आन्तरिक तनाव से सर्वथा अपरिचित था। वह नहीं जानता था—कि भूपति और उमापति में क्या बातें हुई हैं और न ही इसे यह ज्ञात था कि यह विवाद किस प्रकार प्रारम्भ हुआ। इसलिए वह उसी भोलेपन से मंदाकनी के पास पहुँचा और बोलाः—"मंदा भाभी, क्या बात हो गई? लदने की चिन्ता क्यों होने लगी आज"?

मंदा कुछ तो पहले ही जली बैठी थी। यह सुनकर और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी फुंक गई और जले फफोले फोड़ने लगी।

"भैय्या! अधिक समय तक किसी के द्वार पर पड़े रहने से सम्मान नहीं रहता। अपना झोंपड़ा दूसरे के प्रासादों से अच्छा होता है"।

"परन्तु चले कहाँ"?

"देश को, और कहाँ"!

"आखिर कुछ तो कहो। इस प्रकार एकाएकी मन मैला कर लिया। बात क्या हुई? हमसे रुष्ट होगई क्या? कष्ट क्या था"?

कष्ट तो कोई भी नहीं था। कष्ट क्यों होने लगा था मुझे! जब तक तुम लोगों में रही बड़े आनन्द से दिन कटते गए। परन्तु भैय्या! दूसरों के लिए कष्ट का कारण होना भी तो बड़ी लज्जा की बात है"। और यह कहते हुए उसकी आँखें स्वयं ही चारु के कमरे की ओर खिच गईं।

अमल का मुख गम्भीर होगया और उसके होंठों पर मुहर लग गई। वह कुछ न बोला।

मंदा कुछ क्षण ठहर कर नाक भौं चढ़ा कर बोली:—

"हे ईश्वर! संसार भी कैसे लोगों से भरा पड़ा है। दादा के कान में न जाने क्या २ विष नहीं भरा गया। अमल नहीं चाहता था कि इस हृदय विदारक विषय को अधिक लम्बा किया जाए। इसलिए चुप-चाप गरदन झुकाए बाहिर चला गया। वह सोच रहा था कि चारु ने जो बात भी दादा से की है, इस योग्य कभी न थी, कि की जाती, और एक ऐसी स्त्री के मुख पर आती जिसे पवित्रता और सम्मान का अभिमान हो। और इसलिए स्वाभाविक तौर पर उसके हृदय में यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इच्छा जागृत हुई कि वह पुनः इस घर में पग न रखे। ऐसा जाए यहाँ से कि पुनः इस अशुभ चार दीवार के वासियों को अपना मुख न दिखाए। वह सोच रहा था कि यदि चारु भाभी दादा को लगा बुझाकर इस बात का विश्वास दिला सकती हैं कि वह मंदाकनी जैसी प्रेम और पवित्रता से परिपूर्ण स्त्री को कुल्टा और भ्रष्टा समझ लें तो यह कब सम्भव नहीं कि उनके होंठो से टपका हुआ विष अमल के जीवन को भी खराब कर दे। वह समझता था कि मंदाकनी को निकालकर चारु भाभी ने अमल को भी निकल जाने का संकेत किया है और इस वातावरण में रहना किसी प्रकार भी उचित नहीं। परन्तु उसे किसी प्रकार भी यह विश्वास नहीं आ सकता था कि दादा चारु की बातों में आकर अमल के बारे में कोई गलत धारणा बना लेंगे। उन्होंने उसकी देख भाल में कोई बात उठा न रखी थी और कभी उस पर यह प्रकट न होने दिया था कि उन्हें अमल पर विश्वास नहीं। न ही अमल ने उनके इस विश्वास को बिगाड़ने वाला कोई काम किया था। वह सदैव दादा के संकेत पर चलता और उसका प्रत्येक चलन और कार्य उनकी इच्छा के सर्वथा अनुकूल होता था। इसलिए वह नहीं चाहता था कि इन बातों का अन्तिम निर्णय किए बिना घर से बाहिर चला जाए। यह सोचकर वह भूपति के कमरे की ओर गया।

प्रिय जनों की कृतघ्नता, ऋण दाताओं की निरन्तर मांगें, हिसाब किताब का जंजाल—यह कुछ कम बातें न थीं। और किसी प्रकार भी नहीं कहा जा सकता कि यदि भूपति इस पहाड़ के नीचे दबकर चिन्तित थे तो उनकी चिन्ता अधिकार युक्त न थी। वह सोच रहे थे कि उनके चारों ओर शत्रुओं का एक जत्था खड़ा हो गया है। वह अनुभव कर रहे थे कि उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आगे पीछे और दायें बायें फुंकारते हुए सर्पों का एक भयानक समूह है। किसी ओर से भागाने का मार्ग नहीं। इस महा-प्रलय में वह अकेले थे। इन सभी आपत्तियों का मुकाबिला अकेले करना था। उनके दुख का कोई साथी नहीं था। आद-मियों से भरी हुई इस दुनिया में कोई व्यक्ति ऐसा न था जो उनके दुख दर्द में शामिल होता और उनके पास आकर उनसे पूछता "भूपति बाबू कैसे हो"? शत्रुओं और बाजू में छिपे सर्पों से पूरति इस संसार के साथ उन्हें अकेले युद्ध करना था, और यह युद्ध किस प्रकार होगा?—यह एक ऐसा प्रश्न था जो उनके मस्तिष्क के प्रत्येक कण को पीसे जा रहा था। वह सोच रहे थे। ठोड़ी पर हाथ रखे मग्न थे अपने विचारों में कि एकाएक अमल अपने हृदय में भ्रमों और अदूर दर्शिताओं का एक तूफ़ान लेकर आया और भूपति को ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह डाकुओं के हृदय भेदी बाणों में घिरे खड़े थे। एकाएक बिजली कौंद गई और विजली का तीव्र अग्निमय बर्छा उनकी ओर बढ़ा, वह चौंक उठे, बोले:—

"क्या बात है। अमल"?

अमल की आंखों पर न जाने आज कैसी पट्टी बन्धी थी कि वह दुख और वेदना के बोझ में दबे दादा का चिन्तित मुख भी न देख सका। वह अपने तूफ़ानी भावों की तीव्र गति धारा में इस विवशता से बह रहा था कि कवि का भावुक मन व मस्तिष्क रखते हुए भी वह यह अनुभव न कर सका कि दादा को मल्हम की अवश्यकता है। नमक उसे और तड़पाएगा। उसी अन्धे आवेश में उसने अपना नमकदान दादा के कलेजे पर खाली कर दिया:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"दादा— —" वह कुछ तेज होकर बोला "आप को संदेह है कि मैं——" और वह एकाएक रुक गया। उसके होंठ काँप रहे थे।

"संदेह, कब संदेह है, अमल।" वह सोच रहे थे कि इस कृतघ्नों के संसार में जिस पर संदेह न किया जाए वह व्यक्ति नहीं अवतार हो सकता है और अमल अवतार नहीं"।

"भाभी जी ने"! अमल कुछ रुक कर घुटना मलते हुए बोला, "भाभी जी ने मेरे चरित्र के विषय में कुछ कहा है आप से"?

एक नई आपत्ति—! भूपति बाबू चौकन्ने से हो गए। यदि आज से कुछ दिन पूर्व अमल क्रोध और घृणा प्रकट करता तो सम्भव था कि भूपति बाबू इस भ्रम पूर्ण बात को खिल-खिलाहटों में डुबा देते लेकिन आज उनके फेफड़ों में हसने कि शक्ति नहीं थी। आज उनके मस्तिष्क में ठट्ठा करने की सामर्थ्य न थी। आज वह सोच सकते थे तो यही कि संसार कृतघ्नों की बस्ती है—हत्यारों और डाकुओं का अड्डा है। इस लिए उन्होंने अमल की आँखों में काँपती हुई तेज बरछियों से झांप कर कहा:—

अमल, तुम पागल हो गए हो क्या"?

"तो भाभी जी ने कुछ नहीं कहा आपसे"?

"अरे वह तुम से प्यार करती है, बेटा! और प्यार करने वाले हृदय बड़े ईर्ष्यालु हुआ करते हैं। यदि उन्होंने तुम्हारी भलाई के लिए कुछ कह भी दिया हो तो बिगड़ने की क्या बात है"?

"खैर——" अमल ने एक दीर्घ निश्वास भरा "तो दादा!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे यहां से जाना चाहिए। अब मैं युवक हो गया हूं। बाहुओं में सामर्थ्य आ गई है और आकाश का वातावरण खुला और अपार है। मुझे अपने पंखों की शक्ति का परीक्षण करना चाहिए। देखना चाहिए कि विरोध की इन आन्धियों का मुकाबिला मैं कर भी सकता हूं या नहीं"।

भूपति को ऐसा लगा कि वह छुरा जो देर से उनकी दृष्टि के सामने तैर रहा था, लपक कर उनके सीने में गड़ गया है—वह चिल्ला उठे—

"अमल——" और फिर एक दीर्घ श्वास भर कर बोले "तुम्हारे बचपने का कुछ ठिकाना नहीं। यह क्या कर रहे हो तुम ?—तुम अभी पढ़ो लिखो। पंखों की शक्ति जांचने के अभी बहुत दिन हैं"।

अमल ने चौंक कर भूपति की ओर देखा—कवि कि दृष्टि ने अपने दादा के मुख पर दुख और क्लेश की लहरें देख लीं और उसका हृदय पिघल गया। उसका सिर स्वयं ही झुक गया। वह चुपके से उठा और धीरे २ बाहिर चला आया।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १० :

मंदाकनी का कण्टक निकल गया तो चारु ने सोचा कि वह अमल को बुलाकर स्वयं उससे बात चीत करेगी। और इस प्रकार उनके बीच भ्रम और भेद की जो खाड़ी पैदा हो गई थी भर दी जाएगी। परन्तु अमल को बुलाने का कोई न कोई बहाना अवश्य होना चाहिए था और यह बहाना कुछ कठिन न था—एक लेख!—अमल को अत्यंत सुविधा से एक लेख सुनने के लिए प्रवृत्त किया जा सकता था और इस प्रकार दूरी का कष्ट दूर किया जा सकता था। अतः उसने एक लेख का ढांचा तैय्यार किया। इस लेख का नाम 'अमावस का प्रकाश" था।

चारु जानती थी कि अमल इसकी स्वतन्त्र लेखन शैली को पसंद नहीं करता और न ही वह किसी प्रकार यह पसंद कर सकता है कि कोई नौसिखिया गुरुओं का मार्ग छोड़ कर अपने लिए एक ऐसा राजमार्ग बना ले जो विचित्र होने के साथ साथ विस्मयजनक भी हो। इस लिए उसने केवल अमल को चिढ़ाने और बात करने का विषय प्राप्त करने के लिए 'अमावस के प्रकाश' को जी भर कर कोसा था। वह लिख रही थीः—

"चाँद की चांदनी पीली चुड़ैल की भांति आई और संसार को एक कोढ़ में झोंक गई। मानो समस्त संसार पर फुलबहरी की सफेदियां छिड़क दी गईं और उसके विपरीत अन्ध्यारी रातें—मोहिनी—लम्बी २—अन्ध्यारी रातें और चमकते हुए नक्षत्र दिल को कैसे भले लगते हैं—इत्यादि"

वह समझती थी कि अमल इन विचारों को सुन कर अवश्य तिलमिलायेगा और उसे इस प्रकार के निरर्थक विचारों कोर प्रकट करने से रोकनेका यत्न करेगा और इस प्रकार बात करने का अवसर मिल जायगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु इधर असल के हृदय की क्या अवस्था हो रही थी, चारु के स्वप्न में भी न था। वह सोच रहा था कि चारु भाभी इस संसार में उसकी सब से बड़ी शत्रु है। वह सोच रहा था कि यही एक व्यक्ति है जिस ने मुस्कराते हुए संसार को आहों के हवाले कर दिया है। वह जानता था कि उसे अकेले इन आन्धियों से लड़ना है और इन बवण्डरों के समक्ष छाती तान कर खड़े होना है। चारु एक स्त्री के रूप में कितनी भयानक शक्ति है, इसका उसे ज्ञान था और जब उस शक्ति के साथ साँसारिक शक्तियाँ भी सहयोग दें तो क्या प्रलय नहीं बन सकती। यह वह भली भाँति जानता था। और इन शक्तियों का मुकाबिला करने का कार्य-क्रम तैय्यार कर लिया था। वह सोच रहा था कि वह चारु के सामने जाते ही उसपर बरस पड़ेगा। जो उसके मुंह में आएगा उसे कहेगा जो मन में आएगी, उसे सुनाएगा और इतना कुछ कहेगा कि वह सदा के लिए मौन हो जाए।

इन सब से अलग भूपति बाबू की स्थिति इतनी करुणा-जनक हो रही थी कि उनका मुख देखने से हृदय भर आता था। वह बचपन से सोने चाँदी में खेलते आए थे। परमात्मा का दिया सब कुछ था परन्तु इस बार उनके अपने ही पाले साँप ने इनके हृदय में ऐसे तेज़ और विषैले दांत भोंक दिए कि उसके रक्त का एक २ कण अथाह गहराइयों में डूबता जा रहा था। उनका धन व्यय हो चुका था। उनके ऋण मांगने वाले अजगर की भांति जबड़े फैलाए उनकी ओर बढ़ रहे थे। चारों ओर दुख और वेदना की आँधियां अपने तूफानी सितारों पर एक ऐसा राग छेड़ रही थीं जो इतना मस्तिष्क भंग करने वाला था कि भूपति उसे सहन नहीं कर सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु इस विस्तृत अन्धयारे और इसस वॅब्यापक अन्धकार में आशा की एक इत्तनी सी किरण उनके मस्तिष्क के क्षितिज पर फूटी और जिस प्रकार डूबता हुआ एक साधारण कण को इस आवेश-पूर्ण लहरों के सीन पर खेलता देखकर उसे ही आश्रय बना लेने के लिए उसकी ओर जाने का यत्न करता है, उसी प्रकार भूपति भी आशा की नन्ही सी किरण देखकर उसकी ओर दौड़ पड़े। यह कण मुनिलाल था। वह भूपति का पुराना परिचित था और यह सत्य है कि प्रत्येक आड़े समय में भूपति ने मुनिलाल को आश्रय दिया था। समय पड़ने पर सहस्रों रुपये देने से भी न न की थी। और आनन्द यह कि लौटाने का कभी समय ही नहीं आया था। भूपति अपने दिये हुए रुपये मांगने के लिए मुनिलाल के मकान की ओर चले।

इस समय मुनिलाल नहा-धोकर पूजा-पाठ को बैठे थे और कागज़ के एक छोटे से टुकड़े पर छोटे २ अक्षरों में हज़ार बार दुर्गा का नाम लिख रहे थे, यही उनका पूजन था। भूपति बाबू को आता देखकर बड़े ढंग और प्रेम से उठे और बोले :—

"आइये ! भूपति बाबू—आज इधर का मार्ग कैसे भूल पड़े" ?

भूपति बाबू की चिन्ताओं ने रस्मी बातों का भी विचार न किया और छूटते ही अपनी विपदा कहने लगे।

मुनिलाल ने समस्त व्यथा बड़े ध्यान से सुनी और पूरी सहानुभति प्रकट की। परन्तु जिस समय भूपति ने अपना ऋण मांगा, तो मुनिलाल आंखें घुमाकर बोले :—

"भूपति बाबू ! परमात्मा की सौगन्ध, तुम बड़े ही भोले हो—और भूल भी बड़ी जल्दी जाते हो। अरे भाई ! तुम्हारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रुपया तो मैंने एक २ पाई चुका दिया था और मेरा विचार है—देखो बुरा न मानना, यह उसी बदमाश उमापति की शरारत है"।

यह सुनते ही भूपति के पांव के नीचे से भूमि खिसक गई। उन्हें ऐसा मालूम होने लगा कि बेसहारा गुम्बज टुकड़े २ होकर उनके सिर पर टूटा चाहता है। परन्तु एकाएक चारु की शक्ल उनकी आँखों के सामने घूम गई। विश्वास और प्रेम की पवित्र देवी! वह तो भूपति को आश्रय देगी।

यह सोचकर उनकी टूटती हुई सी कमर फिर जुड़ गई। वह उठे और घर की ओर चल दिए।

चारु इस समय तकिए पर काग़ज़ रखे "पूर्णिमा का प्रकाश" लिख रही थी और अपने विचारों में इतनी व्यस्त थी कि भूपति के आगमन का भान तक न हुआ। भूपति ने उसे देखा। वह कितनी संतुष्ट, कितनी प्रसन्न और कितनी व्यस्त प्रतीत होती थी। उसकी व्यस्तता देवताओं की भांति निर्दोष और भोली-भाली प्रतीत होती थी। ऐसी गम्भीरता के स्वर्ग में आर्थिक चिन्ताओं के बवण्डर डालना कितना बुरा था। भूपति बाबू के मन में इतना साहस न था। इसलिए वह जिस प्रकार कमरे में प्रविष्ट हुए थे, उसी प्रकार चुपके से दबे पांव बाहिर निकल गए। अपने दुख का बोझ अकेले ही उठाना और दूसरे को इस से बचाए रखना—यह भी तो एक प्रसन्नता थी।

द्वार से निकले ही थे कि अमल से भेंट हो गई। अमल लम्बे २ डग भरता चला आ रहा था। उसकी मुखाकृति कह रही थी कि आज वह बहुत ही उदास हो रहा है और अवश्य कुछ न कुछ करके रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु भूपति बाबू के मुख पर तो आत्मिक-क्लेश की मोहरें लगी हुई थीं। वह गर्दन मोड़े निर्बल पगों से चले आ रहे थे। अमल ने उन्हें देखा और निस्तब्ध रह गया। वह कौनसा पर्वत था जिसने भूपति जैसे नरसिंह का हृदय चूर्ण कर दिया था और वह कौनसा विष था जिसने इस वीर पुरुष की धमनियों से रक्त का अंतिम बिंदु भी चूस लिया था? यह ऐसे प्रश्न थे जो आग्नेय शरों की भाँति मस्तिष्क में गड़गए। वह बौखला गया और विस्मित स्वर में पूछा :—

"दादा ! क्या हो गया आप को" ?

भूपति का आत्म-विस्मरण एक झटके के साथ उनके मस्तिष्क से हट गया। वह चौंक से गए और घबराकर बोले-

क्या हुआ ?—क्या ?—ओह कुछ नहीं—कुछ भी तो नहीं, अमल"।

लेकिन—दादा—मेरी बातों ने तो परेशान नहीं कर दिया आप को" ?

नहीं, नहीं, भैय्या ! "भूपति बोले, मेरा संसार तुम्हीं लोग तो हो। तुम्हारी बातें मुझे परेशान नहीं करतीं। मेरी परेशानियों को धो देती हैं"।

यह कहा और फिर आत्म-विलीन होकर आगे बढ़ गए।

परन्तु भूपति के उत्तर ने अमल को संतुष्ट करने के स्थान पर और भी उतावला कर दिया। वह लपका और चारु के कमरे में चला गया। उसे ध्यान भी न रहा कि वह चारु से लड़ने की दृष्टि से आया था और इस प्रकार अपने शत्रु के सामने चला जाना अपनी पराजय स्वीकार करना है। चारु उसे देखकर फूल की तरह खिल गई। अमल इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरलता से उसके पास चला आएगा और उसे बुलाने और उसकी मिन्नतें करने की आवश्यकता ही न रहेगी ? यह विचार कभी उसके मस्तिष्क में नहीं आया था और इस अनपेक्षित बात ने चारु के रूएं २ में एक विचित्र प्रसन्नता भर दी । उसने मुस्कराकर अमल का स्वागत किया और फिर बोली :—

"आओ अमल!—आओ, मैं तो तुम्हारी बाट जोह रही थी"।

"भाभी !" अमल ने चारु की बात अनसुनी करते हुए कहा :—

"दादा को क्या हो गया है" ?

"दादा को—क्यों क्या बात हो गई" ?

"ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत ही परेशान हैं"।

अरे छोड़ो भी—किसी दूसरे अख़बार वाले ने लत्ते ले डाले होंगे"।

यह कहकर उसने अपना हाथ काग़ज़ों की ओर बढ़ाया और बोली :—

"अमल ! आज मैंने एक विचित्र लेख लिखा है—बड़ा विचित्र लेख है। सुनोगे तो रोमांच हो आएगा"।

चारु का विचार था कि अमल लेख का नाम सुनते ही व्याकुल हो जाएगा और सुनने के लिए हठ करेगा । परन्तु अमल एक दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा । चारु ने दो तीन बार काग़ज़ों को इधर--उधर पलटा, लेकिन अमल ने फूटे मुंह से एक बार भी सुनाने के लिए नहीं कहा और जब चारु तंग आकर स्वयं ही बोली :—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ११ :

कुछ दुर्भाग्य ही कहिए कि भूपति के जीवन में जो भी घटना होती उनके कष्टों में वृद्धि करने ही का कारण होता और उनके मस्तिष्क और मन के बोझ आगे से कहीं अधिक हो जाते परन्तु एक दिन वक्रगति आकाश ने एक नया दाव फेंका और कुछ दिनों के लिए भूपति का मानसिक बोझ हल्का हो गया।

बरदवान में एक वकील साहिब रहते थे। अच्छे खाते पीते आदमी थे और उनकी एक लड़की थी, लाखों में एक! मस्तिष्क की दृष्टि से भी प्रशंसनीय थी। अमल के भाग्य ने उसे मुस्करा कर देखा और उन वकील साहिब ने भूपति बाबू को एक पत्र लिख दिया और अपनी बेटी के लिए अमल का रिश्ता मांगा यह पत्र पढ़ते ही भूपति का हृदय हर्ष से नाचने लगा। उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि संसार के सभी के दुख और कष्ट उनसे कई पग पीछे हट गए हैं। वह भागते हुए चारु के कमरे में आए वह शयनागार में जा चुकी थी और भूपति असमय ही शयनागर में जाकर बोले:—

"ए मैंने कहा—अमल के लिए एक बड़ा अच्छा संदेश आया है"।

"संदेश"! चारु ने प्रश्न सूचक दृष्टि से देखते हुए कहा और सोचने लगी। वह इससे पूर्व भी अमल का विवाह किसी अच्छे घराने में करने की योजना बना रही थी। भूपति बाबू के मुख से यह शुभ समाचार सुनकर चौकस हो बैठी और बोली:—

"कहाँ से"?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सुनाऊं तुम्हें—लो सुनो"।

तो उसने एक पैनी विषाक्त दृष्टि से उसकी ओर देखा और तेजी से चलता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

चारु विस्मय से उसकी ओर ताकती की ताकती रह गई। उसकी समझ में नहीं आता था कि अमल को क्या हो गया है"।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बड़ी अच्छी जगह है। बड़े धनवान लोग हैं।

"परन्तु अमल को यह सम्बन्ध पसंद भी है" ?

"यह तो मैं नहीं जानता। और न ही मैंने इस से पूछा है। परन्तु अधिकार तो कुछ मुझे भी है ही। और मैं अपने इस अधिकार को खोना नहीं चाहता। सम्बन्ध बड़ा अच्छा है"।

"अच्छा तो होगा ही"।

"मुझे तो अत्यंत पसंद है"!

चारु की आंखों में एक नन्ही सी शरारत लचक गई——वह मुस्कुरा कर बोली:—

"आप को बहुत पसंद है वह संबंध" ?

"बहुत—सुना है लड़की बस इन्द्र के अखाड़े की अप्सरा ही है। देखोगी तो बस देखती ही रह जाओगी और फिर आर्थिक दृष्टि से भी वे लोग सौ में क्या सहस्रों में से एक हैं। चांदी सोने में खेलते हैं"।

"फिर तो आपके धन्य भाग हैं। आज ही निश्चित कर लीजिए"।

"परन्तु अमल से पूछ देखो"।

"ओह! तो संदेश अमल के लिए आया है। मैंने समझा आपके लिए"? यह कहते हुए चारु मारे हंसी के लोट पोट हो गई। भूपति हंसते हुए बोले; "यह बात होती तो फिर क्या कहने थे। फिर तो मैं आते ही तुम्हारा मुंह मीठा ना कर देता"।

"परन्तु वह लोग हैं कौन"?

"बरदवान में एक वकील साहिब हैं। परमात्मा की दया है उन पर। काम खूब चलता है और लाखों में खेलते हैं। अगर"...

"उफ! कान पक गए उनकी धनाढ्यता की कथा सुनते २। बस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समझ में आ गया कि वह धनवान है"।

"हाँ! और वे कहते हैं कि विवाह के पश्चात् असल को विलायत भेज देंगे"।

असल के विलायत चले जाने के विचार ने चारु के हृदय पर आघात किया। असल उसके एकांत संसार का एक मात्र प्रकाश था और यह विवाह उसे भी इस से छीन लेगा, यह बात चारु किसी प्रकार भी सहन नहीं कर सकती थी--उसने चौंक कर कहा:—

"क्या कहा—विलायत भेज देंगे"?

"हां विलायत"! भूपति बाबू ने एक दीर्घ श्वास भर कर कहा, "तुम जानो अब हमारी पसली तो इतनी है नहीं। ऋण पर्वत की तरह सीने पर मूंग दल रहा है। और असल धन के चाव चोचलों में पल कर युवक हुआ है। उसकी आवश्यकताएं यदि अब पूरी न हुईं तो उसके हृदय को जो आघात पहुंचेगा उसकी कल्पना मात्र से मुझे रोमांच होता है। परन्तु यह है भाग्यवान! जब तक युवा नहीं हुआ था तो मेरे कारण धन का हुन बरसता रहा! इस पर अब जब मेरा कोष खाली हो गया है तो एक और ने उसकी ओर हाथ बढ़ा दिया है। मैं तो कहता हूं जैसे भी सम्भव हो, शीघ्र इसका विवाह कर दिया जाए। ताकि हमारी निर्धनता का उसके मन पर प्रभाव न हो।

चारु को ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी आँखों के सामने से धुन्ध के बादल हटते जा रहे हैं और जिस वस्तु को वह धुन्ध के पर्दे में लिपटी हुई सौन्दर्य और धन का स्वर्ग समझ रही थी विचित्र भयानक और डरावनी बनती जा रही है। वह किसी मूल्य पर भी असल को अपने से अलग न करना चाहती थी। वह चाहती थी कि असल की बहु उसके घर में आए और वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन दोनों की सेवा किया करे। परन्तु यह विवाह उसको सात समुद्र पार पहुँचा देगा और जब वह लौट कर आयगा तो उसकी बुद्धि में क्या परिवर्तन आ चुका होगा, इस विचार के आते ही उसे रोमांच हो आता। वह चाहती थी कि चिल्लाए और भूपति बाबू को विश्वास के साथ कहदे कि वह अमल का विवाह इस स्थान पर न होने देगी। परन्तु उसका यह इन्कार किस रंग में देखा जाएगा ! भूपति बाबू क्या समझेंगे ? यह प्रश्न अपने आप पर्याप्त महत्व रखते थे। इस लिए उसने खुले तौर पर इन्कार करने की बजाए अमल की आड़ ली। उसका विचार था कि जिस प्रकार अमल के बिछुड़ जाने का विचार उसे सता रहा है, उसी प्रकार प्रिय भाभी से अलग हो कर काले कोसों चले जाने का विचार अमल के लिए भी असहनीय होगा। इस लिए वह इस विवाह से इन्कार कर देगा और उसके लिए किसी और सम्बन्ध की प्रतिक्षा करनी पड़ेगी। इसी कल्पना की सहायता से उसने अपने बिखरे भावों को एकत्र किया और धीरे से बोली:—

"अमल से पूछ लेना चाहिए"?

भूपति ने हंस कर कहा:—

"तुम्हारा विचार है कि मैं जिस को पसंद करूंगा, अमल उसे रोक देगा"?

"नहीं ! नहीं"!! चारु घबरा कर बोली। "वह क्यों करने लगा, परन्तु फिर भी आज कल के नवयुवक अपने बड़ों से अधिक समझदार होने का गर्व करते हैं। इस लिए वह हर विषय में अपनी इच्छा से परामर्श लिया करते हैं। इस में बुराई क्या है"?

"बुराई—अरे बुराई की क्या बात है, मेरी रानी ? अभी बुलवा भेजो, अमल को"!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकर गया और अमल कमरे में आ गया। चारु ने आशा-पूर्ण दृष्टि से अमल की ओर देखा। उसके कोमल शरीर में अपनी भावनाओं का प्रतिबिम्ब देखने का यत्न किया। अमल ने चारु भाभी के मुख की ओर देखा और उसे ऐसा भास होने लगा कि इस निर्दोष और प्रत्यक्षत: सुन्दर "बाह्यरूप" के अंदर एक भयानक खोट निहित है। उसे चारु की आशापूर्ण आंखों में मकर, धोखा, ईर्ष्या और द्वेष के साँप लहराते हुए दिखाई दिए।

भूपति बाबू ने अमल की पीठ पर हाथ फेरा और बोले:—

"अमल!—बर्दवान के वकील रघुनाथ का नाम तो तुम जानते ही होगे"?

"जी हां—बहुत भली भाँति"।

"क्या विचार है तुम्हारा—उनके बारे में"?

"अच्छे आदमी हैं"।

"यदि तुम्हारा विवाह उनकी लड़की से हो जाए तो कैसी ठहरे गी"?

अमल के मुख पर लज्जा की लालिमा बिखर गई। उसने सिर झुका लिया।

"भई वाह! तुम भी पुरुष हो, लजाने की क्या बात है इस में? स्पष्ट कहो"।

"मैं क्या जानूं दादा—जो जी में आए, करो"।

"परन्तु तुम्हारा क्या विचार है? लड़की बुरी तो नहीं है। पर्याप्त सुदंर है"।

"बुरी क्यों होने लगी थी"?

"तो फिर क्या हैं"?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या हर्ज है ।--!" अमल का मुख क्षितिज की भांति लाल हो गया ।

"परन्तु, अमल !" चारु भाभी ने टूटती हुई सी आवाज़ में कहा, जानते हो शर्त क्या है इस विवाह की" ? "होगी कुछ !" अमल ने बेपरवाई से उत्तर दिया । "बड़ी कड़ी शर्त है" । यद्यपि अमल की प्रत्यक्ष बेपरवाई ने चारु के हृदय पर कड़ा आघात लगाया था तो भी उसने बल पूर्वक कहा, "तुम कभी भी सहन न कर सकोगे ?"

"अरे भई !" भूपति बोले, "तुम तो ऐसे ही उसे डरा रही हो । उसे तो परमात्मा की कृपा समझो । विलायत जाने में क्या भय है ?"

"विलायत दादा--क्या विलायत ?"

"हां रघुनाथ कहते हैं कि विवाह के पश्चात तुम्हें विलायत भेज दिया जाएगा" ।

विलायत जाने के विचार से अमल का मुख कुंदन की भांति दमक उठा । वह मुस्करा कर बोलाः—

"मैं तैय्यार हूँ दादा !--

"प्रत्येक समदार व्यक्ति तैय्यार होगा । ऐसी शादियाँ क्या प्रत्येक की हो जाती हैं ?"

परन्तु अमल की इस बुद्धिमत्ता से चारु के मन पर क्या बीती—यह सम्भवतः उसके अतिरिक्त और कोई नहीं जान सकता ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १२ :

भूपति बाबू की आर्थिक अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। वह अधिक समय तक अखबार जारी न रख सके और विवश होकर उसे बंद करना पड़ा। वह जानते थे कि उन का पत्र किसी निजी स्वार्थ अथवा आर्थिक लाभ के लिए प्रारम्भ नहीं हुआ था और न ही इसके जारी करने में धन कमाने का कोई विचार था। यह जारी हुआ था केवल देश और जाति की सेवा के लिए और भूपति बाबू को अधिकार-पूर्ण गर्व था कि उन्होंने अपनी पूंजी और अपना समय व्यय करके पत्र का यह आशय भली भाँति पूरा किया था। इस के बंद हो जाने से भूपति बाबू को विश्वास था कि जनता के निस्वार्थ सेवकों में से एक कम हो जाएगा और इसके साथ भूपति बाबू को भी देश और जाति की सेवा का कोई अवसर न मिलेगा। वह जानते थे कि देश में सहस्रों ऐसे व्यक्ति थे जिनको इनके पत्र से बड़ी-बड़ी आशाएं थीं। इस पत्र के बंद हो जाने से इनकी इच्छाओं और आशाओं को कितना आघात पहुंचेगा, भूपति बाबू इससे अपरिचित न थे, परन्तु यह सब कुछ जानने और समझने के बावजूद निर्धनता ने उनके हाथों में अटूट शृंखलाएं पहना दीं और वह विवश हो गए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस घिरती हुई आपत्ति के बीच उन्हें एक ही आश्रय की आशा थी वरन् ऐसा कहना चाहिए कि एक ही सहारा उनकी आकांक्षाओं का केन्द्र विंदु था और वह सहारा थी चारु। वह अपनी ओर उठती हुई आशा-पूर्ण आकाँक्षाओं को एक ही मार्ग दिखा सकते थे--और वह मार्ग था चारु की चौखट की ओर जाने वाला रास्ता !

परन्तु जिस देवी के स्थान पर यह सब कुछ होने को था वह देवी स्वयं किस चिन्ता में पड़ गई थी, इसको देखने वाली आँखें इस संसार में पैदा ही नहीं हुई थीं।

चारु और अमल दोनों के बीच भाभी और देवर का पवित्र सम्बन्ध था परन्तु एक तो वह समायु थे, दूसरे समान स्वभाव था और तीसरे यह कि जब से चारु ने इस घर में प्रवेश किया था उस दिन से लेकर आज तक अमल और चारु इकट्ठे रहे थे। इस निकटता ने आपसी समीपता के सम्बन्धों पर मानसिक व आत्मिक मैत्री की मोहरें लगा दीं। और इन दोनों को एक कर दिया परन्तु वक्रगति आकाश दोनों को एक दूसरे की ओर आकृष्ट होता और नैसर्गिक प्रेम के स्वर्ग में आनन्द और मोद में प्रसन्न चित्त न देख सकता था। इन दोनों को बहन-भाई का मधुर प्रेम संचित किए अधिक समय न बीता था कि भाग्यके देवताओं ने घृणा और खिंचाव का पाँसा फैला दिया और इन दोनों को विवश और निःसहाय मोहरों की भांति आपस में लड़वा दिया। चारु किस प्रकार समझ सकती कि उसकी अपनी भाभी मंदाकनी जिसको वह हृदय से लगाकर इस घर में लाई थी उसके लिए ऐसा रक्तीला अखाड़ा जमा देगी कि उसका देर से बना बनाया खेल बिगड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाएगा। भूपति बाबू क्या जानते थे कि जिस उमापति को उन्होंने अपने रक्त का लोथड़ा समझकर अपने पास रख लिया था इनकी बर्बादी करके उठेगा। भाग्य और प्रकृति के रहस्य कौन जाने और किसे ज्ञात कि नीली छत्री वाला शासक क्या करेगा, क्या नहीं?

तो भी जो कुछ हुआ, कम से कम चारु की दृष्टि में इतना साधारण था कि यदि वह और अमल कुछ क्षण के लिए एक दूसरे से मिलकर आमने सामने बात-चीत कर लेते तो यह सारे झगड़े निपट सकते थे। उसका विचार था कि केवल लेखों के कारण समकृत्य होने की स्पर्धा इन दोनों के बीच में खड़ी हो गई है और उसका मिटा देना कुछ कठिन नहीं। वह नहीं जानती थी कि जिस तेज़ाब ने उन दोनों को फाड़कर पृथक् कर दिया है, वह इतना विषैला और शीघ्र प्रभावी है कि आमने सामने की वार्ता उस घाव को नहीं भर सकती।

अतः चारु दिन रात इस द्विविधा में रहने लगी कि जैसे भी हो और जितना शीघ्र सम्भव हो, अमल से मिलकर किसी अन्तिम निर्णय पर पहुंचा जाए। उसका विचार था कि अमल किसी दिन स्वयं ही चला आएगा। लेख सुनने या सुनाने ही के बहाने सही परन्तु आएगा अवश्य! परन्तु उसका यह स्वप्न सत्य होने से पूर्व अमल के भयानक व्यवहार से चकनाचूर होकर रह गया। अमल को कई दिन बीत गए थे इस ओर आए हुए और कल विवाह के लिए विदा होना था। विवाह के पश्चात् वह सीधा विलायत चला जाएगा और फिर इन दोनों के बीच दिनों और गजों की नहीं सालों और मीलों की दूरी हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस विचार ने चारु के मन पर छुरियां चला दीं । इसके विषैले कचोकों ने उसे निर्दयता से भेदा और तड़पाया और अंततः वह इस बात पर भी मान गई कि स्वयं अमल को बुला भेजे। उसे विश्वास था कि अमल स्वयं आने में अपनी पराजय समझता है और जब उसे ज्ञात होगा कि उसकी भाभी ने उसके सामने सिर झुका दिया है तो स्वयं ही भागा हुआ चला आएगा।

परन्तु जब चारु का संदेशा अमल को पहुँचाया गया तो वह कुछ सोचने लगा और कुछ ठहरकर बोला, "इस समय तो नहीं—कुछ ठहरकर आऊंगा"।

यह विषैला संदेश चारु के कानों तक पहुँचा दिया गया। परन्तु इस हृदय भेदी उत्तर और इस निराशाजनक व्यवहार ने भी चारु को निराश न किया। उसे अब भी आशा थी कि अमल अवश्य आएगा और उसका रोष समाप्त हो जाएगा। इसी विचार के आधीन वह बरामदे में आकर कुर्सी पर बैठ गई। और अमल की प्रतीक्षा करने लगी।

प्रतीक्षा की घड़ियाँ कितनी कठिन होती हैं, इस का अनुभव प्रत्येक को होगा और उसका विस्तृत विवरण अनावश्यक है परन्तु यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि चारु अत्यधिक उदासीन थी। वह प्रत्येक ध्वनि पर सिर उठा २ कर देखती परन्तु उसकी दृष्टि निराश होकर लौटती। अन्ततः वह तंग आकर उठी और बाल खोलकर जूड़ा बनाने लगी। उसके लम्बे कमर तक पहुँचने वाले बाल जूड़ा बनाने में काफी समय लिया करते थे और उसे आशा थी कि जब तक जूड़ा बने, अमल आ जाएगा परन्तु आज शायद चारु के हाथों में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विद्युत शक्ति आ गई थी या न जाने क्या बात थी कि उसकी आशा के विरुद्ध जूड़ा शीघ्र बन गया और उसे पुनः निष्क्रियता की आपत्ति का सामना करना पड़ा । कुछ क्षण तक बैठने के पश्चात् वह फिर परेशान होकर कुर्सी पर से उठ बैठी और वह पंखा उठा लाई। परन्तु पंखे के दो ही हाथ हिलाए थे कि ऐसा अनुभव होने लगा मानो उसके शरीर की समस्त शक्तियां सुन्न होकर रह गईं। उसमें पंखा हिलाने की सामर्थ्य न रही थी । न जाने क्यों उसका हृदय बैठा जाता था और वह रह २ कर अमल की बाट जोह रही थी कि एकाएक कमरे की दीवार पर लगी घड़ी ने ग्यारह बजाए और चारु चौंक उठी । प्रातःकाल से संदेश भेजा हुआ है। अमल न कहला भेजा था कि वह थोड़ा समय ठहरकर आएगा परन्तु वह थोड़ा समय अभी तक पूरा नहीं हुआ था। वह अभी तक नहीं आया था।

इस विचार के आते ही उसका मन एक दम बदल गया। उसने सोचा था अमल आखिर उसका होता क्या है, वह उसे क्यों बुलाए, अमल आए भी तो क्यों ? अगर रुष्ट है तो रहे रुष्ट, मेरी जाने जूती, मुझे क्या पड़ी उसकी खुशामद करने की ? मेरी जूती देखती है उसकी बाट ! और अब यदि आ भी गया तो वह दशा बनाऊंगी कि जीवन पर्यन्त याद करेगा। बड़ा बन के आया है, वहाँ से नखरों वाला। जब तक उठे उसके नखरे उठा लिए, अब नहीं उठाए जाते नखरे किसी के जूते लगवा दूंगी।

उसका मस्तिष्क यह विचार करता रहा परन्तु जब उसके कान किसी की पगध्वनि सुनते, तो उसका हृदय प्रसन्नता से नाचने लगता और उसके अन्दर से कोई आवाज देता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"अमल आ गया"।—उसका मन और उसका मस्तिष्क इन्हीं विपरीत भावनाओं की द्विविधा में पड़ा हुआ था।

इसी द्विविधा में आधा घण्टा और बीत गया और अंत में उसके परेशान मस्तिष्क में नौकर की आवाज गूंज उठीः—

"माँ!" वह कह रहा था, "बाबू जी के लिए कच्चा नारियल निकालना होगा"।

नारियल का नाम सुनकर चारु की आँखों पर से पर्दे हट गए। वह कल्पना के संसार से निकलकर वास्तविकता के संसार में आगई। आज अमल के विवाह का दिन है और इस विवाह के पश्चात् वह विलायत को चल देगा। फिर न जाने कौन जिये, कौन मरे। बात करने का अवसर मिले या न मिले। और अब भूपति बाबू भी नहा-धोकर खाना खाने के लिए आ रहे होंगे। केवल आध घण्टे का समय और शेष है। काश! अमल अब भी आ जाता! वह अब भी उसे मना लेती। परन्तु घड़ी की तेज टक-टक समय की रस्सी को काटती जा रही थी और अमल के आने के कोई चिन्ह न थे।

"नारियल निकालना है, मां जी"। नौकर ने फिर लजा कर कहा और चारु चौंक पड़ी—उसने अंचल से गोदाम की तालियां खोलीं और नौकर की ओर फेंक दीं। नौकर विस्मित था कि मां जो आज कुछ रुष्ट है—वह क्यों रुष्ट हैं? नौकर बेचारा क्या जाने?

चारु की दृष्टि फिर घड़ी की ओर उठ गई। बारह बजने में पंद्रह मिनट हैं। पूरे बारह बजे भूपति बाबू आ जाएंगे, और फिर—फिर अमल से मिलकर मतभेद की खाड़ी को भरना कठिन हो जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस विचार ने चारु को और भी परेशान कर दिया। वह बिफरे हुए पागल की भांति बरामदे में इधर उधर टहलने लगी।

कुछ क्षणों के पश्चात्--भारी पगध्वनि सुनाई दी और साथ ही अमल की आवाज़ आई "दादा! आप परेशान न होजिए। मैं शीघ्र बैरिस्टरी पास करके आऊंगा। बस, फिर इन सबसे समझ लूंगा"।

और वह दोनों चारु के सामने आगए—अमल भी और भूपति बाबू भी--?

चारु ने अमल की ओर देखा। उसका मुख साधारण से बहुत अधिक उतरा हुआ था। रंग पीला पड़ गया था और उसके छोटे २ होंठों पर पिपड़ियां जम गई थीं। चारु के प्रेम पूर्ण हृदय ने उसको यही बात समझाई कि जिस दुख के आघातों ने उसके हृदय को घायल कर रखा है, अमल का हृदय भी उन्हीं छुरियों से घाव खाए हुए हैं। आखिर वह भी बाल्यकाल से इसी मकान में रहा था। फिर क्या कारण था कि इस प्रकार आकस्मात् चले जाने के विचार से उसका हृदय कुम्हला न जाता? आवश्यक बात थी, परन्तु इसके साथ २ यह विचार कि क्यों अमल उसके बुलाने पर भी उसे मिलने नहीं आया, चारु को क्रोध से उन्मत्त किए देता था और जब अमल ने उसकी आँखों में आँखें डाल कर कहा:—

भाभी जी! आपने मुझे बुलाया है"? तो उसका रक्त तीव्र गति से दौड़ने लगा और उसने क्रुद्ध स्वर में कहा:--

"समय बीत गया--अब आवश्यकता नहीं"। अमल ने मुस्करा कर एक दूसरा बरछा चारु के हृदय में भोंक दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो फिर मुझे आज्ञा दीजिए—मुझे बहुत कुछ करना है अभी !"

चारु की मानसिक वेदना क्रोधानल का रूप धारण कर उसकी आंखों में सिमट आई। उसने क्रोध वर्षक आँखों से उसकी ओर देखकर कहा, "जाओ" ।

अमल ने चारु के मुख पर एक दृष्टि डाली, एक कटाक्ष पूर्ण मुस्कान उसके होंठों पर कांपी और वह कन्धे सिकोड़कर बाहिर निकल गया—चला गया—शायद कभी न मिलने के लिए।

भूपति बाबू भी अमल के आने वाले विछोह के विचार से कुछ उदासीन से हो रहे थे। यद्यपि उनकी इस उदासीनता में प्रसन्नता का तत्त्व अधिक था। वह प्रसन्न थे कि उनका भाई—उनकी आँखों का तारा और उनके अन्धेरे घर का प्रकाशमान नक्षत्र बड़े शुभ गृह में प्रविष्ट हो रहा है। परन्तु वह उन से अलग हो जाएगा, इस विचार ने उन्हें व्याकुल भी कर रखा था। इसके अतिरिक्त लेन देन और हिसाब किताब की हज़ारों उलझनें उनकी बुद्धि पर छाई हुई थीं। कुछ हिसाब करना था मृत अख्बार के ग्राहकों का, कुछ झगड़ा चुकाना था अपने प्रिय साले की कार्रवाईयों का और फिर भाई के विवाह के लिए भी कुछ तैय्यारियां करनी थीं। इसलिए वह बेचैन से प्रतीत होते थे। चारु के पास कुछ क्षण बैठकर तुरन्त उठ खड़े हुए और बोले:—

"आज मैं अधिक समय तक न बैठ सकूंगा। हज़ारों झगड़े चुकाने हैं अभी। मैं जाता हूँ !"

"तो रोक किस ने रखा है, जाइये !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारु ने जले फफोले फोड़े। चारु की इस रुखाई ने भूपति बाबू को और भी दुखी कर दिया। वह समझे कि सम्भवतः उनके इस प्रकार एकाएक चले जाने से चारु का मन मलिन हो गया। इसलिए आंसू पोंछ कर बोलेः—

"अरे तुम तो ऐसे ही रूठी जाती हो। मेरा आशय यह थोड़े ही था कि अभी चल दूंगा। अरे भाई! मुझे भी तो आराम की कुछ आवश्यकता है। थोड़ा ठहरकर जाऊंगा"।

यह कहकर वह बैठ गए। चारु अपने विचारों में मग्न थी। वह देख रही थी कि जिन घास फूस के तिनकों से उसने एक नीड़ बनाया था वह सब बिखर गए। वह इसी विचार में मग्न थी और भूपति बाबू अपने विचार में व्यस्त रहे। बात करते भी तो क्या और कहते भी तो किस प्रकार? इसलिए कुछ क्षण तक उदासीन मौन धारण किए बैठे रहे। अन्त में बड़ी कठिनाई से बोलेः—

"अमल तो जाने वाला है ही कल। तुम्हें फिर अकेले ही रहना पड़ेगा। परन्तु कुछ दिनों में यह वेदना मिट जाएगी। मन कष्ट सहने का स्वभावी हो जाए तो फिर कष्ट नहीं रहता"।

चारु इसका क्या उत्तर देती परन्तु उसे ऐसा लगा कि उसका हृदय फोड़े की भांति पक रहा है और किसी ने उस पकते हुए फोड़े को पैने छुरे से छेड़ दिया है। वह फोड़ा बह निकला—ऐसी तीव्रगति धारा के रूप में कि उसका जीवन भी उसी की लहरों में डूबता चला जाता है—नीचे और नीचे—और फिर एकाएक उसने उससे बचने के लिए हाथ पैर मारे। घबरा कर उठ खड़ी हुई और कोई वस्तु लाने का बहाना करके बाहिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चली गई। भूपति उसके इस व्यवहार से चकित तो अवश्य हुए परन्तु तुरन्त ही इस परिणाम पर पहुंच गए कि अमल के चले जाने के विचार ने उसे बावली बना रखा है। इसलिए वह भी चुपके से उठे और चले गए।

आज की रात चारु के लिए नई कठिनाई लेकर आई। वह सोच रही थी कि अमल पहले से कहीं अधिक दुर्बल होगया है। इसका कारण इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता है कि उसे घर से और इस घर के वासियों से अलग होने का दुख हो रहा है इसमें तो कोई संदेह नहीं। परन्तु अमल का यह विषैला व्यवहार, उसका यह बदला हुआ रवैय्या! उफ़! अन्ततः यह अमल मुझ से इस प्रकार दूर २ क्यों भाग रहा है? क्यों वह उसी नैसर्गिक और पवित्र प्रेम को आंखों में लेकर मेरे समीप नहीं आता और क्यों यह नहीं कहता "भाभी! मैंने अपने मित्रों को भोज पर निमन्त्रित किया है। मुझे रुपये दो"—? फिर एक विचार ने मानो लोहे की जलती हुई सीखें उसके हृदय में भोंक दीं। उसे मंदाकनी याद आ गई--अगर--अगर अमल को मंदाकनी के बूढ़े नखरों ने मोह लिया हो तब—तब? उफ़! तब? यौवन अन्धा होता है। यदि अमल इस यौवन को अन्धावेश में आकर इस दलदल में गिर पड़ा हो तो क्या उसकी यह बेरुखी, बे परवाई और दुर्बलता इसी लिए है?—लेकिन छी! छी!! अमल इतना गिरा हुआ नहीं हो सकता। इतना छोटा और दुश्चरित्र वह कैसे बन सकता है कि एक विवाहिता स्त्री की ओर उसका झुकाव हो जाए?—असम्भव—सर्वथा असम्भव!

वह यथा-सम्भव इस संदेह को दूर करने का प्रयत्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करती रही परन्तु संदेह का भयानक भूत उसके हृदय पर हथौड़े चलाता रहा और वह इसी वेदना में पहलू बदलती सो गई।

और प्रातः काल जब वह जागी तो उसके मन पर एक विचित्र प्रकार की निश्चलता छाई हुई थी। न उसे हंसी आती थी और न ही उसकी आँखों से आँसू निकलते थे। न ही वह निराश थी और न ही प्रसन्न—कुछ खोई खोई सी थी—जैसे उसके सीने में से किसी ने दिल निकाल लिया हो और जैसे उसका सीना यौवन और शक्ति की धड़कनों से खाली होगया हो--नहीं, जैसे उसके यौवन पर वृद्धावस्था की हिम छा गई हो और उसकी युवा आकांक्षाएं, युवा भाव, समय से पहले अनादि निद्रा के अथाह अंचल में पड़कर संसार के ऊँच नीच को भूल गए हों। यहाँ तक कि जब अमल विदा होने लगा और उसने रोदन के बोझ से कांपते हुए होंठो से अन्तिम प्रणाम किया और कहा:--

"भाभी जी--मैं जाता हूँ—दादा का ध्यान रखना—अब तुम्हारे अतिरिक्त उनका संसार में कोई नहीं"। इस पर भी उसकी छाती पर जमी हुई हिम की तहें न पिघलीं। वह रोई नहीं। अचल निर्जीव दृष्टि से उसकी ओर तकती रही और अन्त में जब अमल ने सिर झुका कर प्रणाम किया तो चारु ने अपने आप को यह कहते सुना:--

"पत्र तो लिखोगे न ?"

परन्तु अमल ने इसकी इस बात का उत्तर नहीं दिया था। उसे भली भांति स्मरण था कि इस अन्तिम वाक्य का उत्तर भी नहीं दिया गया था परन्तु वह हाथ जोड़कर थोड़ा सा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झुका, घूमा—और न जाने क्यों चारु स्वयं अपने कमरे में चली गई। द्वार अपने आप बन्द होगया और जिस प्रकार सहस्रों मन मिट्टी के नीचे दबकर कोई गिर पड़े, उसी प्रकार वह बिस्तर पर गिर पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १३ :

भाई का विवाह किया, शहनाइयाँ बजवाईं, स्वयं हंसे, अमल को हंसाया। फिर उसे विलायत की ओर भेजकर भूपति स्वयं घर चले आए। परन्तु इन सभी व्यस्तताओं और उलझनों के होते हुए भी इस क्षणिक प्रसन्नता और आकस्मिक आनन्द के होते हुए भी भूपति इस कष्टदायक अनुभव को न भूल सके जो इस भ्रष्ट संसार और इसके वासियों ने उनके हृदय में पैदा कर दिया था। उन्हें अब इस संसार के किसी व्यक्ति में मानवता का अंश नहीं मिलता था। सभी धोखा देने वाले और कुटिल प्रतीत होते थे। अब भूपति की वृत्ति पहले से बहुत अधिक बदल चुकी थी।

वह सोच रहे थे कि अखबार बन्द होगया। अच्छा हुआ। अखबार ही एक ऐसी वस्तु थी जो उन्हें बाह्य संसार से मिलाए हुए थी। इसके बन्द होते ही मानो घर से बाहिर वाली हंसती, बोलती, रोती और गाती हुई दुनिया के सभी द्वार भूपति के लिए बंद होगए। अब वह अपने आपको एक स्वतन्त्र और स्वाधीन व्यक्ति समझने लगे थे। उन्हें इस बात का विश्वास हो चुका था कि अधिक सम्बन्ध-विस्तार से मनुष्य के कष्ट बढ़ जाते हैं। इसलिए वह प्रत्येक सम्बन्ध तोड़ देना चाहते थे। वह चाहते थे कि जैसे भी सम्भव हो सके, वह और उनकी अर्द्धांगनी एक दूसरे के लिए ही हो जाएं—उनकी अर्द्धांगनी! उनके घर की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शोभा उनकी बाट जोहती रही और वह दूसरों की ओर तकते रहे। उनकी पत्नी उनके लिए अपने जीवन के स्मरण आँसुओं में डुबोती रही और वह संसार के अन्य लोगों के लिए अपनी मानसिक शक्तियों को व्यय करते रहे। वह स्त्री जिसने अपने जीवन का सर्वस्व उनकी एक कृपा दृष्टि पर बलिदान करने की सौगन्ध खाई थी, अपने कर्तव्य का भली प्रकार पालन करती रही। परन्तु भूपति बाबू—सिंह हृदय राष्ट्र पुरुष व देश की कृतघ्न चौखट पर अपना सर्वस्व बलिदान करता रहा और उसका परिणाम क्या निकला--देश और जाति ने उसे क्या लाभ दिया ? दूसरे ने अपने लाभ के लिए उन्हें निदयी अकेलेपन के हवाले कर दिया--और देश व जाती ने उनके अखबार के बन्द होते ही उनकी ओर से आंखें मूंद लीं मानो वह कभी थे ही नहीं।—मानो उनका पत्र कभी प्रकाशित ही नहीं हुआ था--जैसे उस अखबार ने केवल भूपति की जेब ही भरी थी—इतना उत्साह घातक व्यवहार—ऐसी भयानक कृतघ्नता—इतनी भयानक भूल—कौन पाषाण हृदय सहन कर सकता था ? कौन उठा सकता था इस पर्वत को अपने कन्धों पर ?--और भूपति इस बोझ के नीचे दब गए। निःस्वार्थ सेवा का आवेश, अपना सब कुछ उजाड़कर दूसरों को स्मृद्ध कर देने का सुन्दर और पवित्र भाव, एक कुचले हुए पुष्प की भांति विजित होगया--एक जली हुई हवेली की भांति भयानक दिखाई देने लगा।

वह सोचने लगे कि संसार कुटिल है। इसके साथ कुटिलता किए बिना जीवन असम्भव है। और यदि कुटिलता नहीं हो सकती तो पार्थक्य न केवल क्रियान्वित करने योग्य है वरन आवश्यक और अनिवार्य है। इसलिए इस संसार को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोड़ कर—कुटिलता के इस जाल के टुकड़े-टुकड़े करने के असफल प्रयत्न से हाथ खेंचकर—इससे अलग होकर अपने जीवन को अपनी चारु के लिए अलग कर देना आवश्यक है—आवश्यकता है कि उसके हृदय की धड़कनों को समझने और उसके भावों का मूल्य आंकने की।

इसलिए जब वह बरदवान से लौट कर आए तो सर्वथा बदले हुए थे। उन्हें ध्यान था कि अमल के चले जाने से चारु बहुत उदासीन होगी—वह यह भी जानते थे कि वह विवाह और उनकी विदाई के विस्तृत विवरण को सुनने के लिए उत्सुक होगी। इसलिए उन्होंने रास्ता भर अपने मस्तिष्क पर जोर देकर प्रत्येक बात और प्रत्येक घटना को याद करने का यत्न किया और उनका एक सम्बन्ध निर्माण कर लिया ताकि जाते ही चारु को कह सुनाएं।

परन्तु, वह क्या जानते थे चारु के हृदय की दशा। उन्होंने अपना जीवन अखबार के लिए लगा रखा था और उन्हें कदापि ज्ञान न था कि चारु के हृदय पर क्या बीत रही है और उसकी नन्ही सी जान किन भयानक आंधियों का मुकाबिला कर रही है। इसलिए उन्होंने पहले चारु की हार्दिक बेचैनियों को दूर करने की कोई योजना नहीं सोची और बरदवान से लौटते ही हाथ मुंह धोया, खाना खाया और हुक्का उठाकर शयनागार में चले गए। उनका विचार था कि चारु घर के धन्धों से निपट कर आएगी तो शांति पूर्वक बातें करेंगे और उसे प्रत्येक बात बता देंगे।

वह पलंग पर लेटे हुक्का पीते रहे और चारु की प्रतीक्षा करते रहे। परन्तु चिलम समाप्त हो गई और भूपति बाबू की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थकी हुई आँखों पर निद्रा छाने लगी। लेकिन चारु—वह अभी तक नहीं आई थी।

वह आँखें झपकाते रहे। प्रत्येक पग ध्वनि पर कान खड़े करते रहे। कभी सोते रहे और कभी जागते रहे परन्तु चारु—अभी नहीं आई थी।

घड़ी ने टन-टन दस बजाए। काफी देर होगई थी और चारु के नियम के अनुसार इस समय उन्हें सब बात सुनाकर सो भी जाना चाहिए था परन्तु वह अभी तक नहीं आई थी। भूपति सोच रहे थे कि आज यह घर के काम-काज इतने अधिक हो गए कि चारु को अभी तक अवकाश नहीं मिला—वह आई क्यों नहीं ?

एकाएक किसी की पगध्वनि ने उन्हें चौंका दिया। लड़-खड़ाते हुए कदमों से जैसे कोई शराबी चला आ रहा हो और अपने रक्त शोषक मद के बोझ तले दबा हो—घबराया हो और स्वयं अपने आप से ही परेशान—द्वार धीरे से खुला और पीत मुख—उदासीन—कुम्हलाए हुए पुष्प की भाँति निराश चारु कमरे में आ गई।

भूपति ने चौंक कर उसकी ओर देखा और अवाक् रह गए। चारु क्या से क्या हो गई थी ! उसकी आँखों में तैरता और तड़पता हुआ वह यौवन, उसके अंग प्रत्यंग में उबलता हुआ वह यौवन और उसके रोम २ से फूटता हुआ वह मद और वह तरंग ! अन्ततः यह सब कहाँ गुम होगया ? कहाँ चला गया था ?—वह उसे कुछ कहना चाहते थे—वह चाहते थे कि एक ही श्वास में उससे पूछ लें कि किस विष ने उसकी धमनियों में से यौवन और उसकी आँखों में से मस्ती चूस ली है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु वह कुछ भी न कह सके—कहा तो यही "इतनी देर होगई, चारु, आज" ?

और चारु ने मानो किसी खाई में से उत्तर दिया:—

"हाँ, आज बहुत देर होगई है।"

यह कहा और सीधी अपने पलंग पर जा कर लेट गई। अमल का नाम भी उसके मुंह पर नहीं आया। उसकी शादी का वर्णन भी उसके होंठों से नहीं निकला वरन् उसने फूटे मुंह से यह भी नहीं पूछा कि वह अच्छा तो रहा या किस दशा में विलायत को रवाना हुआ था।

यदि भूपति बाबू चारु के हृदय की दशा से पूरी तरह परिचित होते या यदि किसी ने उनके कान में ध्वनित कर दिया होता कि चारु और अमल का परस्पर का सम्बन्ध है तो वह इस निस्तब्धता और परेशानी का कारण समझ जाते परन्तु चारु ने अपने मन की बात सदा मौन के पर्दे में छुपाए रखी थी। उसने भूपति को कभी अपने हृदय में झांकने की आज्ञा नहीं दी थी। इस लिए उन्हों ने चारु के इस मौन और निस्तब्धता को लापरवाई समझा और मन ही मन यह अनुमान कर लिया कि चारु केवल हंसना और हंसाना ही जानती है। प्रेम और एकाग्रता उसके समीप नहीं गई। अपने भाई और अपनी प्रियतमा पत्नी को बहिन भाईयों की तरह परस्पर हंसता खेलता, रूठता और मानता देख कर उनके हृदय की कली खिल जाया करती थी। जब उन्हें इस तथ्य का आभास होता कि उनकी पत्नी उनकी भयानक तन्हाईयों को अपने अमर प्रेम से स्वर्ग बनाए हुए है तो उन्हें ऐसा लगने लगता कि वह त्रिलोकी नाथ हैं—परन्तु चारु के इस मौन और लापरवाई ने उनके गर्व को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक चोट लगाई। वह सोचने लगे कि चारु माथा देखकर ही टीका लगाया करती थी—वह केवल अवसर वादिनी थी।—वह अमल के सम्मुख जिह्वा और होंठों का अनुचित प्रयोग करती रही—उसका हृदय उसके मुख से सदा बिगड़ा रहता था। इस नये रहस्योद्‌घाटन ने भूपति बाबू को अंगारों पर लौटा दिया। वह सोचने लगे कि क्या चारु भी उसी संसार की एक नागन है जिसने उसके विश्व में विष भर दिया था। परन्तु भली प्रकार देख भाल करलेने और अपने स्थापित अनुभव को हर प्रकार से परखे बिना वे अपने मनोभावों को शब्दों का रूप कभी नहीं दिया करते थे। इसी लिए उन्होंने चारु के परीक्षण की दृष्टि से पूछाः—

"तुम अच्छी तो रही न चारु?"

और चारु ने करवट लेकर कहाः—

"बीत गई जैसी भी बीती"।

भूपति का संदेह विश्वास की सीमाओं को छूने लगा। परन्तु उन्होंने फिर ध्यान से काम लिया और दूसरी चाल फेंकी।

"चलो, यह बोझ भी उतरा—अमल का विवाह भी हो गया"।

और उन्होंने चारु की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। चारु उन्हें कुछ कहना चाहती थी, लेकिन न जाने क्यों ?—और कौन जाने किस लिए ?—ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी ने उसका हृदय पकड़ कर जोर से मसल दिया है।—या यदि यह नहीं तो उसका हृदय अपने स्थान से उछल कर गले में आ गया और वहां अटक कर रह गया। वह चुप हो रही।

परन्तु भूपति बाबू के हृदय में तो एक नवीन अग्नि ने सिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उठाया था। वह किस प्रकार सहन कर सकते थे उस आग की असीम जलन को। वह तो चाहते थे कि जो प्रेम और जो आत्मीयता उनके हृदय में है वह विश्व के प्रत्येक व्यक्ति की धमनियों में प्रवाहित हो। केवल प्रवाहित ही न हो, इसका प्रदर्शन भी हो—मधुर शब्दों में—प्यारे बोलों में—वह चाहते थे कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति एक स्वर से अमल के बारे में बातें करने लगे। उसकी प्रशंसा करे और भूपति सुनते रहें, सुनते रहें और सुनते २ सो जाएं।—ऐसी निद्रा में जिससे पुनः जागृत होना सम्भव न हो। परन्तु यहाँ उनकी अपनी पत्नी उनके अभिमान पर विषाक्त बाण चला रही थी। परन्तु इन बाणों से वह मौन क्यों हो जाएं? वह तो अपने भाई का वर्णन अवश्य करेंगे। दूसरा चाहे उसका सहन करे या न करे। इस लिए वह बोलेः—"

"सो गई हो क्या—? मैं ने कहा लड़की देखने में तो बड़ी अच्छी है"।

"अच्छा हो गया—"चारु ने कम्पित स्वर में कह दिया और भूपति ने उसकी सुनी अन सुनी करके प्रारम्भ किया "अमल कितना अच्छा लड़का है। मुझे कितना प्यार करता है वह—और अब बेचारा कहां चला गया—जाते समय—जाते समय वह बालकों की भांति फूट २ कर रोने लगा। चारु—उसकी आंखों से गंगा यमुना वह रही थीं—ऐसा प्रतीत होता था कि उसके मुख पर आंखें नहीं अश्रुओं के दो अथाह सागर हैं और वह मुझसे लिपटा पड़ता था—कितना प्यार करता है वह मुझे-काश मैं भी........"

परन्तु एकाएक भूपति बाबू की दृष्टि चारु पर पड़ी। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उठी—जिस प्रकार मृतक कब्र से निकल भागे—और बाहिर शीघ्र मौन, निर्जीव, अचल, गति हीन।

भूपति बाबू चकित रह गये। क्या चारु इतनी बदल चुकी थी कि अमल का जिक्र भी सुनना नहीं चाहती थी।

द्वार धीरे से खुला और चारु कमरे से बाहिर निकल गई।

कुछ क्षणों के पश्चात भूपति बाबू के आश्चर्यान्वित भावों ने सिसकियों को पहचान लिया। वह लपक कर उठे और बरामदे में आ गए।

भीगी हुई रात को अन्धा कर देने वाला तम चारों ओर छाया हुआ था। हाथ को हाथ न सूझता था। भूपति ने आँखें फाड़ फाड़ कर इधर उधर देखा परन्तु उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया और अंत में वह सिसकियों कि ओर चल दिए:--और अकस्मात उनके पांव एक कोमल शरीर से टकराए। उन्हों ने झुक कर टटोला—यह चारु थी। बरामदे के शीतल फर्श परपेट के बल लेटी, अपने जीवन को आहो में ढाल रही थी।

चारु को इस दशा में देख कर भूपति बाबू की आंखों पर से मानो पर्दे हटा दिए गए। उन्हें ऐसा लगा कि उनके बरामदे के फ़र्श पर उनकी पत्नी नहीं वरन् पवित्र प्रेम की एक जीवित जागृत मूर्ति लेटी हुई है जो अपने प्रेम के उच्च आकाशीयस्थान पर अपने अश्रू भेंट कर रही है।

... .

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १४ :

भूपति बाबू ने अखबार बंद करते ही निश्चय कर लिया था कि वह अपना अधिक समय चारु के पास ही बिताया करेंगे और उसे प्रसन्न करके उसके हर्ष में अपने लिए मानसिक व आत्मिक संतोष प्राप्त करेंगे। विचार सर्वथा ठीक था। और यह यथार्थता कि घर का हर्ष बाहिर की सहस्रों खुशियों से अधिक आकर्षक और आनंद दायक होता है उनके इस निश्चय का समर्थन कर रही थी। इस निश्चय पर उस रात की घटना ने और भी दृढ़ता भर दी। भूपति बाबू को विश्वास हो गया कि उनके जीवन का साथी उनके मन और मस्तिष्क के साथ चल रहा है। और उनके निर्दोष किन्तु दुखी हृदय की प्रत्येक धड़-कन के साथ है। उस विश्वासने भूपति बाबू को ऐसा कार्यक्रम बनाने पर लगा दिया जो यद्यपि प्रत्यक्षतः साधारण था परन्तु भूपति के लिए अपने अंदर एक आकर्षण रखता था जो अदृश्य वस्तु रखती है। उन्हों ने सोचा था कि वह प्रातः सायं चारु ही के पास रहेंगे। खाना खाने के पश्चात् ताश आदि से मन बहलाव किया करेंगे। उसके पश्चात शाम के समय दोनों सैर के लिए जाया करेंगे। हंसना, बोलना, और आनंद दायक खिल-खिलाहटें और हर्षवर्धक मुस्कानें, अल्हड़ अदाए और मनोरंजक हास्य उनके इस दुःख को कम करदेंगे और वह भी जीवन के उस भाग से परिचित होंगे जिसे स्वर्ग का नाम दिया जाता है। जिसे ज्ञाता लोग पवित्र दाम्पत्य प्रेम के नाम से स्मरण करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु जिस कार्य क्रम के निर्माण में उनकी बुद्धि ने केवल कुछ ही क्षण लगाए थे उसको कार्य रूप में लाने में एक ऐसी कठिनाई आई जिसे पार करना कठिन था। भूपति बाबू ने अपनी आयु का एक बड़ा भाग—अर्थात् पूरे १२ वर्ष—अखबार में जान खपाने में लगाए थे। इन १२ वर्ष में उनको भूल कर भी यह विचार न आया था कि सन्ध्या समय पक्षी एक दूसरे से कन्धे से कन्धा मिलाए हर्षध्वनि करते एक ही ओर किधर जाते हैं। और वह कौन सा ऐसा अकर्षण है जो उन्हें बाह्य संसार की गायन युक्त स्वाधीनता और विस्तृत प्रसन्नता से मुख मोड़ कर पत्तों के घने अकेलेपन में बंदी हो जाने पर विवश कर देता है। उन्होंने कभी यह सोचने का यत्न ही न किया था कि अपने घर से बाहिर जाकर चांदी और सोने में खेलने वाले व्यक्ति को क्यों परदेसी और प्रवासी का नाम दिया जाता है और क्यों उसे दयनीय और विवश माना जाता है। उन्हें यह पता भी न था कि जब पति-पत्नी एक दूसरे की ओर देख कर मुस्कराते हुए मिट्टी के प्याले में घुली हुई पतली दाल खा लेते हैं तो उनकी प्रसन्नता उस अभागे की मानसिक व आत्मिक उलझनों का मुंह किस बुरी तरह से चिड़ाती हैं जो अपने घर से दूर अजाने लोगों के पास बैठकर सुदंर भोजनों पर हाथ बढ़ाता है। परन्तु आज संसार की निरंतर ठोकरों ने उन्हें इन सब वास्तविकताओं से सूचित कर दिया था और वह भी असीम प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हो रहे थे।

परन्तु जब वह हर्ष समीप आया तो भूपति बाबू घबरा गए। उनके सभी कार्य-क्रम धरे के धरे रह गए। वह चारु से एक बात करने के पश्चात् सोचने लगते कि अब क्या कहें और किस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय पर वर्तालाप करें। जब दिए में बत्ती पड़ती तो भूपति एक स्वतन्त्र विहग की भांति मन ही मन गुनगुनाते घर की ओर चल देते। रास्ता भर सोचते रहे यह कहूंगा, वह कहूँगा। इस प्रकार गुद-गुदी करूंगा। वह हंसते २ दोहरी हो जाएगी। और उसके गुंधे हुए मींढे की भांति श्वेत रंग में प्रसन्नता का यौवन मिल जाएगा। वह रूठेगी भूपति उसे मनाएंगे। वह मान जायगी और भूपति उसे रूठ जाने पर विवश कर देंगे। ऐसी बातें कहेंगे कि वह रुष्ट हो जाएगी और फिर ऐसी बातें कहेंगे कि क्रोध से तमतमाता हुआ मुख अजान हंसी की अथाह लहरों में आकर फूल की भांति खिल जाएगा—परन्तु यह सब कुछ सोच लेने और अपने सोचे हुए कार्य क्रम पर अमल करने की दृढ़ शपथों के बावजूद भूपति बाबू जब चौखट पर पग धरते तो उन का हृदय जैसे घबरा जाता वह सोचने लगते कि वह वृद्ध हो गए हैं और लोग कहते हैं कि बूढ़ी घोड़ी को लाल लगाम बुरी प्रतीत होती है। यह अनुभूति एक पैने शर की भांति स्वयं उनके हृदय के अंतिम कोणों तक उतरती चली जाती। वह इस विषैले विचार से बचने का भर-सक प्रयत्न करते—वह इन अग्नि बाणों को अपने हृदय से दूर रखने के लिए लाख सिर धुनते परन्तु यह उलझनें अपने आप उन्हें अपने अन्दर समो लेतीं। यह बाण उनके प्रत्येक प्रयास पर मुंह चिढ़ाते हुए एक कटाक्षपूर्ण मुस्कान के साथ उनके सीने में गड़ते चले जाते। वह इसी आश्चर्य में कट कर रह जाते और जब चारु का चिन्तित मुख उनके समक्ष आता, वह केवल इतना कहते:—

"चारु, अच्छी तो रहीं तुम"।

वह मृत स्वर में 'हाँ' कर देती। या केवल सिरके संकेत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से उत्तर दे देती, भूपति उससे कुछ और पूछना चाहते, वह प्रयत्न करते कि कुछ और कहें, हंसाने के लिए कोई विनोद की बात कहें परन्तु एक शब्द भी उनके मुख से न निकलता। एक विचार भी उनके मस्तिष्क में न आता। वह अवाक शीशे की भाँति चकित उसकी ओर देखते रहते और फिर अपनी विवशता पर स्वयं ही लज्जित होकर कहीं इधर-उधर टल जाते।

और इसके साथ २ चारु की आंखों में तैरती हुई आत्मिक निराशा उसके युवामुख पर खेलता हुआ बुढ़ापा और उसके फूल की पत्तियों जैसे होठों पर अधिकार किए हुए चिंता की भयानक पीलाहट उनके जीवन को अजीर्ण किए देती थीं। उनके हृदय में बार २ यह विचार उत्पन्न होता कि वह औरों के लिए सब कुछ कर डाले। परन्तु अपनी पत्नी के लिए उनसे कुछ न हो सका। इसलिए कभी २ वह अपनी निराशाओं के विरुद्ध कड़ा युद्ध करने के पश्चात् चारु से कहते :—

"आओ चारु—ताश खेलें!"

चारु स्वयं निष्क्रियता के बोझ के नीचे दबी होने के कारण कह देती "अच्छा"!

दोनों ताश खेलने लगते। परन्तु चारु के व्यवहार से ऐसा प्रतीत होता कि वह इस खेल में कदापि कोई रुचि नहीं रख रही। और नहीं रखना चाहती है। वह हर बार हारती। खेल की गरमागरमी, एक दूसरे को हराने का प्रयत्न करने की चेष्टाएं सब समाप्त हो गईं। इसलिए भूपति इस खेल से भी उकता जाते और पत्ते फेंककर उठ जाते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन निरंतर असफलताओं ने भूपति को विश्वास दिला दिया कि वह चारु को व्यस्त करके उसके दुख और वेदना को न भुला सकेंगे। इस लिए उन्होंने बहुत दिनों के गम्भीर विचार के पश्चात् एक दिन चारु से पूछा:—

"चारु! तुम कहो तो मंदाकनी को बुला भेजें? तुम अकेले में बहुत परेशान हो रही हो"।

मंदाकनी का नाम सुनकर मानो चारु की धमनियां काँप उठीं। वह एकदम बोली :—

"मंदाकनी!—मुझे उसकी आवश्यकता नहीं। मैं कब हूँ अकेली?

भूपति हंसे—मन ही मन प्रसन्न हुए। एक ओर उन्हें यह हर्ष था कि उनकी पत्नी किसी पाप की अनुभूति को भी अपने मकान में स्थान देना नहीं चाहती और दूसरे यह कि कम से कम वह अपनी पत्नी के लिए कुछ न कुछ कर कर रहे हैं और उनकी पत्नी इस बात का अनुभव करती है।

परन्तु चारु की मनःस्थिति इस से बहुत भिन्न थी। उसे ऐसा लगने लगा कि आकाश पर काले बादल घिर आए हैं और उन बादलों के कोणों में एकत्रित नीड़-ध्वंसक बिजलियों ने उसकी रही सही पूंजी को ताका है। उसे एकदम इस विचार ने आ दबाया कि भूपति उससे किसी वस्तु की आशा लेकर उसके पास आते हैं परन्तु निराश लौट जाते हैं। वह देख रही थी कि भूपति ने समस्त संसार से सम्बन्ध विच्छेद करके उसी को अपने प्रिय जीवन का केन्द्र बनाया है और उसी की संगत में वे अपने दिन का चैन और रात का सुख ढूंढ रहे हैं। परन्तु जिस वस्तु की उनको खोज है और जिस आशा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को लेकर वह चारु के पास आते हैं वह वस्तु चारु उन्हें नहीं दे सकती--चारु की हाट इस बहुमूल्य पदार्थ से खाली है। और प्रकट था कि यदि चारु की दुकान उस से सदा ही खाली रही तो भूपति को विवश होकर किसी और दुकान की ओर जाना पड़ेगा। इस विचार ने चारु के भावों को मानो गरम सीखों से छेड़ दिया। वह उनकी निष्क्रियता और सुख प्रियता को भी संदिग्ध दृष्टि से देखने लगी—और—वास्तविकता यह थी कि चारु भूपति के लिए कभी भी एक 'आवश्यक वस्तु' न बन सकी थी। भूपति प्रत्येक कार्य स्वयं अपने हाथों से कर लेने का स्वभाव रखते थे, अपनी प्रत्येक आवश्यकता को अपने आप पूरा कर लेने का स्वभाव उनका बचपन से ही था। उनके इस स्वभाव के कारण चारु को उनकी सेवा के अवसर बहुत ही कम मिले थे। इसलिए आज जब कि भूपति ने अपने जीवन का समस्त भार चारु के ही कन्धों पर डाल देने का प्रयत्न किया तो चारु उस बोझ को न सम्भाल सकी। यदि भूपति धीरे २ पग उठाते तो सम्भव था कि चारु उनका साथ देता। परन्तु वह इस तीव्रगति से भागे कि चारु उनके साथ भागते भागते हांप गई। और थककर बैठ गई।—भूपति के इस प्रश्न का उत्तर पांच सात दिनों के पश्चात् मिला—थकी हुई चारु ने अपनी सहायता की दर्दनाक स्वीकृति दी।

"आप ने ठीक कहा था"। वह बोली, मंदाकनी को बुलवा लीजिए--मैं आपकी देख-रेख नहीं कर सकती"।—और उसे ऐसा लगने लगा कि उसका समस्त जीवन अश्रुओं का रूप धारण कर उसके पपोटों पर काँप रहा है। परन्तु भूपति ने स्त्री के हृदय की इस भीषण पराजय को अपनी भाव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाओं की दृष्टि से देखा और लज्जित से हो गए——उन्होंने सोचा कि वह अत्यन्त शुष्क स्वभाव हैं और उनका यह दुर्भाग्य है कि वह कुछ क्षणों के लिए भी अपनी पत्नी को प्रसन्न न रख सके।

इस विचार ने उनको बहुत दुखी किया। परन्तु उन्होंने कृत्रिम हंसी हंसकर कहा :—

मेरी देख-रेख करने के लिए तुम पर्याप्त हो--किसी और को कष्ट देने की आवश्यकता नहीं"।

और चारु ने अभियुक्त कीसी दृष्टि से भूपति बाबू के मुख की ओर देखा। वह देखना चाहती थी कि इन शब्दों में कितना अर्थ है। और वह किस परिणाम पर पहुंची—कौन जाने ?

परन्तु भूपति इस परिणाम पर पहुँच चुके थे कि उनकी जिह्वा चारु के क्लेश और वेदना की दवाई करने में असफल है। उसका इलाज होना आवश्यक था। वह सोचते रहे और अन्त में एक दिन मानो उन्हें आकाशवाणी हुई। उन्होंने सोचा कि चारु साहित्य-प्रिय और पुस्तकों की रसिया है। इसलिए उसे उस मार्ग पर लगाना चाहिए।

इस विचार के आते ही उनकी कल्पना एक अतीव शक्ति के साथ उभरी और उनके मित्रों ने एकाएक अनुभव किया कि भूपति ग्रन्थ-कीट बन गए हैं। टैनिसन, बायरन और बंकिम बाबू की पुस्तकें उनके अध्ययन का विषय थीं। केवल यही नहीं वरन् साधारण वार्तालाप में उनके मुख से ऐसे शब्द निकल जाते थे जो ज्ञान युक्त होते हुए भी साहित्यक हुआ करते थे।

भूपति बाबू अध्ययन के समय इस बात का विशेष ध्यान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखा करते कि उनके अध्ययन की पुस्तकों का कौनसा भाग चारु के लिए रोचक रहेगा। परन्तु इस कार्य में भी उनको पर्याप्त कठिनाई का सामना करना पड़ता था। वह चारु की साहित्य सम्बन्धी रुचि से सर्वथा अनभिज्ञ थे। अतः वह नहीं जानते थे कि चारु क्या पसंद करेगी और किस प्रकार की वस्तु उसे उनकी ओर आकृष्ट करने में सफल होगी। वह काफी समय तक इसी द्विविधा में पड़े रहे। अन्त में एक दिन बड़ा साहस करके उन्होंने अटल निश्चय कर लिया कि आज चारु को टैनीसन का अनुवाद सुनाएंगे।

अतः सन्ध्या होते ही घर लौटे। कमरे में लैम्प जलाया और बन-संवर कर चारु की प्रतीक्षा करने लगे। चारु आई और आते ही पलंग पर लेटी नहीं गिर पड़ी। भूपति ने चाहा कि उसे सम्बोधित करें परन्तु जब बात करने के लिए होंठ हिलाने का प्रयत्न करते तो ऐसा लगता कि उनकी जिह्वा पर कांटे पड़ गए हैं और बात मुंह से नहीं निकलती। परन्तु उनका अटल निश्चय उन्हें इस भाव को पूर्ण करने के लिए विवश कर रहा था और अन्त में उन्होंने लज्जित स्वर में आँखें झपका कर कहा :—

"तुम कहो तो—तुम्हें टैनीसन का अनुवाद सुनाऊं—बड़ी मनोरंजक कविता है"।

चारु मानो इस संसार में थी ही नहीं। भूपति की आवाज सुनकर चौंक उठी और बन्द होती सी आवाज़ में बोली :—

"क्या—क्या कहा आपने ?"

"मैंने कहा, तुम्हें टैनीसन की कविता का अनुवाद सुनाऊं"।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सुना दीजिए"।

और भूपति को मानो भू-नभ ऊपर नीचे करने की अनुमति मिल गई। उन्होंने खाँसकर गला साफ किया। शुष्क हो रहे होठों पर जिह्वा फेरी। थूक से तालू गीला किया। पुस्तक के पृष्ठों को इधर-उधर पलटा और बड़े गर्व से तैय्यार होकर बैठ गए।

"लो सुनो—" उन्होंने फिर कहा।

"[illegible]नाइये—मैं सुन रही हूँ"। परन्तु चारु की आँखें बंद स[illegible] [illegible]सका मुख कह रहा था कि इस वार्ता में उसे नाम मात्र भी रुचि नहीं।

भूपति उसकी निःसम्बन्धता को अनुभव कर रहे थे परन्तु उन्होंने मन पर काबू किया। टैनीसन के शब्दों को होठों ही होठों में दुहराया और अपने मस्तिष्क की सभी शक्तियां लगाकर अनुवाद करने का प्रयत्न किया।

परन्तु एक तो कविता टैनीसन की। इस पर पत्रकार भूपति अनुवाद करने बैठे और अनुवाद भी लिखकर नहीं मौखिक। टैनीसन बेचारे की जो दशा होती कम थी और हुई — चारु की समझ में कुछ नहीं आया कि भूपति—अर्थात् —और आशय यह कि—समझ में आया अथवा नहीं--कि पेचदार चक्रों में इस महान् कविता को कहाँ से कहाँ ले गए। केवल चारु ही नहीं वरन् भूपति स्वयं यह अनुभव कर रहे थे कि उनका यह अनुवाद न कवल अरोचक है वरन् हास्यासपद और चारु के लिए निश्चय ही थका देने वाला है। वह अंग्रेजी शब्दों का ठीक आशय बंगाली भाषा में समझाने में असमर्थ हैं। कविता के कुछ ही पदों का अनुवाद हुआ था कि इस अनुभूति ने भूपति को थका दिया और कविता धरी की धरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रह गई—न उसका अनुवाद हुआ और न ही चारु ने सुना—भूपति का यह शास्त्र भी असफल रहा और अन्त में वह इस प्रयास ही से हाथ खींचने पर विवश हो गए।——साहित्य का प्रेम बगोले की भांति आया और आंधी की नाईं चला गया।

चारु

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महिलाओं की लेखनी से:—

निराली तथा अनुपम पुस्तक

आंचल और आंसू

इस पुस्तक के पढ़ने से आप को मालूम होगा कि कोई महिला, जब कलम हाथ में लेती है तो कागज पर जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे सुन्दर तथा अनुपम चित्रों का चित्रण करती है कि बड़े बड़े लेखक मुंह ताकते रह जाते हैं। इस पुस्तक में अखंड भारत की लेखिकाओं—सीता चैटर्जी, सन्ता चैटर्जी, असमत चुग़ताई, मालती देवी, हिजाब इमत्याज अली, कान्ती देवी, तथा डा० रसीद जहाँ, की सुप्रसिद्ध कहानियां संगृहित हैं।

कवि सम्राट् रवीन्द्र नाथ ठाकुर का सुन्दर कहानी संग्रह

फूल और कलियाँ

रवीन्द्र बाबू की चुनी हुई सर्व श्रेष्ठ कहनियों का सग्रह है। इन्हें पढ़ कर आप मुग्ध हो जायेंगे। कवि सम्राट् रवीन्द्र के बारे में कुछ अधिक कहना व्यर्थ है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहगल प्रकाशन में—

जासूसी उपन्यासों का सिलसिला

आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने अन्य रुचिकर पुस्तकों के प्रकाशन के अतिरिक्त योरुप के मान्य तथा प्रतिष्ठित लेखकों के चुने हुये प्रसिद्ध रहस्य रोमांच के उपन्यासों को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है कि प्रतिमास एक उपन्यास साहित्य प्रेमियों को भेंट किया जायगा। निम्न लिखित उपन्यास प्रेस में जा चुके हैं ?

विजय किस की ?

पीला हीरा

पुजारिन

हत्यारी दुल्हन

अनोखा जासूस

नोटः—आप १) रु० भेज कर इस सिलसला को स्थाई ग्राहक बन सकते हैं। स्थाई ग्राहकों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। नई पुस्तक छपने पर स्थाई ग्राहकों सूचितकर दिया जाएगा। पुस्तक आर्डर आने पर ही भेजी जायेगी। डाक व्यय हर हालत में ग्राहक को देना पड़ेगा।

नरायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज चौक फतहपुरी, देहली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE